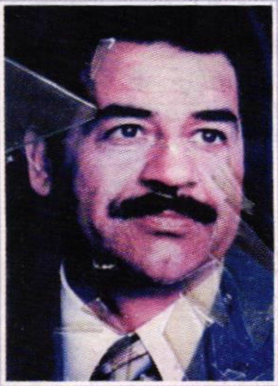

विचार दृष्टि

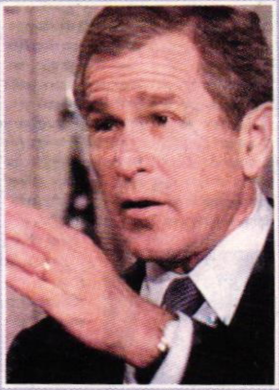

वर्ष : 5 अंक : 15 अप्रैल–जून 2003 15 रुपये

- बुरे लोगों को महिमा मंडित करने की प्रवृत्ति पर अंकुश लगे
- एक सुहाना सपना : इंडिया विजन 2020
- गृह प्रवेश – कृष्ण कुमार की कहानी
- मतदाताओं का अधिकार बरकरार

खाड़ी युद्ध

बगदाद पर बमों की बरसात

Rashtra-Nirman Yajna (Bihar)
राष्ट्र-निर्माण यज्ञ (बिहार)

13, Harding Road
Patna-800 001 (India)
Telephone : 91 612 2231820
Fax : 91 612 2207041

Incorporated Under Societies Registration Act 1860, As per Registration Number : 128/79

• "सम्पूर्ण रचनात्मक क्रान्ति" हेतु लोकशक्ति एवं राजशक्ति में समन्वय हो •

स्मारिका

राष्ट्र-निर्माण की ओर

मान्यवर,

यह जानकर प्रसन्नता होगी कि संपूर्ण रचनात्मक क्रांति को समर्पित संस्था **राष्ट्र निर्माण यज्ञ एवं युगधर्म** अपने स्थापना दिवस 5 जून के सुअवसर पर सभी राष्ट्रों के नव-निर्माण हेतु विश्व वांङ्मय की संपूर्णता से सन्नात संग्रहणीय दस्तावेज के रूप में राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक संस्था **'राष्ट्रीय विचार मंच'** की सहभागिता से **'राष्ट्र निर्माण की ओर'** नामक सुरुचिपूर्ण स्मारिका का प्रकाशन करने जा रही है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि जनता जब जागती है तो युग बदलता है, समाज में परिवर्तन आता है। इसलिए जनता को जगाने के लिए सतुप्रयास करना होगा। **'राष्ट्र निर्माण की ओर'** का प्रकाशन उसी की अगली कड़ी है। इस स्मारिका में प्रकाशनार्थ निम्नलिखित विषयों का चयन किया गया है–

विषय सूची

1. सम्पूर्णवाद के सिद्धान्त एवं ब्रह्माण्ड
   (i) आकाश में प्रकृति का प्रवेश और ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति
   (ii) ब्रह्माण्ड की संरचना
   (iii) सौरमंडल और जीव संरचना
   (iv) प्रकृति का संदेश और सहअस्तित्व
2. विकासवाद के सिद्धान्त
3. मानव सभ्यता एवं संस्कृति
   (i) संस्कृति के सिद्धान्त एवं स्वरूप
   (ii) धर्म एवं संस्कृति तथा सम्प्रदायवाद
4. राष्ट्र-निर्माण की सनातन संस्कृति
   (a) मनुवाद (b) वेद, पुराण एवं उपनिषद, गीतासार
   (c) सर्वे भवन्तु सुखिनः एवं वसुधैव कुटुम्बकम् के सिद्धान्त
   (d) विश्व बन्धुत्व एवं भारतीय संस्कृति तथा भारतीयता
   (e) व्यष्टि और समष्टि की अवधारणा
5. राष्ट्र-निर्माण का बौद्धिक दर्शन
   (i) एकात्मवादी दर्शन और राष्ट्रीय एकता
   (ii) महात्मा बुद्ध और मानववाद
6. जैन शासन में राष्ट्र-निर्माण
7. यीशु मसीह की राष्ट्रीय चेतना
8. इस्लाम में राष्ट्र-निर्माण की भावना
9. गुरु ग्रन्थ साहिब में राष्ट्रीय चेतना
10. गांधीवाद एवं भारतीय संस्कृति
11. राष्ट्र-निर्माण में पर्व और त्योहार की भूमिका
12. विश्व के महापुरुषों की एक झलक
13. ईश्वरवाद एवं अनिश्वरवाद
    (i) अद्वैतवाद एवं द्वैतवाद
    (ii) ईश्वरवाद एवं प्रायोजित अध्यात्मवाद
14. भौतिकवाद एवं प्रायोजित अध्यात्मवाद
15. अध्यात्म एवं इसका बदलता स्वरूप
16. आत्मा एवं पुनर्जन्म, कोलोन्स
17. योग दर्शन (कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग आदि) योग, आसन प्राणायाम, साधना, धारणा, ध्यान, समाधि, वैराग्य
18. मन, इच्छा, विवेक, चेतना, संवेदना, करुणा, प्रेम, भक्ति, उपासना, सद्भावना, ममता, मोह, मर्यादा, पुरुषार्थ, आनंद, वेदना
19. त्याग और भोग
20. आत्म-चिन्तन एवं आत्म-मंथन
    (i) अन्तर्मुखी (ii) बाह्यमुखी
21. संस्कार तथा चरित्र निर्माण के तत्व
    चरित्र निर्माण एवं नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना
22. विचार एवं सत्संग
    प्रवचन एवं उपदेश का महत्व

(शेष आवरण पृष्ठ 3 पर)

विचार दृष्टि

(राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक त्रैमासिकी)

वर्ष-5 अप्रील-जून, 2003 अंक-15

संपादक व प्रकाशक:

सिद्धेश्वर

प्रबंध संपादक : **सुधीर रंजन**

उप संपादक : **धनंजय श्रोत्रिय**

सहा.संपादक : **मनोज कुमार**

संपादन सहायक : **अंजलि**

शब्द संयोजन : **सोलूसंस प्वायंट**

(शशि भूषण, दीपक कुमार)

सज्जा: सुधांशु कुमार

प्रकाशकीय कार्यालय:

'दृष्टि', 6 विचार विहार, यू०-207

शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92

दूरभाष: (011) 22530652

फैक्स: (011)22530652

E-mail vicharbharat@hotmail.com

पटना कार्यालय:

'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1

दूरभाष: 0612-2228519

ब्यूरो प्रमुख

मुम्बई: वीरेन्द्र याज्ञिक ☎ 28897962

कोलकाता: जितेन्द्रधीर ☎ 24692624

चेन्नई: डॉ० मधु धवन ☎26262778

तिरूवनंतपुरम:डॉ०रति सक्सेना ☎2446243

बैंगलूर:पी०एस०चन्द्रशेखर ☎26568867

हैदराबाद: डॉ० ऋषभदेव शर्मा

जयपुर: डॉ० सत्येंद्र चतुर्वेदी☎ 2225676

अहमदाबाद: वीरेंद्र सिंह ठाकुर☎22870167

मुद्रक: प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड

एक्स-47, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया,फेज-2, नई दिल्ली-20

मुख्य वितरक :

कुमार बुक सेन्टर, ए०-67, क्रिश्चन कॉलोनी, पटेल चेस्ट, नई दिल्ली

दूरभाष: 27666084 (P.P.)

मूल्य:	एक प्रति 15 रुपये
द्विवार्षिक:	100 रुपये
आजीवन सदस्य:	1000रुपये

विदेश में:

एक प्रति:**US $3**, द्विवार्षिक:**US $20**,

आजीवन: **US $250**

(पत्रिका-परिवार के सभी सदस्य अवैतनिक हैं।)

रचना और रचनाकार

पाठकीय पन्ना /2

संपादकीय /3

विचार प्रवाह :

एक सुहाना सपना : इंडिया विजन 2002 सिद्धेश्वर /5

साहित्य :

गृह प्रवेश - कहानी कृष्ण कुमार राय /7

बिन्दा - कहानी गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव /10

काव्य-कुंज :

नलिनी कांत, ऋतुराज, सत्यदेव सवितेन्द्र, डॉ. रति सक्सेना /13

दृष्टि :

बालक मन:बेलगाम-डॉ. शाहिल जमील /15

हिंदी अंग्रेजी की सहचरी या अनुचरी - प्रो. शशि सिंह /17

समीक्षा :

अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने में सफल समकालीन मगही साहित्य - डॉ. सत्येन्द्र कु. सिंह /20

'तस्वीरें' : मध्यमवर्गीय जीवन की चित्रात्मक व्यथा-कथाएँ - मालती शर्मा /21

शख्सीयत : कल्पना चावला : जिसने आसमान की उंचाईयों तक पहुंचने का सपना देखा-सुनीता रंजन /22

साक्षातकार :पद्मश्री प्रो. शारदा सिन्हा :जिसने सांस्कृतिक परंपरा के बिसरते भाव को समेटा-संयोजा-डॉ. अरुण कुमार गौतम /23

समाज :

राजस्थान में भी फैल रहा है जातिवाद का जहर - प्रो. राज चतुर्वेदी /25

आवरण कथा :

खाड़ी युद्ध :

बगदाद पर बमों की बरसात-संजय सौम्य /27

इराक : अतीत और वर्तमान - धनंजय श्रोत्रिय /30

इराक जंग पर विश्व जंग - सुधीर रंजन /31

न्याय जगत :

मतदाताओं का अधिकार बरकरार - राजेश रौशन /33

राजनीतिक नजरिया : चुनावों का वर्ष 2003 - मनोज कुमार /35

तमिलनाडु का बदलता राजनीतिक समीकरण / 37

गांव-जवार : अण्ण हजारे और बदली सूरत का उनका गांव - अंजलि / 38

गतिविधियां : सांस्कृतिक क्रांति पर एक जीवंत परिचर्चा /40

सम्मान : अनाज की गंध का गीत गाना चाहती है कविता /41

देश-विदेश : वेन जियाबाओ चीन के नए प्रधानमंत्री /44

समाचार विश्लेषण : कहां थम रहा कश्मीर घाटी में आतंकवादियों का कहर /45

हरेन पांड्या की हत्या /46

आधी आबादी : सामाजिक परिवेश में भारतीय नारी - ज्योति शंकर चौबे /47

साहित्य समाचार : 'सूचनापरक कनीकी युग में हिंदी शिक्षण - मधु धवन / 49

श्रद्धांजलि : शिवानी एवं सत्यार्थी /53

साभार स्वीकार /54

शख्सीयत

साक्षात्कार

खाड़ी युद्ध

सम्मान

श्रद्धांजलि

पत्रिका-परामर्शी

❑ पद्मश्री डॉ.श्यामसिंह'शशि' ❑प्रो .रामबुझावन सिंह ❑श्री गिरीशचंद्र श्रीवास्तव, ❑श्री जियालाल आर्य ❑डॉ० बालशौरि रेड्डी ❑डॉ० सच्चिदानंद सिंह 'साथी' ❑श्री जे.एन.पी.सिन्हा ❑श्री बाँकेनन्दन प्रसाद सिन्हा ❑प्रो० धर्मेन्द्र नाथ 'अमन'

रचनाकारों के विचारों से पत्रिका-परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं।

महत्वपूर्ण कदम

जनवरी-मार्च 2003 का अंक 14 मिला, जिसके आवरण पृष्ठ पर देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद तथा जीवन और यौवन के शाश्वत कवि डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' की तस्वीरें छापकर देशवासियों के दिलो-दिमाग में उनकी यादगार ताजा रखने का आपने प्रयास किया है। देशरत्न डॉ. प्रसाद की 118वीं जयंती पर उनकी विलक्षण प्रतिभा, त्याग, सादगी, सेवा और संयम को समर्पित कर पिछले 16 एवं 17 नवंबर को नई दिल्ली में राष्ट्रीय विचार मंच एवं राष्ट्रीय चेतना की 'वैचारिक क्रांति के नए आयाम' पर आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन में समसामयिक विषयों की चर्चा और उसकी विस्तृत रपट पढ़कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। जन चेतना की दिशा में उठाया गया आपका यह कदम अत्यंत महत्वपूर्ण कहा जाएगा। मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

-अरुणेश तेंदुलकर, कल्याणी, महाराष्ट्र

वैचारिक क्रांति जरूरी

'विचार दृष्टि' के जनवरी-मार्च 2003 अंक का संपादकीय मर्मस्पर्शी रहा। यह कहना सही है कि इस देश व समाज की आज जो भयावह स्थिति है उसमें सक्रिय हस्तक्षेप से व्यापक फेरबदल की गुंजाइश है, जिसके लिए प्रबुद्धजनों को नकली बौद्धिक कुहासेवाले खोल से बाहर आना होगा। हमारी भयंकरतम समस्या बढ़ती आबादी पर रोक लगाए बिना देश की प्रगति की कल्पना वास्तव में बेमानी होगी। विचार-शुन्यता की घड़ी में अन्याय, शोषण और भ्रष्टाचार के विरूद्ध वैचारिक क्रांति आवश्यक है, संपादक के इस विचार से मैं पूर्णतः सहमत हूं। इस दिशा में मंच तथा 'विचार दृष्टि' के द्वारा किए जा रहे प्रयास स्तुत्य हैं।

-अभिनवचन्द्र मिश्र, भुवनेश्वर

संकुचित सोच से उबरें

जबतक समाज ऊंच-नीच, छोटे-बड़े तथा जातिगत भेदभाव रूपी संकीर्ण विचारों में बंटा रहेगा, सामाजिक समरसता नहीं आ सकती। स्वकेंद्रित मानुषिकता संहारक आसुरी भाव को जन्म देती है। सांप्रदायिक सद्भावना से हम निज के संकुचित स्वार्थों से ऊपर उठकर एक-दूसरे से सहज सह अनुभूति से जुड़ते हैं। प्रो० कुमार रवीन्द्र विचार से मैं प्रभावित हूं।

-डॉ. प्रणव पारीक, जोधपुर, राजस्थान

सभी दृष्टि से विशिष्ट

विचार-दृष्टि का जनवरी-मार्च 03 अंक देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। इतनी अच्छी पत्रिका का प्रकाशन कर आपने हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में अपना स्थान निश्चय ही सुरक्षित कर लिया है। इसके लिए मेरा साधुवाद स्वीकार करें। साज-सज्जा, सामग्री सभी दृष्टि से 'विचार-दृष्टि' विशिष्ट स्थान की अर्हता रखती है। आप जैसे कर्मठ, चिन्तनशील और साहित्यानुरागी व्यक्ति से ही इस युग में ऐसी पत्रिका प्रकाशन संभव है।

-डॉ. शिववंश पाण्डेय, पटना

उत्तरोत्तर उत्कर्षोन्मुख

विचार दृष्टि की यह पत्रिका उत्तरोत्तर उत्कर्षोन्मुख है। आपकी यह साधना हिंदी और हिन्दुस्तान दोनों की सेवा के लिए महत्वपूर्ण है। मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें।

डॉ. वीरेन्द्र कुमार तिवारी, इलाहाबाद

क्रांतिकारी कदम

'विचार दृष्टि' मार्च 2003 का राष्ट्रीय अधिवेशन अंक देखने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। राष्ट्रीय चेतना जगाने में इस पत्र की भागीदारी को नाकारा नहीं जा सकता है। आज के इस भौतिकवादी भाग दौड़ में विचार मंथन के प्रयास, साहित्य के प्रति समर्पण महान व्यक्तियों के लीक पर चलने की सलाह सचमुच एक क्रांतिकारी कदम है। मैं इस पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करता हूं। इस त्रैमासिकी ने पांच वर्ष की अवधि पार कर ली है, यह सचमुच एक महान उपलब्धि है। इसके संपादक व प्रकाशक साधुवाद के पात्र हैं।

आजातशत्रु, पटना

पाठकों से

पत्रिका के विभिन्न स्तंभों में छपी रचनाओं पर आपके विचारों व प्रतिक्रियाओं का स्वागत है क्योंकि वे ही हमारे संबल हैं। आपके सुझाव हमारे लिए बहुत ही कीमत रखते हैं।

हमें इस पते पर लिखें --

पाठकीय पन्ना, 'विचार दृष्टि'
'दृष्टि', यू-207, शकरपुर,
विकास मार्ग, दिल्ली-92

जरा इनकी भी सुनें

आज पेट्रोल के लिए युद्ध हो रहा है जबकि भविष्य में पानी के लिए लड़ाई होगी।

-अटल बिहारी वाजपेयी, प्रधानमंत्री

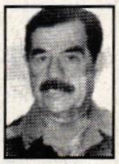

जीत हमारी ही होगी। इराकी दुश्मनों के गले काटेंगे क्योंकि खुदा ने उन्हें ऐसा करने का आदेश दिया है।

-इराकी राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन

अमेरिका ने संयुक्त राष्ट्र नाम की संस्था की हत्या कर दी है जिस पर दुनिया को भरोसा था।

-पूर्व प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह

अमन-चैन का सबसे बड़ा शत्रु अमेरिका है।

-स्तंभलेखिका सुभाषिनी अली

देश के प्रत्येक नागरिक सम्मान के साथ जीने में सक्षम होने के लिए शासन में पारदर्शिता लाना आवश्यक है।

-राष्ट्रपति ए.पी.जे. अबदुल कलाम

अमेरिका को यह शोभा नहीं देता। हमला न तो न्यायोचित है और नहीं तर्कसंगत।

-डा. कर्णसिंह, सांसद

संसार के सभी धर्म किसी न किसी रूप में अध्यात्म और अलौकिकता से जुड़े होते हैं।

-सुप्रसिद्ध लेखक डॉ. महीप सिंह

एकतरफा कार्रवाई से धर्म के नाम पर मर-मीटने को अमादा एक नइ खतरनाक सोच उभर सकती है।

-पूर्व प्रधानमंत्री आई.के. गुजराल

संपादकीय

बुरे लोगों को महिमामंडित करने की प्रवृति पर अकुंश लगे

आम तौर पर आज ऐसा देखा जा रहा है कि समाज के विभिन्न क्षेत्रों में बुरे लोगों को महिमामंडित करने की प्रवृत्ति चल पड़ी है। इस पर निश्चित रूप से अंकुश लगनी चाहिए। बुरे लोगों को राजनीति में प्रोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए। अच्छे लोगों की सहायता करने से ही पूरे समाज का हित संभव है। पहले बुरे लोगों का समाज में बहिष्कार किया जाता था, जिसके परिणामस्वरूप बुरे लोग हतोत्साह रहते थे और बुराइयों का प्रसार नहीं कर पाते थे। आज की स्थिति यह है कि अच्छे-बुरे का आकलन किए बिना ही जाति, धर्म, संप्रदाय, भाषा व क्षेत्र के नाम पर राजनीतिज्ञों का समर्थन और सहायता हो जाती है जिसका समाज पर खराब प्रभाव पड़ रहा है। आज खुलेआम बुरे लोगों को महिमामंडित किया जा रहा है। विभिन्न कार्यक्रमों में मंचासीन करके एवं वरीयता देकर सम्मानित करने की प्रवृत्ति नागरिकों में तेजी से बढ़ रही है, जो समाज और राजनीति दोनों के लिए घातक है। समाज व मीडिया का यह परम कर्तव्य बनता है कि बुरे लोगों को महिमामंडित करने की प्रवृत्ति पर वे अंकुश लगाएं। उनकी यह जिम्मेदारी है कि वह समाज को अच्छे व बुरे लोगों की पहचान कराए और नागरिकों का कर्तव्य है कि खराब छवि के लोगों को तरजीह न दें। आखिर क्या कारण है कि आज राजनीति ही नहीं बल्कि तमाम व्यवस्था ही बीमार है, जिसके इलाज के लिए जनता का जागरूक होना जरूरी है। आज जरूरत इस बात की भी है कि संसद व विधान सभाओं जैसी गौरवमयी संस्थाओं में सिर्फ अच्छे और योग्य लोगों को ही चुनकर भेजा जाए। राजनीति में आपराधिक तत्वों के शामिल होने एवं धनबल का घुन लगने के कारण अब जनता का भरोसा राजनीतिज्ञों पर से उठता जा रहा है। पहले नेताओं को बहुत सम्मान दिया जाता था, लेकिन अब समाज में उन्हें हिकारत भरी नजर से देखा जाता है। ताकत, धन व जोड़-तोड़ के सहारे राजनीति करनेवालों की वजह से सियासत का मिजाज बिगड़ रहा है।

भारतीय लोकतंत्र के पहरूए बने इस देश के जनप्रतिनिधि आज मतदाताओं की भलाई के लिए कितना काम कर पा रहे हैं, यह किसी से छिपा नहीं है। बल्कि सच तो यह है कि नौकरशाह के सामने वे इतना बेबस हैं कि नौकरशाहों रूपी शेर के गले में घंटी बाँधने का साहस कोई जनप्रतिनिधि नहीं जुटा पा रहा है, भले ही सांसद व विधायक निधि द्वारा प्रस्तावित योजनाओं को स्वीकृति देने में नौकरशाहों द्वारा अड़ंगा लगाकर वापस किया जाता रहे तथा निधि का उपयोग न हो पाए। सच तो यह है कि नौकरशाही को भस्मासुर बनाने का काम भी खुद राजनेताओं ने ही किया है। अपने वैध-अवैध काम करवाने के लिए उन्होंने नौकरशाही का खुलकर दुरुपयोग किया और बदले में नौकरशाही ने अपने लिए 'स्वेच्छाचारिता' का प्रतिदान ले लिया।

अब यही देखिए न, पिछले दिनों उ०प्र० की मुख्यमंत्री सुश्री मायावती ने शाही अंदाज में सरकारी खर्च पर अपने जन्मदिन मनाकर वैभव व ठाठ-बाट से अपना जन्म दिन मनानेवाली तमिलनाडु की मुख्यमंत्री सुश्री जयललिता को भी काफी पीछे छोड़ दिया। पहली बार ऐसा हुआ कि जनता की गाढ़ी कमाई से उगाहे गए कर के पैसों से किसी दलित, पीड़ित व शोषितों की हितैषी मुख्यमंत्री का जन्मदिन डंके की चोट पर सरकार द्वारा मनाया गया और नौकरशाहों ने खुलकर सरकारी धन का दुरुपयोग किया। यहाँ तक कि बिना बँटे एक लाख लड्डू पर सरकारी कोष का पैसा लगा। राज्य की आर्थिक हालत खस्ता होने पर भी जन्मदिवस समारोह में सभी विभागों के मंत्रियों तथा नौकरशाहों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया था। सरकारी मशीनरी का जमकर दुरूपयोग हुआ। नेता के समक्ष पूरा प्रशासनिक तंत्र ही नहीं बल्कि सहयोगी दल का नेतृत्व भी नतमस्तक था। सभी नेतागण आत्मप्रशंसा में संलिप्त होने के लिए सामाजिक भेद को त्याग चाटुकारिता से अपनी तुष्टि कर रहे थे। उन्हें इसकी परवाह नहीं थी कि उनकी इस ओछी हरकत से करदाताओं की जेब में छेद हो रहा है।

हम सब अब इस बात से बखूबी अवगत हो चुके हैं कि इस देश में आज जो सामाजिक एवं राजनीतिक परिदृश्य है उसमें सामाजिक-आर्थिक समानता और न्याय के क्षेत्र में संवैधानिक लक्ष्य की प्राप्ति असंभव नहीं तो, कठिन अवश्य है। कारण कि लोगों की सारी शक्ति सत्ता व संपत्ति को प्राप्त करने में लगी हुई है। सत्ता एवं संपत्ति की यह लालसा जबतक कम नहीं होगी तबतक सामाजिक समरसता कायम नहीं हो सकती और ना ही स्वस्थ समाज का निर्माण हो सकता और बिना स्वस्थ समाज के एक स्वस्थ राष्ट्र की कल्पना नहीं की जा सकती। इसलिए सत्ता एवं संपत्ति के प्रति लोभ की प्रवृति को बदलना होगा। इसके लिए सत्ता व धन के महत्व को कम करना होगा, क्योंकि उसी से समाज का वातावरण विषाक्त हो रहा है और अनेक बुराइयों की जड़ में यही प्रवृति काम कर रही है। इसलिए जरूरत आज इस बात की है कि सामाजिक जीवन में धन के महत्व को कम किया जाए और सत्ता को अनावश्यक सम्मान नहीं दिया जाए। इसके लिए एक ओर जहाँ संगठित होकर अनावश्यक प्रदर्शन और खर्चीले तमाशों का डटकर विरोध किया जाए वहीं

दूसरी ओर योग्यता तथा गुणों के आधार पर लोगों को सम्मान दिया जाए। समाज के जागरूक नागरिक अपने इस दायित्व के निर्वहन के लिए जन-जन से जुड़ें ताकि जनतंत्र को वस्तुत: प्रतिष्ठित करने का भाव मुखर हो सके और अधिकारों, आदर्शों, मूल्यमर्यादाओं और नियमप्रक्रिया का मजाक उड़ाने वालों को सबक सिखाया जा सके।

आज समाज के तथाकथित हितचिंतक नेताओं का आकर्षण सत्ता-संपत्ति और भोग-विलास की तरफ हो गया है। व्यक्ति संकुचित स्वार्थ और स्पर्धा से छिन्न-भिन्न हो गया है। महापुरुषों के विचार और चिंतन हाशिए पर चले गए है। किंतु यदि समाज और देश का हित सोचना है और मानव-कल्याण करना है तो अहिंसा और सत्य के मार्ग को अपनाना होगा। उसी मार्ग पर चलकर हम सामाजिक परिवर्तन की दिशा में अग्रसर हो सकते हैं और देश की समस्याओं का निदान भी निकल सकता है।

बुरे लोगों को महिमामंडित करने की प्रवृति राजनीतिक कार्यकर्ताओं एवं छुटभैए नेताओं से लेकर सांसदों व विधायकों तक में है। सच तो यह है कि इससे रचनाकार, पत्रकार, संस्कृति कर्मी, अभियंता, चिकित्सक, अधिकारी-कर्मचारी से लेकर ठेकेदार तक अछूता नहीं हैं। और तो और साहित्य के क्षेत्रे में भी वैसे लोगों को महिमामंडित किया जा रहा है जिनका उस क्षेत्र में कोई योगदान नहीं । इसके पीछे उनका धनबल काम करता है यही नहीं बल्कि कई क्षेत्रों में तो आजकल अक्षम व्यक्ति हीं सक्षम बन बैठे हैं। समाचार-पत्र के पन्ने ऐसी खबरों से रंगे रहते हैं जिसमें बुरे लोगों की आरती उतारी जा रही है, नेताओं के बयान आ रहे हैं। अभी पिछले दिनों उ०प्र० के दुर्दम्य अपराधी विधायक उदय प्रताप सिंह उर्फ राजा भैया की पोटा के तहत जब गिरफ्तारी हुई तो इस देश के प्रमुख राजनीतिक दलों एवं उसके बड़े नेताओं का राजा भैया के प्रति जिस प्रकार खुलकर समर्थन मिला वह राजनीतिक मूल्यों की गिरावट का परिचय देता है। इन नेताओं ने पोटा लगाये जाने का विरोध इसलिए किया कि कल कहीं ऐसी गाज उन पर न आ गिरे। विरोध करना ही है तो सब मिलकर राजनीति में बढ़ते अपराधीकरण का करें। ऐसे दोहरे चरित्रवाले नेताओं के उद्‌बोधन युवाओं को न तो प्रेरित करते हैं और न आंदोलित।

आज ऐसा देखा जा रहा है कि समाज में बिना, श्रम, बिना त्याग और बिना पुरुषार्थ के धन कमानेवालों की होड़ लगती जा रही है। राजा भैया ही नहीं अनेक सांसद व विधायक उसके प्रतीक हैं। देश के हर राज्य में ऐसे अनेक राजा भैया हैं, जिन्हें राजनीति में सफलता सिर्फ इसलिए मिल रही है कि मीडिया उनके चरित्र का खंडन नहीं बल्कि महिमा मंडन कर रहा है। शहादत केवल जान देकर ही नहीं की जाती, कभी-कभी जीवन में तकलीफें उठाकर भी सुख-संपत्ति पाने के अनैतिक प्रस्तावों को ठुकराने वाले भी अपने जीवन में जिंदा शहीद हो जाते हैं।

इधर एक चीज और देखने में आ रही है कि मीडिया-चाहे वह समाचार पत्र हो या इलेक्ट्रॉनिक-समाज की निर्मिति की हिमायत कर रहे हैं। परंतु बददिमाग व अपराधी तत्वों का अभिनंदन और महिमामंडन कर आखिर वे कैसा समाज बनाना चाहते हैं? यह कहने की आवश्यकता नहीं कि हमारे जीवन पर मीडिया का गहरा प्रभाव पड़ता है तथा हमारे सामाजिक और राजनीतिक जीवन की दिशा तय करने में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। यही नहीं बल्कि हमारी व्यक्तिगत जीवन शैली के निर्माण में भी वह अपना प्रभाव छोड़ती है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि आज के भारतीय समाज में अपराध और राजनीति का गहरा गठजोड़ हो चुका है तथा अपराध को धीरे-धीरे सामाजिक स्वीकृति और वैधता मिलती जा रही है। ऐसी परिस्थिति में मीडिया द्वारा अपराधियों के बचाव ही नहीं बल्कि उसे महिमामंडित किया जाना उचित नहीं। समाज की संरचना में एक कानूनी नैतिकता निहित है जो हर प्रकार की अमानवीयता का विरोध करती है। यही नैतिकता किसी भी सभ्य समाज को उदात्तता और दीर्घजीविता प्रदान करती है। इसलिए समाज तथा मीडिया का यह सरोकार होना चाहिए कि वह इस नैतिकता की रक्षा करे न कि हर घटना को अर्थ लाभ के नजरिए से देखा जाए। लेकिन आज मीडिया अथवा समाज के लोग अपराधी की प्रशंसा में लहालोट हो रहे हैं। सलमान खान का ही उदाहरण लें तो आप पाएंगे कि उन्होंने राजस्थान में हिरणों का शिकार कर कानूनी जूर्म किया, शराब के नशे में बिना लाइसेंस के अपनी कार से निर्दोषजन को कुचल डाला। फिर भी मीडिया ने सलमान को बराबर सुर्खियों में रखा, उनकी जमानत होने पर एक चैनल ने सलमान की रिहाई की प्रक्रिया को एक सनसनीखेज कहानी में तब्दील करने में रही, सलमान के घर उसके प्रशंसकों की भीड़ दिखाई जा रही है और वे अपने घर के छज्जे से दर्शन देते हैं। आखिर यह सब किस सभ्य समाज की संस्कृति है। समाज तथा मीडिया को अपनी भूमिका पर इस दृष्टि से विचार करने की आवश्यकता है। आज जरूरत इस बात की है कि मीडिया आम आदमी के सरोकारों को खुद से जोड़े और उसके दु:ख-दर्द में भागीदारी बने। पत्र-पत्रिकाओं को संवाद का मंच बनना होगा।

एक सुहाना सपनाः इंडिया विजन 2020

❑ सिद्धेश्वर

देश के चुनिंदा विशेषज्ञों की सेवाएं लेकर तैयार इंडिया विजन 2020 के दस्तावेज में जो लक्ष्य दर्शाए गए हैं उसका तहेदिल से स्वागत किया जाना चाहिए। देश के नेता, मंत्री और योजनाकारों ने सन् 2000 के पूर्व भी इसी तरह का सपना देखा था कि 21वीं सदी आते-आते हमारे सारे कष्ट दूर हो जाएंगे। पर जब 21वीं सदी आ गई तो लगा कि हम ठगे गए हैं। उसी प्रकार 'इंडिया विजन 2020' में भी जो लक्ष्य निर्धारित हैं-वह मौजूदा अर्थव्यवस्था के विकास की गति, राजनीतिक परिदृश्य तथा संचालकों के कामकाज के ढंग-ढर्रे यह सोचने के लिए मजबूर करते हैं कि आखिर वह सुहाना सपना बनकर तो नहीं रह जाएगा। क्योंकि जो आज राजनीतिक परिस्थितियाँ हैं, प्रशासन तंत्र जिस प्रकार लचर-पचर है और भ्रष्टाचार का जहाँ बोलवाला है उसमें यह कैसे उम्मीद की जाए कि उन लक्ष्यों की प्राप्ति हम कर पाएंगे। कौन करेगा यह सब काम और कहाँ से आ पाएगा उसके लिए ढेर सारा धन यह सवाल भी अहम है।

गरीबों, बेरोजगारों, बीमारों, निरक्षरों की संख्या, मृत्युदर, फोन, प्रतिव्यक्ति उर्जा की खपत, प्रति हजार लोगों पर कम्प्यूटरों की संख्या आदि के जो लक्ष्य निर्धारित हैं वह चौकानेवाले हैं। अगले 16-17 वर्षों में निरक्षरता पूरी तरह समाप्त हो जाएगी, औरतों की साक्षरता 55 प्रतिशत से बढ़कर 95 प्रतिशत हो जाएगी ये कुछ ऐसे लक्ष्य हैं जिसकी प्राप्ति पर संदेह करना गैरमुनासिब नहीं है।

भारत के राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने भी भारत को 2020 तक विकसित राष्ट्र बनाने के लिए छह जनमिशन प्रारंभ करने पर जोर दिया और सभी नागरिकों से इसमें सहयोग का आग्रह किया है। उन्होंने आर्थिक विकास का महत्व देते हुए दूसरी हरित क्रांति की बात कही है। कारण कि कृषि क्षेत्र की लगातार उपेक्षा और मात्र औद्योगिक विकास के लिए समर्पित होने से देश के सामाजिक-आर्थिक ढाँचे में एक असंतुलन पैदा होता जा रहा है। यही कारण है कि राष्ट्रपति ने कृषि क्षेत्र को तमाम तकनीकों का लाभ देने का आह्वान किया है।

यह सच है कि आज की तारीख में विकास का मुद्दा ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। किंतु पिछले वर्षों में ऐसा देखा गया है कि इस देश के राजनीतिक दलों ने अपने तात्कालिक स्वार्थ की सिद्धि के लिए सांप्रदायिकता, जातिवाद, भाषायी तथा क्षेत्रीयता जैसे छद्म मुद्दों को उठाया है और उसी में हमारा देश उलझा हुआ है। जबकि दक्षिण-पूर्व एशिया के कई छोटे-छोटे देश आज विश्व की प्रमुख आर्थिक शक्तियों के रूप में उभरकर आए हैं। राष्ट्र की समस्याओं को चंद जातिगत, क्षेत्रगत अथवा संप्रदायगत जुमलों में समेटकर देखनेवाले बड़बोले राजनेताओं से यह कैसे उम्मीद की जाए कि 'इंडिया विजन 2020' का सपना पूरा होगा। वास्तव में विकास की धारा मात्र शहरों तक सीमित रहे, इसका कोई औचित्य नहीं। दुर्भाग्य से आज ऐसा ही हो रहा है। विकास की सारी सुविधाएं महानगरों शहरों तक सिमटती जा रही हैं और देश की कुल आबादी का अस्सी प्रतिशत वालें गांवों के विशाल वर्ग की अनदेखी कर उसे दुर्दशाग्रस्त होते देखा जा रहा है।

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि भारत के पास संसाधन, क्षमता और श्रमशक्ति भी है जिससे इसका भाग्य संवारा जा सकता है। यदि कहीं किसी चीज का अभाव दिखता है तो वह है संकल्प एवं इच्छाशक्ति का अभाव। भारत के चहुँमुखी विकास के लिए राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम के सपनों के अनुरूप वर्ष 2020 कार्य योजनाओं को अमलीजामा पहराने हेतु हम सब देशवासी आत्मविश्वास और एकजुटता का परिचय दे तो लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है यह भी सच है कि अगर हम सही सोच में आगे बढ़ते हैं तो अगले पाँच- सात वर्षों में भारत एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में चीन, रूस और जापान की तरह उभर सकता है। हमारे पास प्रचुर तकनीकी मानव संसाधन हैं और आज की परिस्थिति हमारी आर्थिक प्रगति के लिए महत्वपूर्ण है। किंतु दुर्भाग्य यह है कि हमें उल्टी बातों को पकड़ने की आदत है। दरअसल हजारों साल की गुलामी और औपनिवेशिक पराधीनता में रहने के कारण हमारे भीतर नकारात्मक भावनाएं पैदा हो गई हैं। हमने तरक्की नहीं की है, यह बात भी नहीं। आजादी के 55 साल बाद अब हमारा दुनिया में सकल घरेलू उत्पाद में चौथा स्थान है। दुनिया में आज तकनीकी मानवशक्ति में हमारा तीसरा स्थान है। हमारी वर्तमान पीढ़ी भविष्य की पूँजी है। यदि हम सकारात्मक दिशा में बढ़ें और दैनिक क्रम में होनेवाली घटनाओं को हम अधिक महत्व न दें और भ्रष्टाचारी एवं आपराधिक एवं दमनकारी नेताओं को चुनाव में ठुकरा दें तो कोई कारण नहीं कि भारत एक विजेता के रूप में नहीं उभरे। राजनीति जब आर्थिक शक्तियों की कोख से जन्म लेती है तो उसके अभ्यासी राजनीतिज्ञों की महत्वाकांक्षा आर्थिक शक्तियों का अतिक्रमण नहीं कर पाती। इसी प्रकार जब सामाजिक शक्तियों द्वारा राजनीति की रीढ़ तैयार होती है तो वह जनमन के भावों का अतिक्रमण नहीं करती, उसकी कृतज्ञता, प्रतिबद्धता जनभावनाओं के प्रति होती है। दरअसल वर्तमान दिग्भ्रमित राजनीति का जो बीजारोपन दशकों पहले हुआ था आज वही फलित हो रहा है।

एक अरब आबादी के भारत की स्थिति भी आज डेढ़ करोड़ की आबादी वाला देश अर्जेंटीना की तरह हो रही है। अर्जेंटीना में आज सब कुछ है अनाज सरकारी गोदामों में सड़ रहा है पर वहाँ की 70 प्रतिशत जनता भूखी मर रही है। नेताओं और उनके दलालों ने बड़े-बड़े कृषि फार्म हाउस बनाकर स्थिति अपने नियंत्रण में कर रखी है। देश के 80

प्रतिशत उद्योग धंधों पर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का कब्जा है। वहाँ की जनता की पीड़ा यह है कि उसके पास टी०वी०, फ्रिज और कम्प्यूटर तो हैं पर खाने की रोटी नहीं है।

अर्जेंटीना भी 60 के दशक से विश्वबैंक और अंतराष्ट्रीय मुद्राकोष के नीति नियमों के मुताबिक चल रहे इस कृषिप्रधान देश की यह दुर्दशा है। हमारे देश में भी अर्जेंटीना वाली स्थितियाँ पनपती जा रही हैं। एक के बाद एक संसाधनों पर यहाँ भी नेता एवं अपराधी तथा प्रभावशाली लोग कब्जा करते जा रहे हैं। तमाम परियोजनाओं में विश्वबैंक के अतिरिक्त अर्द्धसरकारी संस्थानों ने जबरदस्त पैसा लगाया है और यहाँ की जनता भी कर्ज के भार से त्रस्त है। भारतीय जनता को अर्जेंटीना का हश्र नहीं भूलना चाहिए।

मुझे लगता है कि भारी भरकम नौकरशाही एवं कर्मचारियों की फौज, राजनीतिक अस्थिरता एवं उसका अपराधीकरण, प्रशासन में जवाबदेही का अभाव तथा गरीबों के कल्याण के लिए चलाई जा रही विभिन्न परियोजनाओं में भ्रष्टाचार 'इंडिया विजन 2020' के लक्ष्यों को अमलीजामा पहराने में बाधक होंगे। सर्वांगीण विकास के लिए उपरोक्त तमाम बाधाओं को प्राथमिकता के तौर पर दूर करना होगा ताकि भारत का प्रत्येक नागरिक विकास की उपलब्ध आधुनिकतम सुविधाओं का भरपूर लाभ उठा सके।

इस समय अमीर देशों के बीस प्रतिशत लोग विश्व के अस्सी प्रतिशत संसाधनों का उपभोग कर रहे हैं। भारत में विश्व के 16 प्रतिशत लोग रहते हैं। यदि हमें विकसित देशों की बराबरी करनी है तो हमें भी विश्व के 64 प्रतिशत संसाधनों की आवश्यकता होगी। ऐसा हो पाना लगभग नामुमकिन है, उचित भी नहीं है। अतएव हमें ऐसा तरीका खोजना होगा कि हम अपने सीमित संसाधनों के बल पर विकसित देश बन सकें। किंतु योजना आयोग ने जो 'इंडिया विजन 2020' शीर्षक अंतर्गत जो दस्तावेज तैयार किया है वह अमीर देशों द्वारा अपनाई गई विकास प्रक्रिया पर ही आधारित है। हमारा मत है कि हमें कृषि आधारित ऊर्जा की जगह वायू, सौर, ज्वार भाटा एवं परमाणु ऊर्जा के विकास पर ध्यान देना चाहिए क्योंकि बढ़ती आबादी के लिए हमें अधिक भूमि पर खाद्य पदार्थों का उत्पादन करना होगा।

'विजन' का अर्थ होता है भविष्य में झाँकना। वर्ष 2020 में हमें अपने देश को विकसित बनाने के लिए दूसरों का अंधानुकरण छोड़ अपने बल पर आगे बढ़ना होगा।

भारत में निरंतर तेजी से बढ़ती आबादी, कृषि क्षेत्र की उपेक्षा और सदियों से चले आ रहे परंपरागत कुटीर-उद्योग धंधों के प्रति लापरवाही, सार्वजनिक उपक्रमों व निगमों से लाखों श्रमिकों की छंटनी, जबरन सेवा निवृति, तालाबंदी तथा 244 औद्योगिक इकाइयों में से सार्वजनिक क्षेत्र की अधिकांश इकाइयों के बंद होने का ही परिणाम है कि आजादी के इन पाँच दशकों में बेरोजगारों की संख्या विकराल रूप धारण कर आज लगभग दस करोड़ के आस-पास पहुँच चुकी है। भारत में आनेवाले वर्षों में करीब 90 लाख से अधिक लोग प्रतिवर्ष रोजगार पाने की कतार में लगेंगे। दरअसल हमारे देश की सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि यहाँ प्रारंभ से ही विदेशियों द्वारा लादी गयी नीतियों के आधार पर ही योजनाएं तैयार की जाती रही हैं। देश की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति का अध्ययन करके गाँधी द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों के अनुरूप नीतियाँ और परियोजनाएं बनाने पर जोर नहीं दिया गया ताकि बेरोजगारी की समस्या का समाधान हो पाता। सच तो यह है यहाँ के राजनीतज्ञ तो नौकरशाहों के इशारे पर नीतियाँ बनाते हैं और नौकरशाह के लिए तो निजी स्वार्थ ही सर्वोपरि होता है इसलिए वे योजनाएं अपने हितों को दृष्टिगत रखते हुए ही बनाते हैं। उनके लिए गाँधी तो केवल नाम भर के लिए उनके पीछे दीवारों पर लगे हैं। वे गाँधी से कोसों दूर हैं। यहीं कारण है कि गाँधी की विचारधारा के अनुरूप नीतियाँ नहीं बनाई जा सकीं। इस हालात में 'इंडिया विजन 2020' की सफलता पर प्रश्न चिन्ह लगना स्वाभाविक है। इस भीषण समस्या का निदान तो व्यवस्था में बुनियादी परिवर्तन की लड़ाई लड़कर ही निकाला जा सकता है जिसके लिए एक जनांदोलन अभियान चलाने की जरूरत है। भारतीय गणतंत्र के सर्वोच्च पद पर आसीन राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम का सपना है कि 2020 तक यह देश दुनिया के विकसित देशों की अग्रिम पंक्ति में खड़ा हो जाए और देश के गांवों में आदि कालीन जीवन जी रहे आम आदमी की झोपड़ियों में विकास की किरणें पहुँचे। देश का प्रथम नागरिक जब विज्ञान, तकनीक तथा कम्प्यूटर के प्रयोग से जीवन को अत्याधुनिक बनाने की बात कह रहा है ठीक उसी दौर में समाज के सबसे निचले पायदान पर बैठा व्यक्ति सदियों पुराने औजारों के साथ खेतों में अपने लहू को पसीने में तब्दील कर रहा है। देश के प्रथम और आखिरी आदमी के बीच सदियों का फासला है। राष्ट्रपति तथा भारत सरकार के इंडिया विजन 2020 के सपनों को अमली जामा पहनाने के लिए जिस व्यवस्था, लगन, ईमानदारी, जनोन्मुखी देश प्रेम की जरूरत है उसका लोप होता चला जा रहा है। सोच में ही घुन लगी हुई है । ऐसी स्थिति में यदि उनके सपने को साकार करना है तो प्रथम और आखिरी के बीच की सदियों की खाई को पाटना होगा, गांव-गांव, गली-गली में शिक्षा की ज्योति जलानी होगी, चेतना की लहर फैलानी होगी, भूखे पेटों को अन्न, नंगे तन को बसन और खुले आसमान तले रहनेवालों को घर की सुविधा देनी होगी।

देश में निरंतर बढ़ती बेरोजगारी व्यक्ति, समाज और पूरे देश को भयंकर रूप से प्रभावित कर रही है, देश के युवाओं के चेहरों पर अनिश्चित भविष्य व निराशाजनक अंधकारमय जीवन की छाया सहज ही परिलक्षित होती है। बेरोजगारी की वजह से ही गरीबी, रिश्वतखोरी, अराजकता, सामाजिक जीवन स्तर में गिरावट तथा कई अन्य सामाजिक समस्याएँ जन्म ले रही हैं। देश की प्रगति के लिए इन समस्याओं से निजात पाना अनिवार्य है और इन समस्याओं का निदान तभी निकल सकता है जब बढ़ती जनसंख्या पर सख्त कानून के जरिए रोक लगे, शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन किए जाएँ, विदेशी कंपनियों की अपेक्षा स्वदेशी कंपनियों और कुटीर एवं लघु उद्योगों को अधिक प्रोत्साहन मिले तथा भारतीय प्रतिभाओं के बाहर पलायन पर रोक लगे। भारत सरकार इन समस्याओं से अवगत है किंतु दिक्कत यह है कि नीतियों और योजनाओं को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए जैसी राजनीतिक इच्छाशक्ति और संकल्पशक्ति की जरूरत है उसका अभाव नजर आता है। यही वजह है कि 10वीं पंचवर्षीय योजना में वर्ष 2020 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की जो रूपरेखा तय की गई है उन्हें हासिल करना असंभव नहीं तो मुश्किल अवश्य होगा। ❑

कहानी

गृह-प्रवेश

❑ कृष्ण कुमार राय

अपनी ज़िन्दगी भर की कमाई से काट-काट कर अब तक मैं जो भी बचत कर सका था, वह सारी रकम तीन कमरों के छोटे से निर्माणाधीन मकान की छत ढलवाते-ढलवाते स्वाहा हो गई। सौभाग्य से भगवान ने कोई पुत्री नहीं दी है, इसलिये दहेज की चिन्ता से जरूर मुक्त हूँ। तभी तो हिम्मत करके जोड़ी-बटोरी सारी जमा-पूँजी मकान का ढाँचा खड़ा करने में झोंक दी। लेकिन नये घर में जाने से पहले खिड़की-दरवाजे लगवाना तो जरूरी है और एकाध कमरे का फर्श ठीक कराना भी आवश्यक है। शौचालय का काम पूरा कराना तो निहायत लाज़िमी है। शहर में उसके बिना कहाँ गुज़ारा! चलो, रसोई की तो कुछ दिनों के लिये अस्थायी व्यवस्था भी हो सकती है, गोकि यह भी कम जरूरी नहीं।' दफ्तर से लौटकर तख्त पर उतान पड़ा मैं उन्हीं सब चिन्ताओं में गोते लगा रहा था कि उसी समय श्रीमती जी, जिन्हें मन मगन रहने पर मैं मालकिन वरना बब्बू की अम्मा कहकर पुकारता था, गुड़ की भेली और गिलास का पानी लिये आ पहुँची। मुझे कुछ परेशान देखकर बोलीं, "आज कैसे थके-थके से दिखलायी पड़ रहे हो बब्बू के पापा। तबियत तो ठीक है न ?"

"ठीक ही हूँ, कोई खास बात नहीं। वही मकान के बारे में सोच रहा था।" कहते हुए मैंने गुड़ की भेली उठाकर मुँह में डाली और गिलास का पानी मालकिन के हाथ से लेकर गटक गया।

मालकिन ने पूछा, "अभी कितना काम बाकी है मकान में? पंडित जी ने नवरात्र के पहले ही दिन गृह-प्रवेश की साइत निकाली है। अब कितने दिन बचे ही हैं नवरात्र आरम्भ होने में।"

माथे पर चुभचुभाया पसीना पोंछते हुए मैं बोला, "लगता है साइत आगे टालना होगा। नवरात्र तक तो मकान रहने लायक बन नहीं पावेगा। जोड़ी-बटोरी सारी पूँजी लग चुकी। फण्ड से भी जो कुछ मिल सकता था निकाल चुका। लेकिन अब भी पाँच-छह हजार रुपये हों तब कहीं मकान किसी तरह रहने योग्य होगा। जबतक इतने पैसों का जुगाड़

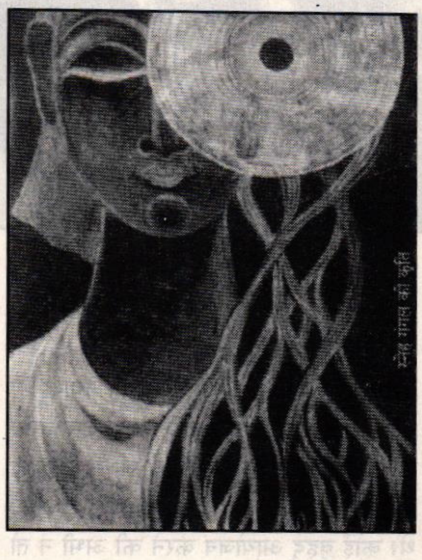

नहीं हो जाता, काम बन्द करना होगा।"

ऐसा क्यों कहते हो बब्बू के पापा। अगर नवरात्र में गृह-प्रवेश न हुआ तो बड़ी जगहँसायी होगी। मुहल्ले-टोले में सभी से कह चुकी हूँ कि नवरात्र में हमलोग नये मकान में चले जायेंगे। मकान मालकिन से भी नवरात्र तक मकान खाली करने का वादा कर दिया है। अब तो किसी तरह काम पूरा कराना ही होगा।"

"कैसे काम आगे बढ़े, मुझे तो कुछ सूझ नहीं रहा है बब्बू की अम्मा। लगता है चिन्ता के मारे पागल हो जाऊँगा या हार्ट फेल हो जायेगा।"

"क्यों इस तरह की अशुभ बातें मुँह से निकालते हो जी। पागल हों हमारे दुश्मन, हार्ट फेल हो उन्हीं कलमुँहों का। हमारा तो मकान बनकर रहेगा और नवरात्र में ही गृह-प्रवेश भी होगा। मन छोटा करने से कोई काम थोड़े ही बनता है। हमारी शादी में बाबूजी के दिये गहने आखिर किस दिन काम आवेंगे। इसी हारे-गाढ़े के लिये तो होती है यह धरोहर। बक्से में पड़े-पड़े सड़ने के लिये थोड़े ही है। कौन रोज पहनता है उन्हें। कभी तीज-त्योहार पर घड़ी-दो घड़ी के लिये पहिनकर फिर बक्से के हवाले कर देती हूँ। गहने न भी रहेंगे तो क्या बिगड़ जायेगा। पैरों में महावर लगाकर सगुन कर लूँगी। कोई बिटिया तो ब्याहनी नहीं है जो दहेज की चिन्ता हो। दोनों बेटे अभी पढ़ रहे हैं। उनकी शादी-ब्याह तक भगवान ने चाहा तो फिर नये गहने बन जायेंगे। अभी तो नथिया-टीका छोड़कर और सारे गहने बेच डालो और मकान का काम जल्दी पूरा कराओ। अपना घर हो जायेगा तो समाज में भी साख बढ़ेगी। दिन फिरते देर थोड़े ही लगती है।"

"ठीक ही हूँ, कोई खास बात नहीं। वही मकान के बारे में सोच रहा था।" कहते हुए मैंने गुड़ की भेली उठाकर मुँह में डाली और गिलास का पानी मालकिन के हाथ से लेकर गटक गया।

मालकिन की तरफ से स्वत: ऐसा प्रस्ताव आने की मैंने कल्पना भी न की थी। सुनकर मेरा भी हौसला बढ़ा। यों यह विचार एकाध बार खुद मेरे मन में भी आया था लेकिन मालकिन के विरोध के भय से संकोचवश कुछ कहने की हिम्मत नहीं पड़ी। आज जब

उन्होंने स्वयं ही यह बात कही तो मानो सिर से भारी बोझ उतर गया। निराशा के बादल देखते ही देखते छँट गये और आशा की एक नई किरण आँखों के सामने चमक उठी। अगले ही दिन मैं मालकिन के चार-पाँच थान गहने लेकर गिरधर सेठ के सर्राफे की दुकान पर जा पहुँचा और गहनों की तौल कराकर उनका दाम लगवाया। बट्टा काटने के बाद जब सेठ ने कुछ नौ हजार एक सौ रुपये कीमत बतलायी तो मन में खुशी की लहर सी दौड़ गई। बिना कुछ आगा-पीछा सोचे मैंने गहने सेठ के हवाले किये और रुपये लेकर खुशी-खुशी घर लौटा। रुपयों की थैली मालकिन के आगे रखकर मैं उनका मुँह ताकने लगा। मैंने देखा कि उनके चेहरे पर न तो गहने बिकने की ग्लानि थी और न माथे पर कोई शिकन की रेखा। वह बड़े सहज ढंग से बोली, "मैं यह पैसे लेकर क्या करूँगी बब्बू के पापा। रखो अपने पास और कल से सारी चिन्ता-फिकर छोड़कर मकान का बचा-खुचा काम पूरा कराने में जुट जाओ। अभी नवरात्र शुरू होने में पूरे एक माह की देर है। तब तक मकान रहने लायक बनवा डालो। हाँ, हजार-डेढ़ हजार रुपये बचाकर जरूर रख लेना। गृह प्रवेश वाले दिन सत्यनारायण भगवान की कथा तो सुननी ही पड़ेगी। दस लोग जुटेंगे तो मुँह मीठा भी कराना होगा। पंडित जी को भी दर-दक्षिणा देनी पड़ेगी।"

"हाँ जी, और ज़्यादा ही बच जायेंगे। मेरा तो ख्याल है कि मकान के जरूरी काम पाँच-छह हजार में पूरे हो जायेंगे। अभी आम की लकड़ी के साधारण खिड़की-दरवाजे लगवा देता हूँ। आड़ हो जायेगी। साल-दो साल तो मजे में कट ही जायेंगे। बाद को जब जुगत होगी तब उन्हें बदलवा दिया जायेगा।"

"चलो, ठीक है। अब ढीले न पड़ना। नवरात्र शुरू होने से दो-चार दिन पहले ही जरूरी काम पूरा हो जाना चाहिये। एक-दो कमरों की रँगायी-पुताई भी ज़रूर करा डालना। बाकी काम तो बाद में भी धीरे-धीरे होता रहेगा।"

अगले ही दिन से मैं पूरी मुस्तैदी के साथ मकान का काम पूरा कराने में जुट गया। नौकरी के साथ-साथ जरूरी इमारती सामान जुटाने के लिये मुझे सुबह-शाम काफी भाग-दौड़ करती पड़ती। शाम तक थककर चूर हो जाता था। रात को सोते वक्त मालकिन हाथ-पैर में जमकर तेल मालिश करतीं और सिर दबातीं जिससे अच्छी नींद आ जाती थी। सुबह फिर तरो-ताजा होकर मैं निर्माण कार्य की देख-रेख के लिये निकल पड़ता। आखिरकार मालकिन के त्याग और सेवा तथा मेरे अथक

परिश्रम ने रंग दिखलाया और नवरात्र आरम्भ होने से ठीक तीन दिन पहले मकान गृह-प्रवेश के लायक बनकर तैयार हो गया, गो कि अनुमान से हजार-आठ सौ रुपये ज्यादा ही खर्च हो गये। फिर भी अभी डेढ़ हजार रुपये से अधिक हाथ में बच गये थे जो कथा-पूजा और मेहमानों के जल-जलपान के लिये काफी थे। कोई वृहद् आयोजन करने की अभी न तो योजना थी और न स्थिति।

प्रथम नवरात्र को मैंने भी मालकिन के साथ व्रत रखा। थोड़े-बहुत ज़रूरी सामान नये मकान में पहुँचा दिये गये। अपराह्न तीन बजे से कथा आरम्भ होनी थी। सारी तैयारी पूरी हो चुकी थी। इस शहर में अपना कोई सगा-संबन्धी तो था नहीं, लेकिन दो-ढाई बजते-बजते अड़ोस-पड़ोस के पचीसों लोग, जिनमें अधिकतर महिलाएँ थीं तथा दफ्तर के कुछ सहकर्मियों के परिवार नये घर में इकठ्ठा हो गये। मेरे दो-तीन अंतरंग साथी भी आज छुट्टी लेकर मेरी सहायता में लगे हुए थे। हँसी-खुशी का माहौल था। दोनों बेटे भी खूब उत्साहित थे। एक लाउड-स्पीकर लगवाकर कुछ फिल्मी गानों के रिकार्ड बजाये जा रहे थे। बाहर रंगीन बल्बों की झालरें लटकाकर अभी से जला दी गई थीं। अपने मकान में अभी बिजली तो लगी न थी, किन्तु सजावट वाले ने परम्परानुसार सीधे खम्भे से तार खींचकर जोड़ दिया था और मकान जगमगा उठा था। नियत समय पर पंडित जी पधारे और कथा का कार्यक्रम आरम्भ हो गया। पंडित जी संस्कृत श्लोकों की व्याख्या सहित रटी-रटायी मिश्रित भाषा में सरपट सस्वर कथा बाँच रहे थे। महिलाएं बड़ी आस्था और तल्लीनता के साथ सुन रही थीं। पुरुष-वर्ग तो महज औपचारिकता वश वहाँ बैठा गप-शप में मशगूल था। देश और प्रदेश के राजनीतिक माहौल के बारे में ज़्यादा चर्चा चल रही थी। जब पंडित जी अध्याय की समाप्ति पर शंख फूँकते तो लोग बरबस हाथ जोड़कर सिर नवा लेते थे। धीरे-धीरे सत्यनारायण भगवान की कथा समाप्त हुई। उसके पश्चात पंडित जी ने गृह प्रवेश के उपलक्ष्य में भी कुछ श्लोक-पाठ आरम्भ कर दिया।

अभी यह कार्यक्रम समाप्त भी नहीं हुआ था कि बाहर से ढोलक की कर्णभेदी थापों के साथ निरन्तर तालियों के तालों और हिजड़ों के समवेत मर्दाने गर्दभ स्वर में गाने की आवाज़ कानों में पड़ी। मैंने सोचा कि घर में छोटा-मोटा आयोजन देखकर इन हिजड़ों को ज़रूर कुछ गलत-फहमी हो गई है। मैंने बाहर निकलकर कहा, "अरे भाई, यहाँ कोई बच्चा थोड़े ही पैदा हुआ है जो लाव-तश्कर के साथ आकर नाचना-गाना शुरू कर दिया। नये घर में आने के उपलक्ष्य में कथा-पूजा थी।"

मेरी बातें सुनकर एक अधेड़ उम्र का खोजा तालियाँ बजाता मटकता हुआ आगे निकला और तपाक के साथ बोला,"हाँ-हाँ हुजूर, हमें भी पता है। लेकिन जरा हमलोगों की भी अरज-गरज तो सुन लो बाबू जी।"

मैंने सोचा शायद यह लोग भगवान के प्रसाद के साथ मुँह मीठा कराने या गृह-प्रवेश के उपलक्ष्य में भोजन कराने की बात कहेंगे। संयोग से मेरे दोनों बेटे दूर-दराज के गाँव में

पैदा हुए थे जो बृहन्नला समुदाय की पहुँच से बहुत दूर था। लिहाजा मैं उनकी ठनगन से बिल्कुल वाकिफ न था। झट से कह दिया, "हाँ-हाँ, बोलो, क्या कहना चाहते हो?"

खोजा उस्ताद ने किसी मँजे हुए परिपक्व नेता की तरह कहना शुरू किया, "खाते-कमाते लोगों के घरों में अब बच्चे कहाँ पैदा होते हैं हुजूर। सरकार तो एक तरफ से सबको बधिया कराकर नपुंसक बनाने पर तुली हुई है। 'एक-दो और बस' का फतवा जारी करके सरकार ने हम हिजड़ों के पेट पर सीधे लात मारी है। देश का सत्यानाश कर डाला। सरकारी फरमान से बेखबर जिन बेचारों के घरों में बच्चे पैदा होते हैं, वे तो खुद अपनी ही दो जून की रोटी के लिये मुहताज हैं। उनसे भला हम क्या उम्मीद कर सकते हैं। आखिर हम हिजड़े खुद तो अपना कुनबा बढ़ाते नहीं। आप ही लोगों के घरों में पैदा होकर निकलते हैं हम। तो फिर हमारी रोटी, कपड़े और मकान का इंतजाम करना भी तो आप ही लोगों का फर्ज है। आप जैसे भले लोगों के घरों में बच्चा पैदा होने के इंतजार में तो हम लोग भूखों मर जायेंगे हुजूर। दलितों, हरिजनों और पिछड़ों के लिये सरकार ने नौकरियों में कोटा लागू कर दिया है। लँगड़े-लूलों को भी नौकरी मिल जाती है। बच गये हम हिजड़े। हमारे जीने-खाने के लिये क्या इंतजाम किया है सरकार ने? भगवान के बनाये और आप ही लोगों के घरों में जन्मे हम हिजड़ों ने आखिर कौन सा गुनाह किया है हुजूर कि हमारा पुरसां-हाल कोई नहीं। समाज में भी हमें कोई काम नहीं मिलता। आखिर हम जियें कैसे बाबू जी? क्या सरकारी ओहदों पर बैठे लोगों के घरों में हिजड़े पैदा नहीं होते? क्यों नहीं सरकार उन्हें पैदा होते ही गला घोंट देने का कानून बना देती? अगर ऐसा करने की हिम्मत सरकार के पास नहीं तो हम लोगों के जीने-खाने का बन्दोबस्त तो करना चाहिये। हमारी पंचायत ने अब मजबूर होकर अपना दायरा बढ़ाने का फैसला किया है हुजूर। महज बच्चे पैदा होने के इंतजार में अब हमारी जिन्दगी नहीं कट सकती। इसीलिये शादी-ब्याह और गृह-प्रवेश जैसे मौकों पर भी हम आपकी खिदमत में हाजिर होने लगे हैं। जहाँ लाखों रुपये खर्च करके आपलोग शादी-ब्याह करते हैं या मकान बनवाते हैं, वहीं अगर हम हिजड़ों के गुजर-बसर के लिये भी कुछ नजर कर देंगे तो क्या फर्क पड़ेगा आपको?"

खोजा सरदार की तर्क संगत बातें सुनकर मैं भौचक्का रह गया। घर में जुटे चार लोगों ने भी उनके प्रति हमदर्दी जताते और उनकी बातों का समर्थन करते हुए कहना

शुरू किया, "ठीक ही तो कहते हैं बेचारे। आखिर हमारे ही आपके आगे हाथ पसार कर तो उनकी जिन्दगी चलती है। और कौन सी कमाई धरी है उनकी? इन्हें कुछ दे-दिलाकर पिण्ड छुड़ाइये बाबू साहब।"

सब के दबाव के आगे झुकने के सिवाय और कोई रास्ता न था। मजबूरन मैं अन्दर जाकर इक्यावन रुपये ले आया और खोजा सरदार के सामने पेश कर दिया। लेकिन इक्यावन रुपये की अदनी सी रकम देखते ही हिजड़े बिदक उठे और ताल ठोंक-ठोंक कर कूल्हे मटकाते हुए चिल्लाने लगे, "आय-हाय, इक्यावन हजार की तो ईटें ही लग गई होंगी नये मकान में। हमें इक्यावन रुपये दिखाते हो हुजूर। एक जून का भोजन भी तो नहीं हो सकेगा इतने में। कम से कम इक्यावन सौ तो हमें मिलना चाहिये बाबूजी और निशानी के लिये एक बनारसी साड़ी और अँगूठी भी।" कहते हुए सभी हिजड़े ढोलक की थाप पर खूब कमर मटका-मटका कर तालियाँ बजाते हुए हमारी लानत-मलामत करने लगे।

मैं शर्मिन्दा होकर फिर घर के अन्दर भागा और इक्यावन में सौ की एक और नोट जोड़कर ले आया। लेकिन एक-सौ इक्यावन की बढ़ी हुई रकम को भी हाथ लगाने के बजाय हिजड़ों का ताल ठोंकना, कूल्हे मटकाना और तरह-तरह के भद्दे व्यंग्यों की बौछार करना जारी रहा। इसी बीच अच्छे नाक-नक्श वाले एक कम उम्र के हिजड़े ने जब अपना साया जाँघों तक ऊपर खिसकाकर अश्लील किस्म की फबतियाँ कसनी शुरू कीं तो मैं समझ गया कि इन हिजड़ों में शर्म-हया नाम की कोई चीज तो होती नहीं, अगर गैरत की सीमा पार कर गये तो मेरी ऐसी की तैसी करके धर देंगे और कुछ ज्यादा ही बदमजगी हो जायेगी। उनसे पिण्ड छुड़ाने का और कोई रास्ता न देखकर मैं एक बार फिर घर के अंदर भागा और इस बार पूरे पांच सौ एक रुपये लाकर खोजा सरदार के सामने पेश कर दिया। रुपये तो उसने किसी तरह मटकते हुए थाम लिये लेकिन ढोलक की थाप पर उनका नाचना गाना और मटकाना कम न हुआ। खोजा सरदार फिर बोला, "हूजुर, एक बनारसी साड़ी और अँगूठी और पहना दो, वहीं तो आपकी निशानी रहेगी। फिर हम बधैया गाकर चले जायेंगे।"

मुझे लगा कि ये हिजड़े अब पूरी तरह बेइज्जत करने पर आमादा हैं। मैंने जाकर मालकिन को सारी स्थिति बतलायी तो उन्होंने अपनी एक धराऊँ बनारसी साड़ी निकालकर सामने रख दी। जब उसे भी लेजाकर हिजड़ों के सरदार के हवाले किया तो वह फिर अदा के साथ मटकता और ताल पीटता हुआ बोला, "आय-आय, मेहरिया की उतारन यह पुरानी साड़ी।" उसके साथियों ने भी स्वर में स्वर मिलाया। इसी बीच कम उम्र वाले हिजड़े ने साड़ी खींचकर अपनी कमर में लपेट ली। खोजा सरदार बोला, "अच्छा, एक अँगूठी और पहिना दो मालिक, हमारी मुराद पूरी हो जायेगी।"

शेष पृष्ठ 36 पर..........

कहानी

बिन्दा

❑ गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव

बिन्दा आज सुबह से ही बहुत व्यस्त है। अम्मा की तेरहवीं है। बहुत सारे काम पड़े हैं। कई मेहमान आ गये हैं और कुछ आने वाले हैं। दोपहर में ही ब्रहमभोज आरम्भ हो जायेगा जो 3-4 बजे तक चलेगा। उसी के बाद शाम के भोज की सभी तैयारियाँ, हलवाई, नौकर चाकर, सभी आ गये हैं। घर के पिछवाड़े के मैदान में एक बड़ा चूल्हा जला दिया गया है, उस पर चढ़े हुए कड़ाहे में मिठाई बन रही है। थोड़ी दूर पर एक दूसरा चूल्हा केवल शुद्ध भोजन के लिए जलाया जा रहा है जिस पर ब्रह्म भोज का भोजन बनाया जाएगा।

बिन्दा क्या करे? दम मारने की भी फुरसत नहीं। सभी उसे ही बुलाते हैं- कानपुर वाले जोगी दादा, बनारस वाले मड़ाले भैया, बरौनी वाले डाक्टर भैया, अयोध्या वाले बड़े साहब और लखनऊ वाले छोटकऊ भैया। कोई पानी मांगता है, कोई कमरे की सफाई करवाना चाहता है किसी को चाय चाहिए, किसी को सिगरेट व माचिस। बिन्दा फिरकी की तरह दौड़ रहा है और सुबह से ही डाँट खा रहा है।

बिन्दा क्या करे? दम मारने की भी फुरसत नहीं। सभी उसे ही बुलाते हैं- कानपुर वाले जोगी दादा, बनारस वाले मड़ाले भैया, बरौनी वाले डाक्टर भैया, अयोध्या वाले बड़े साहब और लखनऊ वाले छोटकऊ भैया। कोई पानी मांगता है, कोई कमरे की सफाई करवाना चाहता है किसी को चाय चाहिए, किसी को सिगरेट व माचिस।

जोगी दादा ने तो कह ही दिया-
"देखता हूँ बिन्दा बिल्कुल निठल्ला हो गया है, इसका कुछ करना होगा।"
वही पास बैठी कानपुर वाली भाभी ने हाँ में हाँ मिलाई और बोली-
"हम लोगों के यहाँ न रहने से यह बहुत बिगड़ गया है, हम लोग यहाँ होते तो इसे एक दिन में ठीक कर देते।"

बिन्दा सोचता है यदि वे यहाँ इस घर में रहते होते तो क्या यह घर हर तरह वीरान होता। यह बात अलग है कि तब शायद वह वहाँ नहीं रह पाता, हालाँकि इस घर को छोड़ कर जाने की बात वह अपने मन में एक क्षण के लिए भी नहीं ला पाता क्योंकि इसी घर में अम्मा थी, वहाँ उनके प्राण गये थे और यहीं से उनकी अर्थी उठी थी।

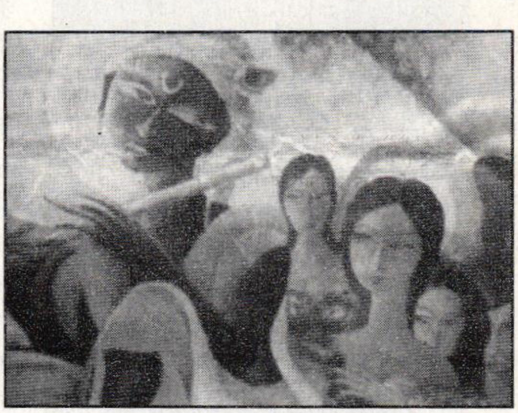

अम्मा-बिन्दा की आँखें छलछला आती हैं। जन्म से ही वह अम्मा के साथ रहता चला आ रहा है। अम्मा-यानी इस घर की मालकिन, जोगी दादा और उनके चारों भाइयों की माँ। तब बाबू भी जीवित थे। बिन्दा का पिता हरखू स्वयं इस घर में उस समय से काम कर रहा था जब उनका जन्म भी नहीं हुआ था। अम्मा की बड़ी बेटी बिटोल के विवाह के समय पच्चीस रुपये महीने सूखे पर वह रखा गया था। उस समय ये पाँचो लड़के स्कूल कालेज में पढ़ा करते थे। उसी घर में बिन्दा ने जन्म लिया था और जब वह केवल दो वर्ष का था तभी उसकी माँ हैजे की बीमारी में चल बसी थी। तब से वह अम्मा की ही गोद में पला बढ़ा और आज बीस वर्ष का हो गया है।

अम्मा नहीं रही और आज उन्हीं की तेरहवीं है और उसी के साथ बरसी थी। बिन्दा अपनी आँखें पोंछ कर चुपचाप आगे बढ़ जाता है। जी चाहा एक बार अपनी कोठरी के कोने में जाकर भोकर भोकर कर रो ले, लेकिन इतना समय कहाँ। सभी कुछ उसे ही करना होगा। लखनऊ वाले छोटकऊ भैया तभी भाभी के साथ दिखाई दिये। हाथ में कुछ पैकेट लिए हुए। बिन्दा को पैकेट उठाकर ले चलने का इशारा करते हुए जोगी दादा की ओर बढ़ गए। बिन्दा ने दौड़कर पैकेट ले लिया और जोगी दादा के कमरे में बिछी हुई दरी पर रख दिया और कोने में चुपचाप खड़ा हो गया। लखनऊ वाली भाभी ने पैकेट खोला और उसमें से एक रेशमी साड़ी निकाला। दूसरे पैकेट में से पेटी कोट, ब्लाउज और ऊनी शाल निकाला। भैया ने जेब से एक छोटा पैकेट निकाला और उसमें से कान के टाप्स निकाले और जोगी दादा वाली भाभी को दे दिये। भैया बोले --

" रेशमी साड़ी अम्मा को बहुत पसन्द थी। उसी से मिलता जुलता ऊनी

शाल भी ले लिया है, अम्मा खुश हो जायेंगी।"

भाभी बोली–

"कान में टाप्स अम्मा जी हमेशा पहने रहती थी, इसीलिए टाप्स ले आयी हूँ, उनकी आत्मा को शान्ति मिलेगी।"

बिन्दा के मन पर जैसे कोई बरछी मार रहा है। सोचता है क्या सचमुच ही यह सब अम्मा तक पहुँचेगा? उसे याद है जब 12 दिनों पहले अम्मा अचानक चल बसीं थी। एक उल्टी हुयी थी और प्राण पखेऊ गायब। उस समय सभी बेटे बाहर थे। उनके आने की प्रतीक्षा करनी ही थी। बिन्दा ही पड़ोसियों तथा अन्य लोगों के साथ अम्मा के शव के पास बैठा रहा था। सुबह तक पाँचों बेटे और बड़ी बेटी आ गये थे। सबसे पहले लखनऊ वाले भैया और भाभी पहुँचे थे। रोने-धोने के बाद जो काण्ड हुआ था उसे बिन्दा अभी भी नहीं भूला है। अम्मा के कानों में सोने के टाप्स थे। दोनों में इशारों में कुछ बात चीत हुई थी और इसके बाद दोनों टाप्स उतारने का क्रम आरम्भ हुआ था। रात भर रखे रहने से शव अकड़ गया था। इसलिए काफी कठिनाई हुई फिर भी किसी तरह खींच-खींच कर टाप्स निकाल लिए गए थे। शव तो कुछ बोलता नहीं किन्तु बिन्दा का मन कचोट कर रह गया था।

बिन्दा जानता है पाँच वर्षों पहले बाबू के न रहने पर अम्मा बिल्कुल टूट सी गई थी, उस समय भी उनके पाँचों बेटों में से किसी ने भी उनके आँसू पोछने का प्रयास नहीं किया था। अम्मा केवल बिन्दा के पास ही बैठकर निरन्तर रोया करती थी। बेटों ने बेमन से अम्मा को अपने पास ले जाने का प्रस्ताव रखा था। लेकिन अम्मा घर नहीं छोड़ना चाहती थी इसी से उन्होंने टाल दिया था। इसके बाद बिन्दा ही अम्मा के साथ साए की तरह रहता चला आया है। घर का सारा काम करना, सफाई करना, खाना बनाना, अम्मा की देख भाल करना और उनकी पेंशन के रुपये निकालवाना आदि आदि। धीरे-धीरे घर में पैसों की तंगी बढ़ती गयी, बेटों तो पाँचों कमा रहे थे, लेकिन उनकी अपनी घर गृहस्थी थी, बाल बच्चे थे, इस मंहगाई में अम्मा के लिए कुछ पैसे अलग कर पाना कठिन हो रहा था। हाँ, अम्मा बेटों के साथ रहतीं तो बात और थी। बिन्दा सोचता है-अम्मा क्यों नहीं चली गयीं बेटों के पास? उसे याद है एक दिवाली पर लखनऊ वाले छोटकऊ भैया भाभी अम्मा के साथ यहीं पर थे। जब बाबू थे तब दीवाली के दिन अम्मा के लिए एक

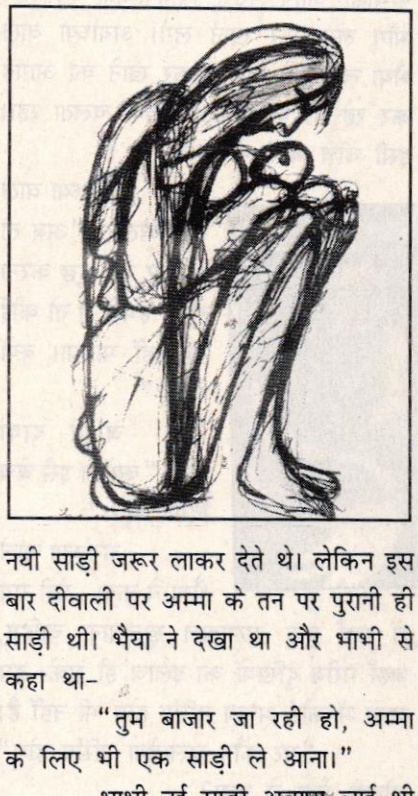

नयी साड़ी जरूर लाकर देते थे। लेकिन इस बार दीवाली पर अम्मा के तन पर पुरानी ही साड़ी थी। भैया ने देखा था और भाभी से कहा था–

"तुम बाजार जा रही हो, अम्मा के लिए भी एक साड़ी ले आना।"

भाभी नई साड़ी अवश्य लाई थी पर केवल अपने लिए और माँ को अपनी पुरानी साड़ी तह लगा कर चुपचाप पकड़ा दी थीं। भैया कुछ नहीं बोले थे, अम्मा भी चुप रह गयी थीं।

"यहाँ खड़ा खड़ा क्या कर रहा है? जा, घर में कितना काम पड़ा है। निकम्मा कहीं का।"

बनारस वाली भाभी की कर्कश आवाज ने बिन्दा की विचारधारा तोड़ दी और वह भाग कर बाहर आ गया। सामने बनारस वाले मंझले भैया भाभी के साथ खड़े बातें कर रहे थे–

"मैं सोचता हूँ कि यहाँ के कॉलेज में अम्मा के नाम से एक ट्रस्ट कायम करवा दूँ। उसके पैसों के गरीब छात्रों को वजीफा बाँटा जा सकता है।"

भाभी बोलीं–

"बिल्कुल ठीक कह रहे हैं आप। अम्मा पढ़ी लिखी नहीं थी तो क्या हुआ? उनके नाम पर गरीब बच्चों की पढ़ाई हो जायेगी और हमारे परिवार का नाम भी जिन्दा रहेगा।"

बिन्दा को फिर झटका लगता है। जब वह दस साल का था, तभी अम्मा ने बाबू से उसे स्कूल भेजने को कहा था, बाबू राजी हो गये थे। बनारस वाले भैया उस समय वहीं पढ़ते थे उन्हें जब इस बात की खबर हुई तो उन्होंने इसका कड़ा विरोध किया था–

"पढ़ लिख कर यह अफसरी करेगा या हमारे घर की नौकरी।" बात आयी गयी, खतम हो गयी थी और बिन्दा स्कूल नहीं जा सका था।

तभी पश्चिम वाले कमरे से कुछ शेर सुनाई पड़ता है। बिन्दा भाग कर जाता है। बरौनी वाले डाक्टर भैया भाभी को पकड़कर सम्हालने का प्रयास कर रहे थे। बिन्दा ने सुना था कि छह माह से उन्हें पागलपन के दौरे पड़ने लगे थे और वैसी दशा में वे बहुत उग्र रूप धारण कर लेती थीं। भाभी चिल्ला रही थी और अपने कपड़े व सामान उठा उठा कर फेंक रही थीं। उनकी बेटी उन्हें चुप कराने का प्रयास कर रही थी। बिन्दा को देखते ही डाक्टर भैया बोले- "बिन्दा एक डाक्टर को बुला कर ले आ, इन्जेक्शन देना होगा।"

बिन्दा भागता है डाक्टर बुलाने। रास्ते भर सोचता जाता है-अम्मा भी तो इसी तरह बाबू के न रहने के कुछ वर्षों बाद अर्ध विक्षिप्त हो गई थीं और एक दिन जब वह बहुत उग्र हो गई तब डाक्टर भैया इसी घर में थे, उन्होंने पहले डाँटा फटकारा गला फाड़ फाड़कर, और जब कोई असर नहीं हुआ तो क्रोध में भर कर अम्मा को एक रस्सी से खाट में बाँध दिया था और

स्वयं घर से बाहर चले गये थे। काफी देर बाद जब अम्मां स्वयं ही शान्त हुयीं थी तब बिन्दा ने ही उन्हें खोला था। उनके हाथ पैर और गले में पड़े हुए रस्सी के लाल निशान अभी भी उसके मन को रुला जाते हैं।

बिन्दा डाक्टर ले आया और इन्जेक्शन दिये जाने के बाद भाभी सो गई। डाक्टर भैया चुप-चाप बैठ गये।

दोपहर हो गयी पर बिन्दा को नहाने धोने का भी समय नहीं है। ब्रह्मभोज प्रारम्भ हो गया है। दान में सुन्दर चारपाई, गद्दा, लिहाफ, साड़ी, शाल, आभूषण, रुपये पैसे सभी दिये गये हैं और पाँचों बेटों ने आशीर्वाद पाया।

"चिरंजीवी भव! जैसे भाग्यशाली माँ थी वैसे ही योग्य बेटे। धन्य हो।"

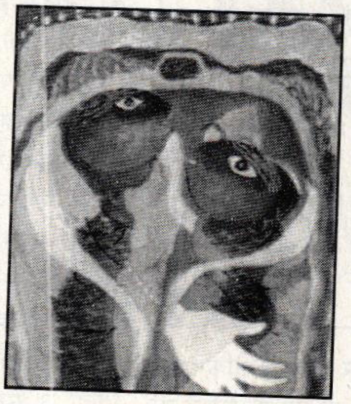

जो सारे कपड़े और आभूषण दिये गये हैं उन्हें पहन कर महराजिन चारपाई पर बैठे गई हैं। बेटों के बाद बहुयें उनके चरण स्पर्श कर रही हैं। बिन्दा को लगता है अम्मा स्वयं बेठी हैं, थोड़ी देर के लिए वह सचमुच मान लेता है कि वह अम्मा ही हैं और भहरा कर उनके चरणों में गिर कर रोने लगता है-

महराजिन कहती हैं-

"उठ उठ रो मत।" और पूछती हैं- "छोटा बेटा है क्या?" धीरे से कानपुर वाली भाभी कहती हैं --

"हमारे घर का नौकर है।"

बिन्दा सोचता है काश अम्मा यहाँ होती और यह सब देख सुन पाती। जब वह छोटा था अम्मा कहा करती थी कि अच्छे लोग मरने के बाद आसमान में तारे बन जाते हैं और अपने बच्चों को ऊपर से ही देखते रहते हैं। क्या अम्मा भी यह सब देख कर खुश हो रही होंगी? बिन्दा मन ही मन आसमान की ओर मुँह करके चढ़े सूरज को प्रणाम करता है।

धीरे-धीरे शाम हो गयी। भोज की अब लगभग सारी तैयारी हो चुकी है। न्योते वाले आने लगे हैं-पंगत बिछायी जा रही है। सब बेटे नाते रिश्तेदारों और परिचितों से मिल रहे हैं। किसी ने कहा "बड़ा भव्य आयोजन है। बेटे हों तो ऐसे हों। आजकल कौन ऐसा करता है।" किसी और ने कहा "संस्कार वाली माँ के संस्कार वाले बेटे होते ही हैं। सत्जुगी बेटे हैं।"

भोजन के लिए पंगतें बैठा दी गई हैं। पत्तल में सब्जी, आचार, रायता, पूड़ी, कचौड़ी आदि परोस दिया जाता है, लोग भोग लगा कर खाने लगे। अयोध्या वाले भैया लोगों के पास जाकर खाने का आग्रह कर रहे हैं। कार्यक्रम देर तक चलता रहा। इसी बीच बातें भी चल रही हैं-

अयोध्या वाले भैया बोले - "अब तो इस घर का कुछ करना होगा। हममें से तो कोई रह नहीं पायेगा। क्यों भैया?"

जोगी दादा बोले-"क्यों न इसे बेच दिया जाये।"

अयोध्या वाले भैया ने कहा- मेरी राय में यहाँ एक अस्पताल खुलवाना चाहिए, जहाँ गरीब दुखियों का इलाज हो सके। इस शहर में कोई अच्छा नर्सिंग होम भी नहीं है।

"पर कौन चलायेगा नर्सिंग होम" छोटके भैया ने पूछा?

"मेरा साला। डाक्टरी पास इसके आया है वही चलायेगा। मैं उससे बात कर लूँगा।"

बिन्दा को फिर झटका लगता है। तब बाबू भी जीवित थे, अम्मा को हल्का-हल्का बुखार रहने लगा था, साथ में खाँसी भी। डाक्टरों को शक हुआ कि शायद क्षय रोग हो। बस उसी दिन से अयोध्या वाले भैया जो उन दिनों वहीं रहा करते थे बिल्कुल सावधान हो गये। भाभी भी अम्मा की परछाई से दूर भागने लगीं। एक रात अम्मा को उल्टी हुई, बाबू घर पर नहीं थे। भाभी अपने कमरे की सिटकिनी बन्द कर बैठी रहीं पर बाहर नहीं आई, और बच्चों को भी बाहर निकलने से रोक दिया। बिन्दा और उसके पिता ने ही अम्मा को सम्भाला था।

तभी लखनऊ वाले छोटकऊ भइया बोले- "नहीं भाई! मैं इससे सहमत नही हूँ। अच्छा हो इसे बेच ही दिया जाय और इसके पैसे को बराबर बराबर बाँट लिया जाए।"

बातें चल रही हैं नफा नुकसान की, यश-मान की, पर बिन्दा सोचता है इन सबके बीच अम्मा कहीं नहीं हैं और अम्मा नहीं हैं तो वह भी नहीं है। वह यहाँ रह पायेगा? बाबू की मृत्यु के छह महीने के भीतर ही बिन्दा का पिता भी चल बसा था। अन्तिम क्षणों में अम्मा ही पास बैठी थी और जब पन्द्रह-सोलह साल का बिन्दा दहाड़ मार कर रोने लगा था अम्मा ने ही उसे गले से लगाकर चुप कराया था-

"मैं हूँ न बेटा - क्यों रोते हो?"

अम्मा नहीं हैं और अम्मा के इस घर का वजूद भी अब मिटने को है इसीलिए बिन्दा के यहाँ होने का कोई मतलब नहीं है।

झटके से बिन्दा कुछ निश्चय करता है और सारा काम छोड़कर अपनी कोठरी की ओर भागता है ताकि वह जल्द से जल्द यहाँ से कहीं दूर चला जाए, पीछे से "बिन्दा..... बिन्दा!" कोई पुकारता है किन्तु वह कोठरी में पहुँचकर ही दम लेता है। ताखे पर रक्खा अपना अँगौछा और दीवार पर टँगी अम्मा की तस्वीर एक झोले में डालता है और कंधे पर डालकर निकल पड़ता है पिछवाड़े से दक्षिण वाली बाड़ की ओर जहाँ से एक रास्ता स्टेशन की ओर जाता है। उसे लगता है जैसे अम्मा उसे ही अँधेरे में बुला रही हैं और उसके पाँव बढ़ने लगते है उसी रास्ते पर। ❑

संपर्क- क्वार्टर सं० सी-5,
सुन्दरम फ्लैट्स, एल० डी०
इंजीनियरींग कॉलेज, हॉस्टल
कैम्पस, नवरंगपुरा, अहमदाबाद

काव्य-कुँज

जंगल ही संस्कृति है

❑ नलिनीकान्त

जंगल सिर्फ पेड़ों का सघन व्यूह नहीं
वह आदि प्रकृति है,
हाथियों, हिरणों, व्याघ्रों की
पावन सनातन संस्कृति है।
जंगलों के मांगल्य को आदमी उजाड़ रहे हैं
तो हाथी पगला रहे हैं।
आदमी को पटक पटक कर
हाथी रौंद और कुचल रहे हैं।

प्रतिशोध की उग्र भावना उमड़ी है
किन्तु फिर भी हाथियों की प्रज्ञा दुरुस्त है।
गाय, बकरी, भेड़, कुत्ते को
हाथी कतई नहीं रौंदते हैं
केवल चतुर धूर्त्त उजाड़ आदमी को
ढूंढ़ कर पटकते और मुक्ति देते हैं।

संपर्क: अंडाल, प. बंगाल-713321

उजियारा

❑ सत्यदेव संवितेन्द्र

जब भी दीपक जला, सभी ने
उजियारे को नमा सदा
दिनकर की यह साख जगत को
देती आई क्षमा सदा
क्षणभंगुर इस जीवन को अब
तम से मुक्त कराना है
हमको अपने करसंपुट में
उजियारा भर आना है।

महावीर, गौतम, गांधी को
जीवन में स्वीकार करें
हिंसा को रोकें, सांसों पर
न हों कभी ममकार करें
भेद, स्वार्थ, शोषण समाप्त हो
बाती का यह कहना है
जीवन-शुचिता, समता की
पावन धारा में बहना है।

अंधकार के हर स्वरुप के
सम्मुख तो आना होगा
दीप-साक्षी में भारत मां को
अंतस में ध्याना होगा
सुनो शांख, यह बाती का
भाव भरा अभिनंदन है
हम सादर, सस्नेह आपका
करते शत्-शत् वंदन हैं।

संपर्क: 7, सिंधुनगर, सरदारपुरा,
जोधपुर-342003(राज.)

तमाशा

❑ ऋतुराज

जिन्दगी तू22 ही बता तेरे पहलू में अब रखा ही क्या है
वक्त के बागीचे में कड़वे फल के सिवा चखा ही क्या है

चंद टूटे हुए सपने, एक धुंधली सी परछाई
इन बेजार संगीतो साज़ के सिवा,
तेरे दामन में अब बचा ही क्या है।

आग लगी है मेरे मकां के हर दरवाजे पर
ज़रे ज़रे में दहकती है मेरी तस्वीर
जब सीने में मेरे दर्द होता ही नहीं,
तो ये हंगामा इस शहर में मचा ही क्या है।

हर एक मोड़ पर नजर आती चंद टूटी हुई तकदीर,
हर शक्ल दिखाती है एक बिखरी हुई तस्वीर,
जब तेरे से सम्भाले नहीं सम्भलता
तो एक खुदा तूने ये तमाशा रचा ही क्या है।

संपर्क: c/o डॉ. प्रो. मधु वर्मा
B-204, चारमीनार अर्पाटमेन्ट
रोड न.-11, राजेन्द्र नगर, पटना-800016

हाइकु

बुझती नहीं
इंसानियत की लौ
कभी हिंसा से

बैठ गया मैं
एक तुफान लिए
शब्द बांधने

हैवानियत
का भूत सवार था
बुश - टोनी को

❑ सिद्धेश्वर

काव्य-कुंज

कामरेड सुनीता चतुर्वेदी, तुमने आत्महत्या क्यों की?

❑ डॉ. रति सक्सेना

तुम
कितनी कामरेड
कितनी सुनीता
कितनी चतुर्वेदी रहीं
अच्छी दोस्त हमेशा रहीं
तुम्हारी दोस्ती भी तभी समझ पाई
जब तुम्हारी आत्महत्या की खबर आई!

उन दिनों तुम्हें जिन्दगी से प्यार था-जब
ब्राह्मण पिता और मुसलमान मां के
प्रेम-प्रतीकों के लिए सेरों रोटी थोपती
घर-आंगन बुहारती
बाल-घरैतिन बनी
बुढ़ाते शेरे-पिता की खौखियाहट
चुग्गा बटोरती मां की खिसियाहट
भाई-बहनों की झल्लाहट
सभी से जूझती लाल सलाम को
'जिन्दाबाद' में अभिमंत्रित करती हुई
चौका-बासन और पढ़ाई के साथ-साथ
वक्त निकाल लेतीं मीटिंग और पिकेटिंग
के लिए....

तुमने तब भी जिन्दगी को नहीं नकारा
जब
किसी सपने ने तुम्हें हौले से जगाया
तुम्हारी लटों को अपनी अंगुली में लपेटा
बोरौनियों पर उंगली फिरा
सपना बन गया

हर हालात में तुम कामरेड रहीं
मुट्ठियां बांधे आक्रोश उगलती रहीं
तुम तड़प कर बयान करतीं
कालाबाजारी और गरीबी के संबंधों का
तुम मुझे समझातीं
जवानी के सपनों की नाकामयाबी
संस्कृति के खोखलेपन को

तुम्हें डर था कि मजदूरों को सत्ता नहीं
मिली तो
देश भर मे यातना शिविर खुल जाएंगे
तुम फुत्कार उठतीं।

जब राशन की दुकान पर धरने को
तितिर-बितिर करने
पुलिस जांघों में डंडा घुसेड़ती
जब किताब घर के रामडे मालिक
पोते का जेनेऊ धूमधाम से मनाते
जब तुम्हारा अपना भाई
नए घर के गैराज में हक जमाने से पहले
नारियल फोड़ता।

तुम चिढ़ उठतीं
मेरी श्रृंगारप्रियता से
मेरे सपनों और कमजोरियों से
फिर भी न जाने क्यों
मेरी उंगलियों के कसाव को झेलती
रहीं?

मेरे उपहास का निशाना बनती रहीं?
कहीं ऐसा तो नहीं कि तुम्हारे भीतर
सुनीता नहीं, मैं थी
कहीं गहराई में तुम
मुझ सी स्वप्न-प्रिय
मुझ सी बुजदिल थीं
तुम्हारे सपने में क्या था
यह तो नहीं जानती पर
एक सवाल मेरे जेहन में हमेशा
खदबदाता रहा
व्यवहार में तुम 'चतुर्वेदी' नहीं रहीं
वैदिक मंत्रों को घोटते वक्त भी नहीं
सूत्र साहित्य पर शोध करते वक्त भी
नहीं
लड़कों को संस्कृत पढ़ाते वक्त भी नहीं
मांसाहार से परहेज करते वक्त भी नहीं
तुम मजबूत थीं
यथार्थजीवी थीं
सच्ची कामरेड थीं
फिर भी तुमने आत्महत्या की
वह भी
रूस के बिखरने पर नहीं
मस्जिद के शीलभंग पर भी नहीं
लाल झंडे के रंग बदलने पर भी नहीं।

सुनीता!
सारे जवाब तुम्हारे साथ दफन हो गए
फिर भी मैं राख कुरेद
तुम्हारी बुजदिली के कारणों को खोज
रही हूं
क्या तुम्हें बेहद याद आने लगा था
वह साथी कामरेड
तुम्हारे सपनों को जगा
ब्याह रचा लिया जिसने व्यापारी की
बेटी से?
या फिर तुम सपनों के टूटने से टूट गई?

अब भी नहीं समझ पा रही हूं कामरेड
कि
तुमने आत्महत्या कर ली
क्यों मैं जिन्दा हूं
सपनों की तमाम किर्चियों के साथ?.......

संपर्कः ब्यूरो प्रमुख, विचार दृष्टि, केरल
K.P-9/624, Vaijyant
Chittikunne Medical
College Post.
Thiruvantpuram-694011
Kerala

बालक मन : बे-लगाम

❑ डॉ० शाहिद जमील

लेखक डॉ० शाहिद जमील ने सुप्रसिद्ध साहित्यकार स्व० रामदयाल पाण्डेय के समग्र व्यक्तित्व को गुरुजी और बालक की बातचीत के माध्यम से समेटने के क्रम में स्व० पाण्डेय की पारिवारिक स्थिति और आज के परिवेश में बनते-बिगड़ते रिश्ते पर एक पैनी दृष्टि डाली है जो मेरी दृष्टि से साहित्य सृजन में एक अपने ढंग का अनूठा प्रयोग है। आप स्वयं इसका अवलोकन करें।

– संपादक

"क्या हुआ?"

"डोर टूटी बाल्टी कुएँ में गिर गई।" बालक ने दुखी स्वर में गुरूजी की जिज्ञासा दूर कर दी।

"इसमें विचलित होने की बात क्या है? बाल्टी तो कुएँ में ही है ना।"

"परन्तु गुरुजी, डोर-बाल्टी का सम्बन्ध टूट गया ना? ---कष्ट नहीं होगा?"

"होगा। कष्ट का होना स्वाभाविक है, अपितु कष्ट उसे उतना ही अधिक होगा, जिसे जितना लाभ होगा।" सामने खड़े बालक की तरकशी आँखों में, जिज्ञासा के तीरों को देख गुरुजी ने उत्साहवर्द्धक नरम स्वर में पूछा-

"ज्ञानार्जन की इच्छा प्रबल है?"

जिज्ञासु बालक कम समय में अधिक जानना चाहता है, यही सोचकर उत्तरपूर्व ही दार्शनिक मुद्रा में वे बोले- "समय को गुरु ज्ञानी, परिस्थितियों को घाटी के काठ-सेतु और संकल्प को संघर्षमयी जीवन-यात्रा का संबल मान कर, समय को समय दो, परिस्थितियों से लोहा लो तथा जीवन-यात्रा से प्राप्त ज्ञान-अनुभव को मन-मस्तिष्क में रखते जाओ।---ज्ञान-चक्षु स्वतः खुल जाएंगे।"

बालक को लगा कि गुरुजी की बातें गणितीय फार्मूले हैं, जिन्हें समझना कठिन होता है, परन्तु समझ गए तो बीस के पहाड़ा जैसे सरल लगते हैं। जीवन-दर्शन की बातें मेरी समझ में अभी उतनी नहीं आएंगी, बालक ने मन में यही स्वीकारते हुए सोचा -- "परन्तु सम्बन्धों के टूटने-मरने से दुख तो होगा ही।"

गुरु-दृष्टि ने बालक के मन में उत्पन्न प्रश्न को पढ़ लिया। चेहरे पर फैली मुस्कान से उनकी मूंछें तनीं और बरसाती नदी के सूखे तट जैसे होंठ प्रकट हो गए। मृग-छाल पर थोड़ी जगह निकाल बालक को सस्नेह बैठाते हुए उन्होंने पूछा---

"सांप केंचुली को मुक्त करके सम्बन्धों से मुक्ति प्राप्त कर पाता है?" उत्तर-पूर्व ही बोले-

"नहीं, कदापि नहीं। सर्प के तन से त्यागी गयी केंचुली, वृक्ष से गिरी पत्तियाँ, शाखाओं से फिसले छाल या शरीर से विदा प्राण, सभी सम्बन्ध के डोर से बंधे होते हैं। जैसे पिंजरे में फड़फड़ाता और पतली सलाखों पर चलता-फिरता बेड़ीयुक्त सुग्गा, दोनों ही कैदी होते हैं। ---धीरे-धीरे तुम भी समझ सब जाओगे।"

"परन्तु गुरुजी! सम्बन्धों को टूटते-मरते मैंने भी देखा है।" उसने असंतोष भरी मुट्ठी गुरुजी के समक्ष धीरे-धीरे खोल ही दी।

गुरुजी ने बालक के खुरखुरे सर पर कुम्हार की भांति दो-तीन बार हाथ फेरा और उसकी मोटी शिखा को चुटकी से पकड़कर उचित स्थान पर रख कर पूछा--

"सम्बन्ध-स्मृतियों की डोर हाथों में ही होती है ना? ----सिर के ऊपर ही हिलते-डोलते रहते हैं गुब्बारे, जब तक डोर हाथों में होती है। धागे टूट-छूट गए तब भी रह जाता है सम्बन्ध छूटे गुब्बारे से।"

"सब सत्य है। हाँ, कुछ यादें हैं आज भी मेरी स्मृति-मुट्ठी में। जानता हूँ, बिखरी पुष्प-पंखुड़ियों को भी चुन-चुन कर पुष्पाकार दिया जा सकता है। परन्तु गुरुजी! उनमें प्राण-ज्योति स्थापित की जा सकती है?"

गुरुजी पुनः मुस्काए और बालक की पीठ पर सस्नेह हाथ फेरते हुए बोले-- "संसार एक चित्रशाला और मन स्मृतियों का संग्रहालय है। तनिक विचारो! एक ही चित्र और उसी की स्मृतियाँ सदैव आकर्षक रह पाएंगी? नश्वर संसार की सभी वस्तुएं नश्वर हैं; फिर स्मृतियों का अभिमान कैसा? जलकुंभी की भांति नवस्मृतियाँ ही जब उन्हें ढँक देती हैं।"

"समझ गया गुरुजी। सम्बन्ध टूटते-मरते नहीं। अपनों के मरने-बिछड़ने का अत्यधिक शोक-विलाप अनुचित है। जीवों को मृत्यु-स्वाद चखना ही होगा।"

खुश होकर गुरुजी ने बालक के माथे को छाती से लगाया, उसकी पीठ थपथपायी, आशीर्वाद दिए और उठकर कुटिया की ओर चल दिए।

धीरे-धीरे पग बढ़ाते जाते हुए गुरुजी को देख कर बालक ने सोचा बृद्धावस्था जेठ की दुपहरिया-सी होती है, जिसमें पांव पसारे रहता है हर ओर सन्नाटा।

सच है, मानव जब सत्ता-सुख के शिखर पर होता है और किसी को किसी समय दे सकता हो वह मनचाहा सब कुछ, तब वह तन्हाई में भी रह नहीं पाता तन्हा। परन्तु

सत्ता-सुख से दूर बृद्धावस्था में रह जाती हैं मात्र यादें-बातें और निष्ठुर तन्हाई। नीरस फूल से भागती मधुमक्खी की भाँति भागते हैं या फिर पूस की धूप-सी, देखते ही देखते नजरों से ओझल हो जाते हैं स्वार्थी। ------ पतझड़ में डोलते-गिरते पत्तों-सा बालक की आँखों से झड़ने लगीं सदृश घटनाएं।

बालक के मन-आंगन में चिड़ियाँ सा उतर आया वह दिन, जब वह पहली बार गया था गुरुजी की कुटिया में। उस दिन भी पांव पसारे सुरक्षा प्रहरी की भांति बैठी थी तन्हाई। ---- उसने सोचा था "भूखा रह कर भी स्वामी-चरणों में पड़े रहने वाले कुत्ते के समान और मानव से अच्छी होती है तन्हाई। .... "

चिड़ियाँ देख, स्मृति-नगर की दूसरी चिड़ियाँ उतरी। ---वह, दीपावली की संध्या थी। किसी ने कुटिया-द्वार पर रख छोड़े थे दो-चार दीप जलाकर। गुरुजी उदास बैठे थे। दीप उन्हें या प्रकाश-प्रेम में जल मरते फतिंगों को देख रहे थे या फिर वह विचर रहे थे भूत-भविष्य काल में। बुरे सपने देख चिहुंकते बच्चे की निद्रा भंग करने वाली माता की तरह बालक ने ध्यान भंग करने तथा ज्ञान-प्राप्ति हेतु प्रश्न का एक पत्ता फेंका-

"गुरुजी! पुत्र और धर्मपुत्र में अन्तर क्या है?"

"प्यासे व्यक्ति के लिए जलाभाव में गोरस का सेवन।" गुरुजी ने तुरंत उत्तर दिया।

"पुत्र और धर्मपुत्र में भाग्यशाली कौन होते हैं?"

"दोनों, एक को धन-संपत्ति हाथ लगती और दूसरे को आशीर्वाद प्राप्त होते हैं।"

"पुत्र के होते हुए धर्मपुत्र की आवश्यकता क्यों उत्पन्न हो जाती है?"

"घर भूत-बंगला न बन जाए इसके निमित्त लम्बी अवधि के लिए घर छोड़ने वाला, खाली घर को सौंप देता है किसी विश्वासी को रहने और सांझ-बत्ती देने हेतु। ठीक उसी तरह हृदय में खाली पड़े पुत्र-कोष्ठ को सौंप देता है कोई व्यक्ति, किसी को और, बना लेता है उसे धर्मपुत्र।---अपने विचार, व्यवहार, आचार से या पुत्र-धर्म निभा कर भी बन जाता है किसी जाति-धर्म का कोई व्यक्ति किसी का धर्मपुत्र।"

उत्तर से संतुष्ट बालक ने लगे हाथ दूसरा प्रश्न जड़ दिया।--

"गुरुजी! कर्मनिष्ठ-सिद्धान्त पुरुष पर भी लोग उंगलियाँ क्यों उठाते हैं?"

"उंगली उठाना सहज-सरल होता है।"

"गुरुजी! थोड़ा विस्तार से।"

गुरुजी सर्पमुखी लाठी पर टेक लगा कर उठे और टहलने लगे। बालक सहम कर सिर पर हाथ फेरते हुए उंगली से पुराने घाव के निशान को तलाशने लगा। धीरे-धीरे दो-चार चक्कर लगाकर गुरुजी पुनः आसन ग्रहण कर बोले-

"हर व्यक्ति का अपना-अपना मत, दृष्टिकोण और सिद्धांत होता है। विचार, विचार को तथा सिद्धान्त, सिद्धान्त को काटते-नकारते भी हैं। --- आँखों देखा सच भी सदैव सच नहीं होता। समुद्र तट से देखने वाले को नौका डूब कर उभरती नज़र आती है, जबकि वह लहरों पर बलखाती है। देखने वाले की आँखों में डूबती लगती है नौका, यह सच है। नौका डूबती नहीं, यह भी सच है।

अब मुझे ही ले लो, मैंने सदैव विद्या-दान और त्याग किया, यह सच है। परन्तु अब दान-पान न केवल सहर्ष स्वीकारता हूँ अपितु मांग भी लेता हूँ। घर छोड़ कुटिया में रहता और जीवन-रक्षा हेतु अनिच्छित वस्तु भी खा-पी लेता हूँ। स्वास्थ्य-चिंता से ग्रसित रहता हूँ और धन-जन रहते हुए भी असहाय महसूस करने लगा हूँ, यह सच है।

मैं जानता हूँ कि कुछ लोग मुझे सिद्धान्त विहीन, लोभी, बेईमान और दुष्कर्मी ही नहीं, कुछ और भी कहते हैं। कहने वाले का भी अपना तर्क-आधार होगा। ---- याद रखो! झूठ के पांव नहीं होते और सच लंगड़ा नहीं होता।"

गुरुजी एक श्रद्धालु को आते दुख चुप हो गए और बालक उनकी अगवानी के लिए उठ गया। गुरुजी 'अभिनन्दन-ग्रंथ लोकार्पण समारोह' से लौटे थे। बालक भी उनके साथ-साथ था। महामहिम राज्यपाल, लोकार्पणकर्त्ता और गुरुजी समारोह के अध्यक्ष थे। अध्यक्षीय भाषण 'साहित्य और साधना' के विवेचन तक सीमित रहा। अन्त में गुरुजी ने लेखक को दीर्घ जीवन का आशीर्वाद दिया।

गुरुजी दवा खाकर लेट गए। बालक धीरे-धीरे उनके पांव दबाने लगा। स्तनपान करते बालक की तरह थोड़ी देर में उनकी आँखें बन्द हो गई।.....बालक ने सोचा कि गुरुजी सो गए हैं। परन्तु उसके मन में उत्पन्न प्रश्न-ध्वनि को स्पर्श माध्यम से सुनकर आँखें बन्द किए ही गुरुजी बोले-

"पूछो, क्या पूछना चाहते हो?"

"ग्रंथ और लेखक के संदर्भ में नहीं बोले?"

"आवश्यक बातों का ही उल्लेख किया जाता है।"

"अर्थात, अभिनन्दन-ग्रंथ में अच्छी रचनाएं नहीं होतीं?"

"अच्छी और उत्कृष्ट रचनाएं भी होती हैं। परन्तु......." गुरुजी ने बन्द आंखों को खोल कर बालक को देखा। "परन्तु के बाद चुप क्यों हो गए गुरुजी! मेरी जिज्ञासा उन्हीं बातों को जानने की है।" कहकर उसने नजरें झुका लीं। गुरुजी ने सोचा कि अत्यधिक प्यारी बिल्ली और बालक एक समान होते हैं। बिल्ली, साधिकार किसी स्थान पर जा बैठती, किसी वस्तु को सूंघ-चाट लेती है और बालक किसी समय, किसी से, किसी स्थान पर कोई भी प्रश्न पूछ लेता है। यदि चुप लगा गए तो बालक पांव दबाता रहेगा और प्रश्न पुनः दुहराएगा। उसी क्षण उन्हें पूर्व में दिए गए अपने ही उपदेश याद आने लगे-"साहस जुटा कर सच बोलो। सच, सच है परन्तु उसे साबित करना होगा। सत्य को सदैव सूली का सामना करना पड़ा है। अग्नि-परीक्षा, सत्य को ही देनी पड़ती है। व्यक्ति को निष्पक्ष नहीं, पक्षधर होना चाहिए, सत्य का, न्याय का,...... चुप्पी भ्रामक न बने ....."। यही सब सोच कर बोले-

"सच्ची बात तो यह है कि मित्रों से मनोनुकूल लेख-संस्मरण लिखवाकर, प्रभाव डालने वाली प्रदर्शन योग्य तस्वीरें आदि पर आधारित, किसी मित्र के नाम से सम्पादित और अपने या अन्य के खर्च पर प्रकाशित अभिनन्दन-ग्रंथ, जिसे धूम-धाम से लोकार्पित कराया जाता है और दौड़-धूप कर समारोह-समाचार छपवाया जाता है, उसके संदर्भ में मेरे विचार अच्छे नहीं।.... ..साहित्य-साधकों के अभिनन्दन-ग्रंथ प्रकाशित नहीं हुए। कालजयी रचनाएं, रचनाकारों को भी अमृत प्रदान करती हैं।" थोड़ी देर चुप रह कर अत्यंत दुखी स्वर में बोले-

"ऐसा लगता है कि हिन्दी साहित्य की विकास-यात्रा में वर्तमान युग अभिनन्दन-ग्रंथ के सम्पादन-प्रकाशन का युग कहलाएगा। लोग बिना सोचे-समझे अभिनन्दन-ग्रंथ के सम्पादन-प्रकाशन की होड़ में लगे हैं। वे सम्पादन-प्रकाशन की संख्या का कीर्तिमान स्थापित करना चाहते होंगे, जिससे उन्हें कोई लाभ नहीं होगा। इस प्रचलन पर अब विराम लगना आवश्यक है।"

"क्षमा करेंगे। गुरुजी! आपका भी तो अभिनन्दन-ग्रंथ......." दुखते घाव को छू-छू कर देखने वाले व्यक्ति की तरह बालक का यह प्रश्न उन्हें पीड़ा दे गया। कुछ क्षणों की चुप्पी के बाद लंबी सांस खींच कर उसे मन्द गति से छोड़ कर बोले-

"पुरुष और महापुरुष में अन्तर होता है। महापुरुष से भूल नहीं होती परन्तु पुरुष भूल पर भूल किए जाता है। स्वीकारता हूं, मुझसे भी बड़ी भूल हुई। मुझे ज्ञान होना चाहिए था कि जब मनुष्य की हर इच्छा भगवान भी पूरी नहीं करते तो मनुष्य कैसे सक्षम हो सकता है। तुम इसे यही मान लो कि "जब जागा तब सबेरा।"

गुरुजी के चेहरे पर देखते ही देखते सावन के मेघ की तरह भूल का दंश छा गया। उन्होंने सोचा बालक मन बेलगाम घोड़ा होता है, जो किसी समय, कहीं भी, किसी के समक्ष जा खड़ा होता है या फिर निश्छल बालक सा किसी कमरे में घुस जाता और देख लेता है न देखने वाला दृश्य और सुन लेता है न सुनने योग्य बातें।

उनकी आंखें पुन: बन्द हो गई। बालक को चरण-स्पर्श से पता नहीं चल पाया कि गुरुजी सो चुके हैं या भविष्य-चिंता में लीन हैं या फिर घूम-टहल रहे हैं भूतकाल में। यद्यपि यह उनके सोने का समय नहीं था, फिर भी उसने पास पड़ी उजली चादर को उठाकर उनपर डाल दिया और चरण छोड़ने से पूर्व उन्हें गहरी नजरों से देखकर सोचा-"गुरुजी, ज्ञान-गंगा हैं। ......"

संपादक, 'भाषा-संगम'
उर्दू निदेशालय, राजभाषा विभाग
बिहार सरकार, पटना-800015

"हिन्दी अंग्रेजी की सहचरी या अनुचरी"

❑ प्रो. शशि सिंह

पिछले एक सालों से भाषा संबंधी सारे प्रचार और प्रसार जो शासन तंत्र के द्वारा न हो सके उसे टेलीविजन, हिन्दी फिल्मों एवं समाचार पत्रों ने कर डाला। सारे देश में आज दृश्य माध्यम का प्रचार बेशुमार है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि यहाँ तक सरकारी कार्यालयों में हिंदी के पर्याय के रूप में अंग्रेजी सिखायी जा रही थी जैसे टंकक, आशुलिपिक, यान, इन शब्दों को समझाने के लिये अंग्रेजी शब्दों को भी-लिखना पड़ता था। हिन्दी के लम्बे सामाजिक शब्द लोगों के लिये जटिल थे। आज परिस्थितियां बदल गयी हैं।

जरा! ध्यान से देखे तो अंग्रेजी-हिन्दी की अनुचरी बन गयी है। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी ने हिंदी को आज अंग्रेजी से लोहा लेने की ठान चुकी है। हमारे देश में अंग्रेजी ने हर तरफ समझौता किया है चाहे वह श्रीनगर हो, दक्षिण हो या गुवाहाटी। विज्ञापनों ने जैसे सब को हिंदी के शब्द रोमन लिपी में सिखाने का ठेका ले लिया है। टी०वी० चैनलो पर विज्ञापनों द्वारा चौबीस घंटे ....।

Bar Bar dekho, Tol mol ke bol,
Thanda pani chahiye., Amrica chalo

जैसे अनेक वाक्यों द्वारा बड़े-बड़े विज्ञापन सभी के कानों में गुंज रहें हैं। प्रत्येक पॉप धारावाहिक फिल्म जाने अनजाने हिंदी का ही प्रचार कर रहें हैं भले ही हिंदी के शब्द रोमन में लिखे जाते हैं। अस्सी नब्बे की दशक तक सहमी दुबकी हिन्दी जैसे सर उठाने लगी है। अब लोग इसे रोमन लिपी में भी- सीख रहे हैं, तो क्या हुआ वह है तो हिन्दी ही न। अहिंदी भाषी जब हिन्दी सीखते हैं तो माध्यम अंग्रेजी का ही होता है। हिंदी फिल्मों, धारावाहिकों की समीक्षा, आलोचना और उनके समाचार सभी सामग्री अंग्रेजी में पढ़ना पसंद किया जा रहा है। ये मनोरंजन के साधन की बलिहारी है कि उन्होंने पूरे भाषायी मानचित्र को ही बदल डाला है। भारतवर्ष में हिन्दी फिल्में ही अधिक बनती हैं अगर देश की सभी भाषा के पत्र-पत्रिकाओं में इसका प्रचार-प्रसार होता है तो यह हमारे लिये गौरव की बात है। इससे हिंदी की प्रतिष्ठा ही बढ़ती है।

आज हमारे समाज में अंग्रेजी ने अपना विचित्र स्थान बना लिया है। अब अंग्रेजी के अखबार भी अंग्रेजी हिन्दी की खिचड़ी भाषा का प्रयोग करने लगे हैं। 'जय राम जी की' टाइम्स ऑफ इन्डिया 1-8-2000, कोका कोला, शक्ति भोग आटा, फ्रेश पिल्सावटी, भाटा जैसे अनेक उत्पादों के मुख्य स्लोगन रोमन हिंदी में लिखे मिलते हैं।

आज बहुत से अंगेजी, समर्थकों का मानना है कि अंग्रेजी के शब्द कोश में लगभग 20-25 हजार हिंदी के शब्द जुड़ गये हैं। उसका ऐसा मानना है कि भारत और दक्षिण पूर्वी एशिया में अंग्रेजी बोलने वाले की संख्या में लगातार बढ़ोतरी हुई है जिससे कुछ दिनों में इंगलैण्ड और अमेरिका के मूल अंग्रेजी भाषियों से इनकी संख्या अधिक हो जायेगी। लगता है यही सोच कर अंग्रेजी ने हिन्दी से समझौता कर लिया है। अत: संकीर्ण दायरे सें उपर उठने पर हम देखते हैं की अंग्रेजी माध्यम के इस प्रयोग द्वारा हिन्दी का महत्व घटा नहीं बल्कि नयी उत्तेजक दुनिया में इसका वर्चस्व बढ़ा है।

हिन्दी कब चुपचाप अखिल भारतीय संप्रेषण की भाषा बन गयी इस पर सहसा विश्वास ही नहीं होता। हिंदी प्रचार के लिये अंग्रेजी की वैसाखियों का सहारा राष्ट्रभाषा के लिये अवमानना का विषय नहीं हैं बल्कि अनजाने ही आधे विश्व की भाषा बनने का प्रयास है। यद्यपि अंग्रेजी अखबार का दंभ इसे सरलता से स्वीकार नही करता।

विश्व के सभी देश अंग्रेजी को दूसरी व्यावसायिक भाषा की तरह इस्तेमाल करते हैं लेकिन उनकी आड़ में अपनी मातृभाषा ही होती हैं। वे अपनी मातृभाषाओं से पूर्णरूप से जुड़े रहते हैं। उनकी राष्ट्रीयता का शत प्रतिशत आधार उनकी मातृभाषा है। भारत में ठीक इसके विपरित है यहां अंग्रेजी की जंडें बड़े लोगों से जुड़ी हैं। हिन्दी बोलने वाले को हेय की दृष्टि से देखा जाता रहा है। आज अंग्रेजी तो व्यावसयिक योग्यता है ही लेकिन अगर इसके साथ हमें अपनी भाषा से प्रेम न होगा तो देश का विकास अवरूद्ध होगा ही।

संपर्क : हिन्दी विभाग, जे. डी. विमेंस कॉलेज
बेली रोड, पटना

DENSA
PHARMACEUTICALS PVT. LTD.

Fact. Add. :Plot No. 10, Dewan&Sons Udyog Nagar,
Taluka Palghar, Dist. Thane, MAHARASHTRA
Phone No.: (952525) 55285/54471, Fax: 55286

&

DANBAXY
PHARMACEUTICALS PVT. LTD.
(SOFT GELATIN)

Fact. Add: Plot No. K-38, MIDCTarapur,
Boisar, Dist. Thane, MAHARASHTRA

Office Address:

1, Anurag Mansion, Ashokvan,
Shiv Vallabh Raod, Dahisar (E),
Mumbai-400068
Phone No.: 8974777, Fax: 8972458

MR. DEVENDRA KUMAR SINGH, C.M.D

MAHESH HOMOEPATHIC LABORATORY
&
GERMAN HOMOEO STORES

Saket plaza, Jamal Road,
Patna-800001
Ph:(0612) 2238292(O) 2674041 (R)

Offers a wide range of mother Tinchers, Dillutin Biochemic Tablet patents, Globels

Dr. Mahesh Prasad
D.M.S. (patna)

Dr. Arun kumar
D.H.M.S (patna)

Spcialist in chronic Diseases

रचनाकारों से

(1) रचना भेजने के लिए कोई शर्त नहीं है, सभी रचनाकारों का हम हार्दिक स्वागत करते हैं। उदीयमान रचनाकारों को विशेष रूप से प्रोत्साहित किए जाने का प्रयास रहेगा।

(2) राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित तथा वैचारिक रचनाओं को प्राथमिकता दी जाएगी।

(3) रचना एक तरफ/कम्प्यूटर पर कम्पोज्ड अथवा सुवाच्य स्पष्ट लिखी होनी चाहिए।

(4) रचना के अंत में उसके मौलिक अप्रकाशित व अप्रसारित होने के प्रमाण पत्र के साथ रचनाकार का नाम व पूरा पता अवश्य लिखा होना चाहिए।

(5) रचना के साथ पासपोर्ट/स्टाम्प आकार की श्वेत एवं श्याम तस्वीर की दो प्रतियाँ अवश्य संलग्न करें।

(6) प्रकाशित रचनाएँ वापस नहीं की जाती, कृपया उसकी प्रति अवश्य रख लें।

(7) प्रकाशित रचनाओं पर फिलहाल पारिश्रमिक देने की कोई व्यवस्था नहीं है, हाँ, रचना प्रकाशित होने पर अंक की प्रति अवश्य भेजी जाएगी।

(8) किसी भी विधा की गद्य रचनाएं 1500 शब्दों अथवा दो पृष्ठों की मर्यादा में ही स्वीकार्य होंगी।

(9) समीक्षार्थ पुस्तक की दो प्रतियां भेजना आवश्यक है।

(10) रचनाएं कम्प्यूटर पर कम्पोज्ड कराकर उसे इन्टरनेट पर भेजें जिसका E-mail - vicharbharat@hotmail.com

सिद्धेश्वर
सम्पादक, विचार दृष्टि
दृष्टि 6, विचार बिहार, यू-207, शकरपुर, विकास मार्ग
दिल्ली-92, दूरभाष: (011) 22530652

अपनी सर्वश्रेष्ठता सिद्ध करने में सफल समकालीन मगही साहित्य

❑डॉ. सत्येन्द्र कुमार सिंह

बिहार की धरती पर अनेक महान हस्तियों का आविर्भाव हुआ है। विशेष कर मगध का गौरवपूर्ण अतीत अपने सपूतों के कारनामों पर विश्व को आलोकित एवं प्रभामंडित कर चुका है। यह सही है कि आज वे इतिहास की वस्तु बन कर रह गये हैं पर उनके द्वारा प्रशस्त किये मार्ग पर चलने वाले राहगीरों की संख्या में कमी नहीं आई है। ऐसे ही एक राहगीर का नाम है-धनंजय श्रोत्रिय, जिन्होंने 'समकालीन मगही साहित्य' नामक त्रैमासिक पत्रिका लेकर साहित्य जगत में न केवल अपनी उपस्थिति दर्ज की है अपितु मगही के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं की पत्रिकाओं के समक्ष चुनौती प्रस्तुत कर दुष्कर व स्तूत्य कार्य भी किया है।

कल की विस्तारित, पर आज की सिमटी मगही जब अपने अस्तित्व के रक्षार्थ संघर्षरत थी तब मगही आंदोलन कर्त्ता, साहित्यकार, संपादक, बुद्धिजीवी सीमित संसाधन के बल पर इस पुनीत कार्य में सहायक हुए। अनेक पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ जिसमें मगही साहित्यकारों की रचनाएं धड़ल्ले से छपने लगीं। पर दुर्भाग्य ने मगही का पीछा नहीं छोड़ा और कुछ अंकों के उपरांत ही ढेर सारी मगही पत्रिकाएं बंद हो गयीं। इन पत्रिकाओं में स्तरीय मगही रचनाएं तो छपती थीं पर प्रतिस्पर्द्धा इस कदर हावी हो गयी कि खराब गेटअप के कारण अन्य भाषा-भाषी की कौन कहे मगही भाषी भी उसे हाथ तक नहीं लगाते थे। संपादक धनंजय श्रोत्रिय ने इस बात से भिज्ञ होकर ही इस पत्रिका को इतना सुंदर कलेवर प्रदान किया है कि हिन्दी सहित सभी विकसित भाषाओं की पत्रिकाएं काफी पीछे छूट गई हैं। मगही की अन्य प्रकाशित पत्रिकाएं साहित्य रूपी राजा की रानियां हैं पर 'समकालीन मगही साहित्य' पत्रिका पटरानी के पद पर विराजमान है।

इतना ही नहीं, मगही की बढ़ती स्वीकृति को रेखांकित करती 'समकालीन मगही साहित्य' पत्रिका अपने गर्भ से अनेक रत्नों को जन्म देती नजर आती है जिसमें लेख/निबंध, कथा/कहानी, नाटक/एकांकी, व्यंग्य, लघुकथा, पहचान, कविता-कानन, पुस्तक-समीक्षा इत्यादि प्रमुख हैं। यह पत्रिका साहित्य की हर विधा को सहेजती-समेटती-पलती, यात्रा के हर मुकाम की धाविका है तथा निकट भविष्य में कोई इसकी अग्र पंक्तियता छीनती नजर नहीं आती है।

पत्रिका का नाम-
समकालीन मगही साहित्य (त्रै०)
संपादक- **धनंजय श्रोत्रिय**
प्रकाशन - **ई-137, गणेश नगर, पांडव नगर कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली-110092**
मूल्य - **25 रूपये**
पृष्ठ संख्या-**148**

लब्ध प्रतिष्ठ पत्रिका के रूप में धमाकेदार शुरूआत कर इसने पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करने का सफल प्रयास किया है। इसकी संपादकीय टिप्पणी इसलिए भी सराहनीय है कि संपादक ने अपनी बेबाकी, दो टुक कथन-शैली का परिचय दिया है। एक संपादक प्रखर आलोचक भी होता है। वह नीर-क्षीर विवेकी ही नहीं, पैनी निगाह युक्त, दूर दृष्टि युक्त, दूरदर्शी भी होता है। अपने गुरुतर दायित्व का निर्वहन इस पत्रिका के संपादक ने बखूबी किया है। इस तरह की संपादकीय टिप्पणी मगही की अन्य पत्रिकाओं में देखने को नहीं मिलती है।

इस पत्रिका में प्रकाशित दो सारगर्भित लेख मील के पत्थर समान हैं। इस तरह के लेख मगही की अन्य पत्रिकाओं में कभी देखने को नहीं मिले हैं। डॉ. सूर्यकांत बाली के लेख 'मनु के जानवऽ त दीवाना हो जइवऽ' को इस पत्रिका में आवरण पृष्ठ पर रखकर, सर्वोच्च स्थान देकर, संपादक ने मनुवादी वर्णव्यवस्था के पोषक होने का परिचय दिया है। लेखक का यह आलेख डॉ० बाली की पुस्तक 'भारत गाथा ' से लिया गया है जिसका मगही अनुवाद स्वयं संपादक ने ही किया है। डॉ. सत्येन्द्र कुमार सिंह का लेख 'मगही भाषा: उद्‌भव, विकास आउ स्वरूप' मगही की प्राचीनता का बोध कराता नजर आता है। मगही साहित्य के इतिहास-लेखन की समस्या पर कलम चला कर लेखक ने आगे के इतिहास लेखकों का मार्ग प्रशस्त किया है।

इस पत्रिका में संकलित पांचों कहानियां टूरा(मिथिलेश), मोरचा(शेखर), बुढ़ारी के लकड़ी (प्रो. उमेश चंद्र मिश्र), पगला(कृष्ण मोहन प्यारे) और फैसला(डॉ. जितेन्द्र वत्स) स्तरीय हैं तथा हिन्दी की समकालीन कहानियों से गल-बांही करती नजर आती हैं। 'टूरा' ग्रामीण परिवेश के चित्रण में जहां प्रेमचन्दीय परम्परा का निर्वाह करती दिखाई देती है वहां 'मोरचा' राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत है। 'पगला' में घोर व्यंग्य झलकता है। 'फैसला' भी ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधारित उत्कृष्ट कहानी है।

'उकटा-पुरान' एकांकी में विद्वान एकांकीकार प्रो० तृप्ति नारायण शर्मा ने लक्ष्मी और विष्णु के बीच वार्तालाप कराया है जो काल और परिवेश के अनुसार सराहनीय रचना लगती है। 'पचपन नंबर वाला बर्थ' सराहनीय व्यंग्य रचना है। मगही में ऐसी व्यंग्य रचना कम दिखाई देती है। उमाशंकर जी की 'नाम महिमा' व्यंग्य भी सराहनीय कहा जा सकता है।

कविता-कानन के माध्यम से इस पत्रिका में अनेक कविता-पुष्प खिले हैं। पर डॉ. नलिन, जयराम सिंह, डॉ. प्रियदर्शी, दीनबंधु की कविता प्रशंसनीय है।

रवीन्द्र कुमार की लघुकथा 'राजा की खा होतइ' समसामयिक घटना के माध्यम से मानव-मूल्यों में हो रहे ह्रास का मर्मस्पर्शी ढंग से चित्रण करती है। 'नाटककार चतुर्भुज ' से पहचान कराकर अशोक प्रियदर्शी ने लेखक-पाठक सबका भला किया है। ऐसा कार्य निश्चय ही स्तूत्य कहा जाएगा।

समासतः कहा जा सकता है कि प्रूफ की एकाध गलती छोड़कर 'समकालीन मगही साहित्य' पत्रिका में कहीं से कोई खोट नहीं है। स्तरीय रचनाओं से यह पत्रिका भी स्तरीय बन पड़ी है, इसमें संदेह नहीं है। हम इसकी प्रस्तुति की जितनी भी प्रशंसा करें, उतनी ही कम है। अस्तु हम यह कह कर विराम लेते हैं कि अपनी सर्वश्रेष्ठता सिद्ध करने में इस पत्रिका की सफलता अबाधित है।

संपर्क : मगही विभागाध्यक्ष,
बी०डी० इवनिंग कॉलेज, पटना

'तस्वीरें' मध्यमवर्गीय जीवन की चित्रात्मक व्यथा-कथाएँ

❑ मालती शर्मा

चित्रकला में कमजोर लेकिन चित्रों से बेहद लगाव रखनेवाले इंदु पिछले 20-25 वर्षों से मेरे मन के कैनवास पर अपनी तस्वीरें बनाती रही हैं, यादों के पृष्ठों पर चिपकाती रही हैं, अल्हड़, संवेदनशील किशोरी, संघर्षशील तरुणी और सामाजिक विसंगतियों की असंयत आग में पकी सुपत्नी और माँ की तस्वीरें हैं ये।

इस के साथ साथ चित्र निकालने की तीव्र ललक और चित्रकला में असफल 'शबनम' की संवेदनशील मन की आँखों ने जो शब्द चित्र रचे, अपने आस-पास के कराची से पुणे तक की ऊबड़खाबड़ जीवन यात्रा के, उनका संग्रह है 'तस्वीरें', 63 तस्वीरों का एलबम। रमणीय, पठनीय और प्रभावी।

ये कविताएँ हमारे आज के आस-पास को उसकी भूख, प्यार, प्रेम, घृणा, द्वेष, लाचारी, आत्मकेंद्रित अहं, स्वार्थता और हमारे दैनंदिन जीवन में पसरी उपेक्षा को अपने शब्दों के फ्रेम में एक ऐसे कोण से हमारे शब्दबद्ध करती हैं कि एक अनोखी चुभन से उसका अर्थ आँखों में खुभ जाता है। मैं एक छोटी सी कविता 'यंत्रवत' लेती हूँ, यह रचना सड़क पर घटती एक घटना का चित्र है, जो मशीनी सभ्यता में मशीन या संवेदन हीन यंत्र बने मानव की उदासीनता को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्ति दे रहा है। आत्मकथन शैली प्रभाव को और गहरा करती है।

ये कला साहित्य की दुनिया में शब्दों और चित्रों का रिश्ता अटूट और पूरक का रहा है। कविता शास्त्रियों और भाषा पंडितों ने चित्रात्मकता को भाषा और कविता का गुण माना हैं। 'अक्षर' ध्वनियों स्वरों के चित्र ही तो हैं। चित्रों की रेखाओं की मान अभिव्यक्ति शब्दों के माध्यम से मुखर हो उठती है।

विश्वख्यात कथाकार 'ओ हेनरी' की कालजयी रचना 'दी लास्ट लीफ' मानवीय संवेदना पर शब्द और रेखाओं के अभिन्न अटूट प्रभाव की अपूर्व मिसाल है। और इस के साथ रखूँगी मैं शबनम के इस अलबम में संजोई ये 63 कविताएँ। ये निम्न और निम्नमध्यम वर्ग की दुनिया के संघर्षमय जीवन की तस्वीरें हैं। मैं कहना चाहूँगी कि यह फलक इसकी संवेदनाओं की गहन अनुभूति ही उन्हें बैठे ठाले का शगल, उच्चवर्गीय अतृप्त वासनाओं का एकान्त राग जैसी रचनाओं से अलग करता है। ये तस्वीरें मेहनत, मशक्कत की तूलिका से, बहते पसीने की रेखाओं की रेखाओं से, कीचड़ भरे पैरों की यात्रा के पगचिन्हों से बने शब्दचित्र हैं।

इन कविताओं के शीर्षक जैसे चित्रों को देखने की उत्सुकता जागती संकेत में उठी उँगलियाँ हैं। 'वह', 'धुआँ', 'अपने ही हाथ', 'बूची', 'बौना', 'ये भीड', 'इतवार' आदि और भी कई हैं, सब का उल्लेख अभिप्रेत ही है।

'इंदु' के रचे ये शब्द चित्र, ये तस्वीरें बोलती हैं, ये इतना बोलती हैं कि, कई कई कहानियाँ, एक पूरा उपन्यास ही कह डालती हैं, एक पृष्ठभर के शब्दों में रची, खींची 'तस्वीर' में सारी कथा।

'ऑर्डर-ऑर्डर' ऐसी ही रचना हैं यह पूरी कविता हमारी संवेदनहीन न्यायव्यवस्था, अंधे, गूंगे कानून और मनुष्यता को छोड़ सिर्फ अपने मीडिया के लिए चटपटी खबर जुटाने के लिए उतारू तथा कथित लोकमत प्रजातंत्र के चौथे स्तंभ पर गहरी चोट है।

इंदु की इन तस्वीरों में स्त्री जिजीविषा, संघर्षशीलता, अपने घर परिवार की चिन्ता में संलग्न ममता भरा आँचल है, किन्तु छुरी से सब्जियाँ काटते काटते उसका डराने, धमकाने रुलाने वालों के सिर और हाथ पैर काटनेवाली 'दुर्गा' है। 'कर्मयोगी' है। कामकाजी और घरेलू स्त्री की इन तस्वीरों में 'गोल रोटी का घेरा', 'अपने ही हाथ', 'इतवार', 'नारी', और 'सुना है' कविताएँ स्त्री की यातना, शोषण, उसके लिए बने दुहरे मानदंडो को अहल्या, सीता, इन्द्र आदि के पौराणिक संदर्भों में सहज कथन शैली किन्तु तलख भाषा में कुछ इस तरह रखती हैं, कि स्त्री से जुड़े सारे प्रश्न उसकी जिन्दगी के सभी पहलू पर्त दर पर्त खुलते जाते हैं। धान रोपती मजदूरिन की बोलती तस्वीर 'वह' रचना इसशृंखला की सब से अच्छी कविता मुझे लगी। 'बूची' और 'गंगू' थी बहुत थोड़े शब्दों में मासूम कलियों के शोषण का शर्मनाक, दहलाने वाला चित्र हैं।

इन्दिरा ने अपने आस-पास के परिवेश को खुली आँखों से देखा परखा है। उसकी दृष्टि केवल निषेध और नकार पर ही नहीं पड़ी है बल्कि प्रेरणा और उत्साह के स्वर भी उन्होंने भरे हैं। 'युवा शक्ति' एक ऐसी ही उल्लेखनीय रचना है।

जिसे हिटलर की भूमिका निभाते अभिभावकों एक बार अवश्य पढ़ना चाहिए।

एक यही कविता नहीं मैं हिन्दी-सिन्धी और मराठी के सभी कविता प्रेमियों से आग्रह करूंगी कि वे एक बार 'तस्वीरें' अपने हाथ में लेकर पढ़ना तो शुरू करें। इन कविताओं को पढ़ना उन्हें कुछ ऐसा लगेगा जैसे वे अपनी ही जिन्दगी की दास्तान सुनाती एक फिल्म देख रहे हो और अपनी जिन्दगी की इन अपनी तस्वीरों से उन्हें बहुत कुछ मिलेगा भी। उन में जायेगी अपने पूरे दुखदायी परिवेश से जूझने की आस्था। ईश्वरीय न्याय और प्रकृति में अपनी आन्तरिक शक्ति में विश्वास और रामभरोसे के साथ अपने ही हाथों कवच बना जीने का बल।

संपर्क: मधु अपार्टमेंट, 1034/1, मॉडेल कॉलनी, पुणे-16

कल्पना चावला : जिसने आसमान की असीम ऊँचाइयों तक पहुँचने का सपना देखा

❑ सुनीता रंजन

हरियाणा के करनाल जिले की कल्पना चावला भारतीय मूल की अंतरिक्ष यात्री होने का गौरव हासिल करनेवाली पहली महिला थी, जिसने हमेशा आसमान की असीम ऊँचाइयों तक पहुँचने का सपना देखा और अपनी कड़ी मेहनत और समर्पण से देश का भी नाम अंतरिक्ष विज्ञान के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में दर्ज कर दिया। अंतरिक्ष यान कोलंबिया के पिछले एक फरवरी 2003 को दुर्घटनाग्रस्त हो जाने से छह अन्य अंतरिक्ष यात्रियों सहित चावला की भी मौत हो गयी। जुलाई 1961 को एक रूढ़िवादी व्यापारी परिवार में जन्मी कल्पना को 1991 में पहली बार अंतरिक्ष में जाने का अवसर मिला था और पृथ्वी से 65 लाख मील की दूरी पर अंतरिक्ष में 376 घंटे से भी अधिक समय गुजारने के बाद वह पाँच सितंबर 1997 को वापस लौटी थीं।

अमरीका के ही एक फ्लाइट इंस्पेक्टर ज्यांपियरे हैरिसन से विवाह करनेवाली कल्पना को अंतरिक्ष यात्रियों के कार्यालय में चालक उपकरण विभाग का प्रमुख बनाया गया था। कल्पना चावला के साथ जिन अन्य यात्रियों को मौत का मुँह देखना पड़ा उनमें- कमांडर रिक हसबेंड, पायलट विलियम मैकूल, पेलोक कमांडर माइकल एंडरसन, डेविड बाउन, लारेल कलार्क तथा इलान रेमोन थे।

42 वर्षों के इतिहास में यह पहला मौका था जब कोई यान पृथ्वी पर उतरने के मात्र 16 मिनट पहले दुर्घटना ग्रस्त हो गया। 16 जनवरी को उड़ा यह यान 16 दिन के अपने अभियान के बाद 16 मिनट पूर्व टेक्सास के ऊपर 63 हजार मीटर की ऊँचाई पर आग की लपटों से घिरने के बाद टुकड़े-टुकड़े हो गया। उत्तरी टेक्सास के निवासियों ने एक बड़े धमाके की आवाज सुनी और आकाश में सफेद धुएं की लकीर भी देखी गयी।

अंतरिक्ष यान कोलंबिया के दुर्घटनाग्रस्त होने की खबर से संपूर्ण विश्व सन्न रह गया। कल्पना पर हर भारतीयों का नाज था। वह चावला परिवार की ही नहीं, सारे भारत की बेटी थी। कल्पना ने अपने जीवन काल में यह सत्य करके दिखा दिया कि दृढ़ इच्छाशक्ति अदम्य साहस, स्पष्ट लक्ष्य और एकनिष्ठ व्यक्ति को कहाँ से कहाँ पहुँचा सकता है। बी०ई० की परीक्षा चंडीगढ़ से, मास्टर्स डिग्री टेक्सास से तथा डॉक्टरेट कोलराडो विश्वविद्यालय से चावला ने प्राप्त की थी।

कल्पना बेहद प्रतिबद्ध और आत्म विश्वास से लबरेज महिला थी। कल्पना का शुरुआती जीवन बेहद अभावों भरा रहा है। अपने जुनून और जज्बे के बल पर अभावों के दौर में वह न केवल अपने पिता के लिए संबल बनी, बल्कि उसने गरीबी को भी अपनी तरक्की और सपनों में आड़े आने नहीं दिया था। उसके कम उम्र में लगातार सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ने के जो कई रिकार्ड दर्ज हैं वे रिकार्ड आसानी से नहीं बने हैं। बचपन से ही चाँद सितारों को छूने का सपना देखने वाली कल्पना चावला में यदि तूफानी जुनून नहीं होता तो वह अंतरिक्ष की सैर नहीं कर पाती। युवाओं के लिए वास्तव में वह प्रेरणा की स्रोत थी। उसकी बहादुरी, समर्पण भारतीय वर्तमान युवाओं के लिए ही नहीं बल्कि आनेवाली पीढ़ी को सदैव उत्साहित करेगी। इस माने में उसके निधन से पूरे देश को नुकसान पहुँचा है।

अंतरिक्ष कल्पना चावला के लिए महज वैज्ञानिक शोध का क्षेत्र भर नहीं था, बल्कि ज्ञान-विज्ञान और कला के विविध रूपों में ढले अंतरिक्ष का रहस्य लोक उसे रोमांचित करता था। इसीलिए तो स्विट्जरलैंड दूतावास में वित्तीय सलाहकार के रूप में कार्यरत कल्पना की बहन सुनीता चौधरी को लगभग डेढ़ माह पूर्व राजेश हर्ष की पेंटिग जिसमें धरती और आसमान के मिलन के रहस्यमय बिंदू को कैनवास पर उकेरा गया था, कल्पना को बेहद पंसद आई थी। यह दुर्भाग्य है कि स्पेस पेंटिंग के सुप्रसिद्ध कलाकार राजेश हर्ष की पेंटिंग कल्पना के पास पहुँचने के कुछ ही दिन बाद कल्पना चावला धरती और आसमान के उसी मिलन बिंदु में हमेशा के लिए समा गयी और अपने प्राण न्योछावर कर देश और दुनिया का नाम रोशन कर गयी। प्रसन्नता की बात यह है कि कल्पना की स्मृति को अक्षुण्ण रखने के लिए 22 सितंबर 2002 को छोड़ गए मौसम उपग्रह मैनसेट का नाम कल्पना रखा गया है और एक फरवरी को चावला का स्मृति दिवस मान कर उसकी यादगार को ताजा रखा जाएगा।

अपने अदम्य साहस और विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान करते हुए शहादत देने के लिए कल्पना सदैव याद की जाएगी। कल्पना शहीद हो गई। इस तरह की यात्राएँ जारी ही रहेंगी। इनसान घुटने टेकनेवाला नहीं है। प्रकृति भी अपना काम करती ही रहती है। कल्पना तो एक तरह से अमर हो गई। तमाम दुनिया ने उसकी सराहना की। कवि व लेखक उसे जीवित रखेंगे और कलाकार अपनी कला से दुनिया को उसके दर्शन कराते रहेंगे। कल्पना का जीवन न सिर्फ भारतीय बल्कि विश्व की अनेक महिलाओं को अंतरिक्ष की खोज और विज्ञान के क्षेत्र में सेवा करने के लिए प्रेरित करता रहेगा। कल्पना ने जो कुछ कर दिखाया, वह कोई साधारण व्यक्ति नहीं कर सकता था। इसके लिए दृढ़ संकल्प, फौलाद का हृदय और हिमालय से भी ऊँचे इरादे होने चाहिए।

किस्मत तो देखो टूटी कहाँ जाके है कमंद,
दो चार हाथ जबकि लबे-बाम रह गया। ❑

पद्मश्री प्रो० शारदा सिन्हा: जिसने सांस्कृतिक परंपरा के बिसरते भाग को समेटा-संजोया

❑ अरुण कुमार गौतम

लोक संस्कृति के संदर्भ में सुप्रसिद्ध कथाकार मैक्सिम गोर्की ने कहा है कि जनता ही सृष्टि की प्रथम दार्शनिक और आदि कवि है। विभिन्न भाषाओं, उनकी बोलियों, परंपराओं और रीति-रिवाजों में जनता ही बोलती है। जनता की यही बोली लोक संस्कृति की विभिन्न शैलियों में अभिव्यक्ति पाता गया। दुर्भाग्य से प्रगति की आधुनिक दौड़ लोक-संस्कृति की जीवंतता और उसके जरिए जीवन की विराटता को देखने-समझने का अवसर हमसे छीन रही है जिसका शिकार आम आदमी ही नहीं बल्कि प्रबुद्धजन भी हैं। ऐसी विषम परिस्थिति में बिहार की राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लोक गायिका प्रो० शारदा सिन्हा के लोक गायन से देशवासी एक नयापन और ताजगी महसूस करते हैं। प्रो०सिन्हा देश दुनिया को नजदीक से देखने की ललक लिए बिहार की लोक-संस्कृतियों के बीच स्थानीय जिंदगी को देखते और कभी भारत के विभिन्न राज्यों सहित विदेशों की विविधता के बीच अपने लोकगीतों के माध्यम से लोक संस्कृति को समेटने-संजोने और हम आप तक पहुँचाने का अनवरत ईमानदार प्रयास कर रही हैं। लोकगीतों की जो एक अलग मिठास है उसे प्रो० शारदा ने विभिन्न शैलियों में उजागर कर अपनी एक अलग पहचान बनाई और लोकगीतों को ऊँचाई प्रदान की। आपनी विलक्षण प्रतिभा एवं संगीत साधना के बल पर आपने भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के बिसरते भाग और जाने-अनजाने छीनी लोक संगीत की गरिमा को पुन: मंडित एवं गत्यात्मक दिशाबोध से प्राणवंत किया है। सुपौल जिलान्तर्गत हुलास गांव में सन् 1952 में जन्मी तथा प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद से प्रवीण की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुई प्रो० सिन्हा 'बिहार गौरव', 'बिहार रत्न', 'लोकरत्न', 'भोजपुरी रत्न', 'मिथिला विभूति' के अतिरिक्त भारत सरकार के 'पद्मश्री' पुरस्कार से भी सम्मानित की जा चुकी हैं। जर्मनी, इंगलैंड, ब्रुसेल्स, लैजम्बर्ग, बेल्जियम, मिस्र तथा मारीशश आदि देशों में लोकगीतों की खुशबू बिखेरने वाली प्रो० शारदा ने हिंदी फीचर फिल्म 'मैंने प्यार किया', 'हम आपके हैं कौन' के अतिरिक्त भोजपुरी फिल्म 'माई', 'बोल-बमबाज बलमा' तथा 'गंगा मइया तोहें पियरी चढ़इबो' में पार्श्वगायन किया है। अंग्रेजी में एम. ए. प्रो० शारदा सिन्हा संप्रति महिला महाविद्यालय, समस्तीपुर में संगीत विभाग की विभागाध्यक्षा हैं। अब तक एक हजार से अधिक गीत रेकार्डों में गीत गाने वाली प्रो० सिन्हा के गीतों के पचास से अधिक ऑडियो कैसेट्स निकल चुके हैं। प्रो० शारदा जी की इन्हीं सांस्कृतिक गतिविधियों की जानकारी के लिए 'विचार दृष्टि' के सांस्कृतिक प्रतिनिधि डॉ. अरुण कुमार गौतम पिछले दिनों राष्ट्रीय चेतना की इस वैचारिक संवाहिका के लिए उनसे मिले। प्रस्तुत है यहां प्रो० सिन्हा से हुई बातचीत के कुछ अंश-

० लोक गायन की ओर आपका झुकाव कब से हुआ?

शारदा जी- बचपन से ही। भैया जी कहते हैं कि जब मैं चार वर्ष की थी तभी से भजन गाने लगी थी।

० आपको मैथिल कोकिला और मिथिला की बेगम अख्तर कहा जाता है। ये नाम आपको कैसे पड़े?

शारदा जी- प्रतिवर्ष होनेवाले विद्यापति समारोहों में मैं लोकगीत गाया करती थी और विद्यापति के गीतों को प्राथमिकता देती थी। मायानंद मिश्र आदि विद्वान मुझे ऐसे नाम देकर सम्बोधित किया करते।

○ आपका पहला ऑडियो कैसेट कब किस लोकभाषा में और किस कम्पनी से निकला?

शारदा जी- सुनिए, ऑडियो कैसेट तो अब आया है, पहले तो रेकॉर्ड बजते थे। मेरा पहला रेकॉर्ड 1971 में मैथिली में विवाह गीत का एच०एम०वी० कैसेट कम्पनी से निकला। मेरे उस कैसेट को इतनी लोकप्रियता मिली कि एच०एम०वी० ने प्रतिवर्ष मैथिली में कैसेट निकालने को अनिवार्य घोषित किया।

○ अब तक आपने कितने रेकॉर्डों और ऑडियो में गाया है?

शारदा जी- मैंने एक हजार से भी अधिक गीत रेकॉर्डों में गाया है और मेरे गीतों के पचास से अधिक ऑडियो कैसेट्स निकले हैं।

○ पिछले वर्ष आप भारतीय सांस्कृतिक सम्बद्ध परिषद्, भारत सरकार के माध्यम से यूरोप महादेश के कई देशों में अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करने गयी थीं। आपने किन-किन देशों में अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया?

शारदा जी- जर्मनी, हॉलैण्ड, ग्रीस, लैगजम्बर्ग, बेल्जियम और मिस्र में।

○ क्या वहाँ के लोग आपके गीतों को समझ पाते थे? वहाँ की संस्कृति आपको कैसी लगी?

शारदा जी- संगीत की धुन और स्वरलहरी पर दर्शकगण झूम रहे थे। पश्चिम की संस्कृति तो यहाँ से भिन्न है ही।

○ आजकल के ज्यादातर ऑडियो कैसेटों में फूहड़ गीत आ रहे हैं। इसपर आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

शारदा जी- मैं फूहड़ और भद्दे गीतों को नापसंद करती हूँ। कुछ लोग अटपते गीत गाकर लोकसंगीत को बदनाम कर रहे हैं। इसके लिए कैसेट कम्पनी वाले भी दोषी हैं जो केवल अपने व्यवसाय की बात सोचकर ऐसे गीतों को प्राथमिकता देते रहे हैं।

○ यहाँ के कलाकारों की स्थिति पर आप क्या कहना चाहेंगी?

शारदा जी- यहाँ के कलाकारों में एक जूटता की कमी है। सभी एक दूसरे के शिकवा-शिकायत में लगे रहते हैं, एक दूसरे को बढ़ाने में मदद न कर उनके पांव खींचने का प्रयास करते रहते हैं, यह अच्छी बात नहीं है। कलाकारों का भी एक बड़ा संगठन होना चाहिए। संगठन से अधिकार मिलता है और विकास होता है।

○ कलाकारों के लिए आपका क्या संदेश होगा?

शारदा जी- कलाकारों के लिए मेरा संदेश यह होगा कि सभी अच्छे काम और नाम करने का प्रयास करें। लोकसंगीत की गरिमा को बनाये रखने में विश्वास करें।

○ बिहार में हत्या, बलात्कार, अपहरण और नरसंहार की घटनाएँ बराबर घट रही हैं। ऐसे गलत कार्यों के पक्षधरों को आप क्या कहेंगी?

शारदा जी- ऐसे कार्यों के पक्षधरों से मैं कहूँगी कि बिहार को और अधिक बदनाम न करें जिससे शेष बिहार किसी बिहारी को अपमान का घूँट न पीना पड़े।

○ शारदा जी! आप अपने पारिवारिक जीवन पर प्रकाश डालेंगी?

शारदा जी- मेरे पति डॉ० बी० के० सिन्हा उच्च शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, देवघर (झारखंड) में प्राचार्य हैं। मेरी दो संतानें हैं- वंदना (पुत्री) एवं अंशुमान (पुत्र)।

संपर्क- ग्राम-पो०-अराप,
पटना-801104

राजस्थान में भी फैल रहा है जातिवाद का जहर

विचार कार्यालय, जयपुर

पाकिस्तान की सीमा से सटे रहने के बावजूद शांत समझा जानेवाला राजस्थान भी अब बिहार और उ०प्र० की राह पर चल पड़ा है, यानि जातिवाद का जहर उस राज्य में भी फैलता जा रहा है। वहाँ की विभिन्न राजनीतिक पार्टियां और जातियां भी जातिवाद को हवा देने का काम कर रही हैं। कभी देवी-देवता महापुरुषों की मूर्तियों के नाम पर तो कभी आरक्षण के सवाल पर, समाज विरोधी तत्वों ने अपना उल्लू साधना शुरू कर दिया है।

विगत जनवरी के प्रथम सप्ताह में समाज के इन दुश्मनों ने राजस्थान के सीकर जिले में नीम का थाना कसबे में शिव मंदिर में मूर्तियां तोड़ी। यह तो कहिए कि प्रशासन की चुस्ती और चौकसी की वजह से आपसी सुलह करायी गयी और नई मूर्तियां लगाई गई, तब जाकर कहीं शांति बहाल हुई। फिर 6 जनवरी को सीकर जिले के ही जीणमाता के समीप रलावता ग्राम में महाराज शेखाजी की एक टन वजन वाले घोड़े पर सवार मूर्ति को तोड़ने का प्रयास समाज विरोधी तत्वों ने किया। इन दुश्मनों ने रात के वक्त रस्से से बाँध कर शेखाजी की मूर्ति को जीप व ट्रैक्टर की सहायता से घसीटा और उसे गिराने की कोशिश की गई। खैर, मूर्ति तो पूरी तरह नहीं गिर पाई लेकिन वह लटक कर टेढ़ी हो गई। इस कांड को लेकर राजस्थान के राजपूत समाज ने विरोध स्वरूप सीकर कसबा बंद करवा दिया। यही नहीं राजस्थान सरकार में मंत्री रहे देवी सिंह भाटी कालवी ने सीकर स्थित राजपूत छात्रावास में एक सभा का आयोजन कर प्रशासन से दोषियों को गिरफ्तार करने और सजा देने की पुरजोर माँग की। ध्यातव्य है कि उपराष्ट्रपति भैरो सिंह शेखावत जब राजस्थान के मुख्य मंत्री थे, तब इन्होंने ही शेखाजी की इस मूर्ति का अनावरण किया था। स्वयं भैरोसिंह शेखावत भी शेखाजी के वंशज हैं। इसलिए इस सारे मामले की जानकारी उपराष्ट्रपति को भी दी गई। देवीसिंह भाटी ने तो सीकर की सभा में यह भी कहा कि सिर्फ मूर्ति तोड़ने वाले अपराधियों को पकड़ने से ही यह आंदोलन समाप्त नहीं होगा बल्कि मूर्तियों की रक्षा के लिए जबतक कानून नहीं बनाया जाएगा, तब तक आंदोलन जारी रहेगा। शेखाजी की मूर्ति तोड़ने के इस प्रयास में राजपूतों के अनुसार शक की सुई जाटों की ओर जा रही है। यही कारण है कि गुस्से में दो राजपूत नौजवानों ने जोधपुर शहर में शराब के नशे में धुत होकर किसान केशरी बलदेव मिर्धा की मूर्ति को उठाकर एक छात्रावास के सामने फेंक दिया।

यह सच है कि राजस्थान में राजपूत और जाट एक लंबे अरसे से साथ-साथ रहते आए हैं पर जबसे जाटों को आरक्षण का लाभ मिला है, राजपूतों की जाटों से दूरी बढ़ी है। ये दोनों जातियाँ राजस्थान में अपना-अपना मुख्यमंत्री देखना चाहते हैं। इधर हाल के महीनों में राजस्थान का ब्राह्मण समाज भी आंदोलित हुआ है और, आरक्षण पाने की पुरजोर माँग ब्राह्मणों के विभिन्न जातीय संगठनों से भी होने लगी है। सीकर तथा बीकानेर में इन संगठनों के आह्वान पर लाखों की संख्या में ब्राह्मणों ने आरक्षण रैली का आयोजन किया जिसमें राजस्थान सरकार के कई मंत्री तथा विधायकों के साथ-साथ पूर्व मंत्रियों एवं विधायकों ने भाग लेकर आरक्षण की माँग की।

स्मरण रहे कि चार साल पहले भाजपा की हार के बाद भैरो सिंह शेखावत ने कहा था कि चुनाव के इन परिणामों से राजस्थान में भी बिहार और उ०प्र० की तरह जातिवाद की राजनीति उभरेगी। श्री शेखावत का वह अनुमान आज सामने आ रहा है। शेखाजी और मिर्धा मूर्ति कांड को लेकर क्रमश: राजपूत और जाट जातियां अलग-अलग गोलबंद हो रही हैं और जातीय राजनीति उभरकर सामने आ रही है। जिस प्रकार राजस्थान में आए दिन मूर्ति की चोरी और तोड़फोड़ की घटनाएं घट रही हैं, ब्राह्मण संगठनों द्वारा आरक्षण की माँग जोर पकड़ती जा रही है, जातिवाद और मजहबी आग से राजस्थान झुलसने की राह पर अग्रसर है। यदि इन घटनाओं पर तत्काल काबू नहीं पाया गया तो राजस्थान हिंसा की आग में जलने को विवश होगा।

कहना नहीं होगा कि पिछले दिनों राजस्थान में तीन सीटों पर हुए उपचुनावों में कांग्रेस की करारी हार से कांग्रेसी मुख्यमंत्री अशोक गहलौत खासे चिंतित तो हैं ही, मूर्तियों की चोरी और तोड़फोड़ ने उनकी नींद हराम कर दी है। उन्हें यह चिंता सताने लगी है कि आखिर कैसे राजपूत, जाट तथा ब्राह्मण मतदाताओं को अपनी पार्टी के बैनर के तहत लाकर दस्तक देते विधान सभा चुनाव में जीत हासिल करने का प्रयास किया जाए। सांसद शीश राम ओला तो खुलेआम यह कहने लगे हैं कि अब वक्त आ गया है कि जाटों को अपनी एकता प्रदर्शित करनी है। इसी एकता के बल पर जाट समुदाय राजस्थान में मुख्य मंत्री पद का दावेदार बन सकेगा। ऐसे में प्रदेश के जाट नेता यथा सांसद नटवर सिंह, कर्नल सोनाराम, रामेश्वर डूडी, राम रघुनाथ चौधरी और नरेन्द्र बुराड़िया सहित दो दर्जन विधायक अपनी एकता और शक्ति प्रदर्शन के लिए पूरे जोश खरोश के साथ सक्रिय हुए। अ०भा० कांग्रेस कमेटी की महासचिव अंबिका सोनी भी प्रदेश के संगठन को गतिशील बनाने और नाराज जाट समुदाय को खुश करने के लिए प्रदेशाध्यक्ष पद पर किसी प्रभावशाली जाट नेता को पदासीन करने का अवसर तलाश रही हैं।

देखना यह है कि स्वतंत्रता के पूर्व राजपूताना कहे जाने वाले इस राज्य को जातिवाद की आग से झुलसने से बचाते हुए यहाँ के राजनेता इसे प्रगति की राह पर कैसे ले जाते हैं। पर इतना जरूर है कि अरावली पर्वत की श्रेणियों के माउण्ट आबू, चितौड़, आमेर, हल्दीघाटी आदि दर्शनीय स्थलों वाले राजस्थान को विकास के मार्ग पर ले जाने के लिए जातिवादी व मजहबी राजनीति से बचना होगा। इसके लिए वहाँ की राजनीतिक पार्टियों के विचारवान राजनेताओं, कार्यकर्ताओं के साथ-साथ विभिन्न गैर सरकारी स्वैच्छिक संस्थाओं से जुड़े लोगों को आगे आना होगा और सद्भाव व समभाव का वातावरण बनाने का प्रयास करना होगा।

प्रो० राज चतुर्वेदी
अध्यक्ष,राष्ट्रीय विचार मंच, राजस्थान

अब भोजशाला पर वोट की राजनीति

विचार कार्यालय, इंदौर

मध्य प्रदेश के इंदौर के पास धार जिला आदिवासी बहुल क्षेत्र है, जहाँ राजा भोज की बनाई एक इमारत भोजशाला है जो इन दिनों शांतिपसंद लोगों के लिए एक मुसीबत बनती जा रही है। आज तक की यही परंपरा है कि यह भोजशाला हिंदुओं के लिए वर्ष में एक बार वसंत पंचमी के दिन ही खुलती रही है। यहाँ एक मस्जिद भी है, जहाँ मुसलमान नमाज अदा करते हैं। देश के विभिन्न क्षेत्रों में हुए दंगे का अनुभव बताता है कि झगड़े और दंगे-फसाद के लिए ऐसी जगहें समाजविरोधी तत्वों को पसंद आती हैं जहाँ हिंदुओं के साथ-साथ थोड़े बहुत मुसलमान, इसाई या सिख रहते हैं, कारण कि मजहब के नाम पर भड़काऊ भाषणों से उन्हें लड़ाया जाए।

पिछले दिनों धार की भोजशाला में प्रवेश को लेकर जो झगड़े हुए और दंगा का रूप लेते-लेते बचा वह संप्रदाय विशेष के ठेकेदारों की मानसिक विकृति का ही दुष्परिणाम था। पिछले वर्ष तक धार की भोजशाला में वसंत पंचमी के दिन लगभग 100-125 लोग पूजा कर लेते थे, वह भी रस्मी तौर पर, लेकिन इस वर्ष वहाँ हजारों लोग अचानक कहाँ से उमड़ पड़े। एकाएक 100 से बढ़कर हजारों लोगों के दिलों में भोजशाला में पूजा के लिए जो भक्ति उमड़ पड़ी, उसमें सोची-समझी एक गहरी साजिश से इनकार नहीं किया जा सकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि भाजपा को फायदा पहुँचाने के ख्याल से विहिप तथा बजरंग दल के द्वारा वहाँ के कांग्रेस समर्थित आदिवासी वोट बैंक को भाजपा की झोली में डालने का प्रयास किया जा रहा है क्योंकि म०प्र० विधान सभा का चुनाव दस्तक दे रहा है। धार में इन दिनों हजारों लोग मौजूद हैं जिन्हें कोई नहीं जानता। देश के कोने-कोने से नौजवान भगवाधारी यहाँ पूजा-पाठ कराने आए हैं, यह समझ से परे है। विहिप के अन्तरराष्ट्रीय महासचिव प्रवीण तोगड़िया जैसे भगवाधारी दुर्भाग्यवश देश के अमन चैन पर मंडरा रहे हैं और जल्द से जल्द हिंदुस्तान को हिंदू राष्ट्र बना देना चाहते हैं।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि गुजरात चुनाव के पहले मध्य प्रदेश में अमन चैन था और वहाँ हिंदू मुसलमानों के बीच कोई झगड़ा नहीं था। मगर अब अचानक लड़ाई और खून-खराबे की नौबत कैसे आ गई, यह सोचने की बात है। श्री तोगड़िया का कहना है कि धार की भोजशाला में हिंदुओं को प्रतिदिन पूजा करने की इजाजत दी जाए, अगर नहीं मिलती है तो वह धार को अयोध्या बना देंगे। धार की हिंसा धारा बनकर मालवांचल से होती हुई पूरे प्रदेश में फैल रही है, जो चिंता का विषय है। एक ओर जहाँ इसके लिए भाजपा म०प्र० के मुख्य मंत्री को जिम्मेदार ठहरा रहे हैं तो दूसरी ओर कांग्रेस के हिमायती भाजपा और उसके संगठन को दोषी मानते हैं। यह भी सच है कि मजहब के नाम पर की जा रही राजनीति से भाजपा को होनेवाले लाभ को देखते हुए कांग्रेस भी उदार हिंदुत्व अपनाकर हिंदू वोट पाना चाहती है। हालाँकि इसकी उदारवादी हिंदुत्व अपनाने के चलते कांग्रेस को गुजरात चुनाव में बुरी तरह पराजित होना पड़ा है। फिर भी म०प्र० के मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह भाजपा की नकल करने से बाज नहीं आ पा रहे हैं। दरअसल कांग्रेस और भाजपा में वैसे भी बहुत कम का फर्क दिखता है। दोनों एक ही सिक्के के दो पहलु हैं। उन्हें यह नहीं मालूम कि देवी-देवताओं के नाम पर ठगी और अपना उल्लू सीधा करने का कारोबार सदियों से चला आ रहा है जिसके चलते लंबे अरसे तक यह देश गुलामी की जंजीर में जकड़ा रहा। अब आजादी के बाद बाहर से कोई नहीं आ रहा है तो देश के ही लोग कुर्सी हथियाने की लालसा में यहाँ के नागरिकों को बाँटना चाहते हैं। 'बाँटो और राज करो' के सिद्धांत को उन्होंने अंग्रेजों से अपनाकर यहाँ की आम जनता को मोहरा बना रहे हैं।

प्रस्तुति- रमेश यादव, इंदौर से।

केरल में हिंसा के खिलाफ उपवास

विचार कार्यालय, तिरुवनंतपुरम

केरल के मुख्य मंत्री ए०के० एंटनी तथा उनके मंत्रिमंडलीय सहयोगियों सहित सत्तारूढ़ युनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट के वरिष्ठ नेताओं एवं कार्यकर्ताओं ने आंदोलनों के दौरान होनेवाली हिंसा के खिलाफ लोगों को जागरूक बनाने के लिए पिछले 25 मार्च को 8 घंटे का उपवास रखा। उस उपवास का आयोजन वास्तव में मुथंगा में आदिवासियों पर हुई पुलिस कार्रवाई की न्यायिक जाँच कराने की माँग के समर्थन में विपक्षी वाम लोकतांत्रिक मोर्चा के आंदोलन के खिलाफ अभियान के तहत किया गया। सरकार के मुथंगा हादसे की सीबीआई जाँच कराने के फैसले के बाद एलडीएफ ने हॉलांकि पिछले सप्ताह अपना आंदोलन वापस ले लिया था।

मुख्य मंत्री एके एंटनी ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि समाज क सभी वर्गों के लिए शांति की आवश्यकता है और यह शांति हिंसा के बल पर नहीं आ सकती। इसलिए समय का तकाजा है कि किसी भी तरह के आंदोलन में हिंसा का सहारा न लिया जाए। हिंसा से किसी समस्या का निदान कतई संभव नहीं बल्कि सच तो यह है कि वह सामाजिक सद्भाव में खलल तथा राष्ट्रीय एकता में बाधक होती है।

-डा. रति सक्सेना, तिरुवनंतपुरम।

आवरण कथा

इराक पर अमेरिका का हमला
बगदाद पर बमों की बरसात

❑ संजय सौम्य

अंततः अमेरिका ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद को धता बताते हुए इराक पर हमला बोल ही दिया। संयुक्त राष्ट्र का घोषणा पत्र स्पष्ट रूप से यह कहता है कि ताकत के बल पर किसी देश में सत्ता परिवर्तन नहीं किया जा सकता। विश्व जनमत की अवहेलना करके ब्रिटेन, स्पेन, आस्ट्रेलिया जैसे चंद पिछलग्गू राष्ट्र के सहयोग से अमेरिका ने निःसंदेह अपने राजनीतिक एवं आर्थिक हितों को पूरा करने के लिए इराक पर हमला करके सारे विश्व के समक्ष संकट खड़ा किया जिसका देर-सबेर उसे इसका दुष्परिणाम भुगतना पड़ेगां। आतंकवाद को खत्म करने के नाम पर अमेरिका ने ओसामा बिन लादेन को तो जिंदा या मुर्दा पकड़ न सका अब सद्दाम हुसैन को सबक सिखाने चला है। इस हमले को आतंकवाद के विरूद्ध युद्ध छेड़ने और 'ऑपरेशन इराक फ्रीडम' की संज्ञा देने वाले अमेरिका के राष्ट्रपति जार्ज बुश की इस हरकत से यह स्पष्ट हो गया है कि अमेरिका की यह लड़ाई जनसंहारक हथियारों को नष्ट करने के लिए नहीं, बल्कि इराक की अकूत पेट्रोलियम संपदा पर नियंत्रण के लिए है। विदित हो कि 112 अरब बैरल तेल से संचित भण्डार के साथ इराक विश्व में तेल उत्पादक में सऊदी अरब के बाद दूसरे स्थान पर है। 265 अरब बैरल से संचित भण्डार वाले सऊदी अरब की ओर अमेरिका अपनी आँख उठाकर देखने का साहस इसलिए नहीं कर सकता कि मक्का और मदीना की वजह से वह कट्टर मुस्लिम राष्ट्र पूरे विश्व के मुस्लिमों की आस्था का केंद्र है। धार्मिक कट्टरता से कोसों दूर उदारवादी इराक पर अमेरिका ने निशाना इसलिए साधा है कि वह एक तीर से तीन निशाने साध सके। पहला विश्व तेल बाजार पर सऊदी अरब का दबदबा सीमित होगा, दूसरा सऊदी अरब पर नजदीक से निगाह रख सकेगा और तीसरा विश्व के सबसे बड़े पेट्रोलियम उपभोक्ता देश के रूप में प्रसिद्ध अमेरिका को 'तेल भण्डार सुरक्षा' मिलेगी।

कहा जाता है कि वर्ष 2000 के राष्ट्रपति चुनाव में अमेरिका तेल कंपनियों के संगठन ने जार्ज डब्ल्यू बुश के प्रचार पर पानी की तरह पैसा बहाया था। सो, यह धारणा भी आम है कि जार्ज बुश इन कंपनियों और इन कंपनियों के साथ कारोबार में भागीदार उनके कुछ मंत्रिमण्डलीय सदस्यों के प्रति एहसान चुका सकेंगे। इस बीच अमेरिका के राष्ट्रपति जार्ज बुश ने दुनिया भर में इराकी धन जब्त करने का अभियान छेड़ने के क्रम में अमेरिकी देशभक्ति कानून के तहत प्रदत भारी शक्तियों का इस्तेमाल करते हुए वित्त विभाग को आदेश दिया कि 18 अमेरिकी बैंकों में रोकी गयी एक अरब 4 करोड़ डॉलर की राशि को जब्त कर उसे इराक में इस्तेमाल के लिए अमेरिकी सरकार के खाते में जमा कर दें। अन्य देशों में करीब 60 करोड़ डॉलर का इराकी धन जब्त है। सबसे अधिक ब्रिटेन में करीब 40 करोड़ डॉलर की राशि जब्त है। अन्य देश हैं- बहामा, जापान, सीनेगल, मिस्र, जर्मनी और बहरीन।

दुनिया की तमाम देशों की आपत्तियों व संयुक्त राष्ट्र संघ की अनदेखी कर हठधर्मिता पर उतारू अमेरिका की इराक पर सैन्य कार्रवाई से विश्व भर के देशों में आक्रोश बढ़ता जा रहा है। और तो और अमेरिका तथा ब्रिटेन में भी इस हमले के विरोध में लोग सड़कों पर उतर आए हैं। कई देशों में अमेरिकी दूतावासों को घेराव कर विरोध का इजहार किया गया है। भारत सहित सेन फ्रांसिस्को, बोस्टनख शिकागो, न्यूयार्क, कैलिफोर्निया, वाशिंगटन, आस्ट्रेलिया, पाकिस्तान, फ्रांस, चीन तथा रूस आदि देशों में हजारों की संख्या में लोगों ने प्रदर्शन कर हमले का विरोध किया है। फ्रांस के सीन नदी के तट पर लगभग 80000 लोग इकट्ठा होकर नारे लगाए - 'बुश की लड़ाई लोकतंत्र के लिए नहीं हैं, यह तानाशाही के लिए लड़ी जा रही है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि अमेरिका ने इराक पर हमला कर एक ओर जहाँ तानाशाह सद्दाम हुसैन के प्रति दुनिया भर में सहानुभूति प्रकट करने के लिए प्रेरित किया वहीं अपने देशवासियों की जनतांत्रिक पहचान छीन ली है और उसकी लोकतांत्रिक पहचान

खतरे में पड़ गयी। सच तो यह है कि विश्व के समक्ष एक बात फिर अमेरिका का खौफनाक सामाज्यवादी चेहरा सामने आ गया है। इराक पर अमेरिका द्वारा किए गए इस हमले से यह साबित हो गया है कि द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापान पर अणुबम गिरानेवाले अमेरिका की सोच का स्तर आज भी जस की तस है। जार्ज बुश के लिए राष्ट्रीय संप्रभुता और लोकतांत्रिक अवधारणा अपनी विस्तारवादी योजना को कार्य रूप देने के औजार भर है।

यह बात ठीक है कि सद्दाम हुसैन भी तानाशाह के रूप में काम कर रहे हैं और उनका शासन काल भी सराहनीय नहीं है किंतु इस परिप्रेक्ष्य में अमेरिका की सैन्य कार्रवाई को उचित नहीं ठहराया जा सकता है। रूस तथा चीन सरीखे देश भी अमेरिका की इस कार्रवाई को अतर्राष्ट्रीय कानून का उल्लंघन करार दिए हैं। अमेरिका ने अपने हमले से सद्दाम के तमाम गुनाह धो दिए। भले ही बुश की नजर में यह युद्ध इराक में एक तानाशाही के खात्मे का युद्ध हो, लेकिन हकीकत कुछ और है। बल्कि सच कहा जाए तो यह युद्ध डॉलर की तानाशाही का है यह युद्ध अमेरिका की उस मुद्रा महाशक्ति के रुतबे को बरकरार रखने का उपाय है जो पिछले कई दशकों से अस्तित्व में है। कहा जाता है कि इस समय अमेरिका की अर्थव्यवस्था दुनिया की सबसे बदतर अर्थव्यवस्था हो चुकी है। अगस्त 2002 में अमेरिका पर राष्ट्रीय कर्ज 6161 अरब डॉलर था। इसका अर्थ यह हुआ कि हर अमेरिकी नागरिक पर 20 हजार डॉलर का कर्ज है। अमेरिकी उपभोक्ताओं का कर्ज सन् 2000 के 450 अरब से बढ़कर जून 2002 में 1713 अरब डॉलर तक पहुँच चुका था। इसके बावजूद दुनिया का हर देश अपने विदेशी रिजर्व के नाम पर डॉलर का गुणगान करता है। अरअसल अमेरिका नहीं चाहता कि डॉलर की इस नकली ताकत का भंडाफोड़ हो जाए। डॉलर की ताकत का पर्दाफाश न हों, इसके लिए भी युद्ध जरूरी है।

इसके बावजूद भी इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि युद्ध का एक बड़ा कारण तेल भी है क्योंकि तमाम विज्ञान पर आधारित उन्नति के बाद भी प्रगति की मौजूदा सभ्यता उर्जा पर आधारित है और उर्जा का सबसे बड़ा स्रोत तेल है। इसलिए अमेरिका यह कतई नहीं चाहता कि मौजूदा विकास की इस सभ्यता के शीर्ष पर किसी और का कब्जा रहे। अमेरिका अगर मध्य पूर्व तेल पर पूरी तरह से कब्जा नहीं रख सकेगा

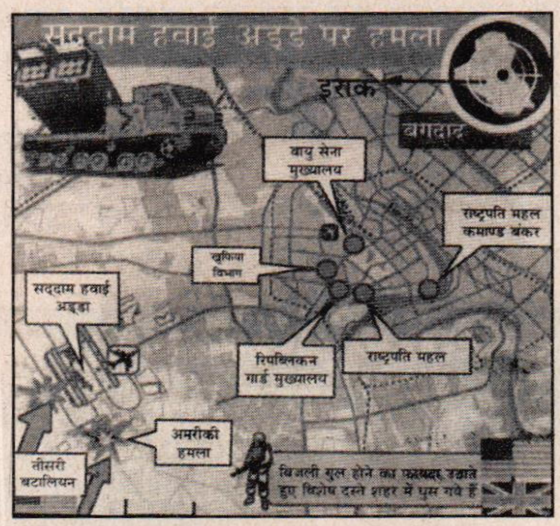

तो दुनिया में उसके मौजूदा प्रभाव विस्तार की समाप्ति हो जाएगी। जापान हर साल अमेरिका को लगभग 50 अरब डॉलर किसी न किसी बहाने देता है। यह बड़ी धनराशि अमेरिका को जापान के लिए तेल की आपूर्ति की निरंतरता बनाए रखने और उसे सुरक्षा उपलब्ध कराए जाने का एक तरह से शुल्क है। यही कारण है कि न चाहते हुए भी जापान इस युद्ध में अमेरिका के साथ है। इसलिए आज अपने सारे कुतर्कों के बल पर अमेरिका ने इराकी हमले को सत्य कहा है। सचमुच अपने को श्रेष्ठ कहलाने की इच्छा जब-जब जिसमें बलबती हुई है तब-तब सारे आदर्श, नियमों को ताक पर रखकर मानवता विरोधी कार्य किया है और अपने कुतर्कों से उसे सत्य कहने का दुस्साहस भी।

अमेरिका के इन्हीं सब घिनौनी हरकतों की वजह से अंग्रेजी के सुप्रसिद्ध लेखक सैमुएल जॉनसन, जिनकी जीवनी लिखकर बासवेल भी अमर हो गए, का कहना था कि मैं पूरी मानव जाति से प्यार करने का इच्छुक हूँ- सिवाय किसी अमेरिकी के। इसी प्रकार फ्रांस के प्रधानमंत्री और पत्रकार जॉर्जेस क्लेमेंस्यू की टिप्पणी है कि इतिहास में अमेरिका अकेला राष्ट्र है जिसने चमत्कारिक रूप से बर्बरता से सीधे क्षयशीलता तक का सफर किया है- सभ्यता के पड़ाव से गुजरे बिना। विश्व प्रसिद्ध इतिहास वेत्ता अरनॉल्ड टायनबी के मतानुसार अमेरिका एक बहुत ही छोटे से कमरे में एक बड़ा सा दोस्ताना कुत्ता है। वह जब भी अपने दुम हिलाता है, यह किसी न किसी कुरसी से टकरा जाती है।

जिस तरह से इराक पर अमेरिकी बमों की बरसात जारी है उसे देखते हुए बुश की तमाम मानवतावादी बातें शांतिवादियों के गले नहीं उतर रही हैं। अफ्रीका और एशिया के देश भी अपने आपको ठगा सा महसूस कर रहे हैं। विश्व बंधुत्व की भावना पर से उनका यकीन उठने लगा है। बुश की इराक नीति का सबसे नकारात्मक प्रभाव यूरोप के एकीकरण पर पड़ा है।

इराकी युद्ध के दूसरे चरण में पहुँचे अमेरिकी आक्रमण में विश्व का सबसे आधुनिक व घातक लड़ाकू हेलीकाप्टर अपाची ए एच 64 तैयार है जिसमें 30 मि०मी० की स्वचालित तोप होती है और यह 1200 राउण्ड गोले दाग सकती है। अपाच के अंदर लगे कम्प्यूटर द्वारा शत्रु के ठिकानों की समीक्षा कर रणनीति बनाई जाती है फिर संयोजि आक्रमण की कार्रवाई की जाती है। इसके बाद दुश्मन सिर्फ लाचारी की मुद्रा में दिखता है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि विध्वंसक गोलों के धमाके से बगदाद व बसर शहर थर्रा रहा है। अभी तक इराक की तरफ से किसी जैविक या रासायनिक हथियार

का प्रयोग नहीं किया गया है किंतु जिस देश की संप्रभुता पर खतरा सामने हो वह सक्षम होने पर किसी भी प्रतिकार में हिचकेगा नहीं। अमेरिका और ब्रिटेन अपनी शक्ति के बल पर भले ही इराक को तबाह कर दें और उस पर कब्जा कर अपने मन के माफिक कठ पुतली सरकार का गठन करा ले पर बाकी जनतांत्रिक देश उनके द्वारा स्थापित कठपुतली सरकार को मान्यता नहीं देकर उन्हें सबक सिखा सकते हैं। शब्दों के जाल मं फंसकर भारत ने अभी तक सभी दलों से सहमति प्राप्त कर कोई निर्णय नहीं ले सका है यह दुर्भाण्य है। ऐसे समय में सोच समझकर ही सभी अपने हित को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार के लिए कुछ न कुछ निर्णय लेना उचित जान पड़ता है। कारण कि यदि उदारवादी सद्दाम के पतन बाद कट्टर पंथी नयी कठपुतली इस्लालिम सरकार बनती है तो कश्मीर के जेहादियों को आर्थिक-मनोवैज्ञानिक समर्थक देकर भारत में आतंकवाद को और हवा दी जा सकती है। विदित हो कि मुस्लिम देशों में इराक कश्मीर मसले पर भारत का खुलकर समर्थन करता रहा है। सद्दाम के पतन से भारत अंतर्राष्ट्रीय मंच पर एक विश्वस्त दोस्त खो देगा। तेल कुँओं में आग लगने तथा कच्चे तेल की कीमत बढ़ने से भी भारत को आर्थिक क्षति पहुँचेगी। इसके अतिरिक्त प्रवासी भारतीय प्रतिवर्ष 6 अरब डॉलर भेजनेवाले मध्य-पूर्व में बसे 31 लाख प्रवासी भारतीय असुरक्षित होंगे। इसका सीधा प्रभाव विदेशी मुद्रा भण्डार पर पड़ेगा। शक्ति संतुलन खाड़ी में अमेरिका को पैर जमाने का एक नया अड्डा मिला तो पाकिस्तान मजबूत होगा और मजबूत पाकिस्तान भारत के हित में कतई नहीं है।

अमेरिका के नेतृत्व में इराक पर हुए हमले में अबतक 72 अमेरिकी और ब्रिटिश सैनिक हताहत हुए हैं और 70 इराकी सैनिक मारे गए हैं तथा 1100 इराकी नागरिक हताहत हुए हैं। इसके अतिरिक्त दो पत्रकार मारे गए और दो अभी लापता हैं।

सम्पर्क - ई- 2, वृजविहार, गाजियाबाद, उ.प्र.

सद्दाम हुसैन अमेरिका की आँख की किरकिरी

अमेरिका की आँख की किरकिरी बन चुके 66 वर्षीय सद्दाम हुसैन पोस्टरों के रूप में ही सही, इराक में हर तरफ दिखाई देते हैं। सद्दाम को समाप्त करने के लिए 1991 में जार्ज बुश सिनियर ने मोर्चा बाँधा था और अब 2003 में उनके पुत्र जुनियर जार्ज बुश मैदान में हैं। 28 अप्रैल, 1937 को इराक के तिकरित में जन्में सद्दाम बगदाद विश्वविद्यालय से विधि स्नातक हैं। उनके परिवार में उनकी पत्नी साजिदा खैर अल्लाह के अतिरिक्त में उदाई हुसैन और कुशाई हुसैन दो पुत्र तथा दो बेटियां हैं। 1957 में बॉथ पार्टी की सदस्यता ग्रहण करने के बाद रिवोल्यूशनरी कमाण्ड कॉसिल के लगातार किसी न किसी पद पर आगे बढ़ते हुए वे 1979 से अब तक इराक के राष्ट्रपति हैं।

गरीब किसान के बेटे सद्दाम हुसैन की उदारवादी और दयालु छबि इराकी जनता को सहज ही आकर्षित करती है। प्रथम खाड़ी युद्ध से पूर्व सद्दाम को इराक की हर मुसीबत जदा जगह पर सबसे पहले देखा जाता था। 1991 के बाद सुरक्षा कारणों से उनका मिलना जुलना सीमित हो गया लेकिन सद्दाम आज भी इराक के कुर्द भाग को छोड़कर सर्वमान्य और सर्वप्रिय नेता हैं।

सुनने में यह भी आ रहा है कि इराक युद्ध को उकसाने में ओसामा बिन लादेन की ही चाल है ताकि अमेरिकियों का ध्यान उस पर से हटाकर सद्दाम पर चला जाए। लेकिन जहाँ तक लोकप्रियता का सवाल है सद्दाम हुसैन लादेन को पीछे छोड़ते नजर आ रहे हैं। दोनों में एक अंतर यह भी हैं कि लादेन लापता है जबकि सद्दाम सामने है।

कुवैती केरलवासियों में भारत लौटने की होड़

'सेंटर फॉर डेवलपमेंट स्टडीज' नामक संगठन के मुताबिक कुवैत में लगभग 75 हजार केरल के वासी रहते हैं। केरल के आप्रवासी केरलियों के मामले में मंत्री एम०एम०हसन इस आँकड़े को दो लाख मानते हैं। कुवैत के विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले केरलवासियों को ऐसी आशंका है कि चुकी अमेरिका द्वारा इराक पर किए गए हमले कुवैत के रास्ते से है इसलिए इस हमले का मुँहतोड़ जवाब देने के लिए सद्दाम हुसैन कुवैत पर धावा बोलने का आदेश दे सकते हैं। यही कारण है कि कुवैत में उड़ानों की टिकट हासिल करने के लिए विभिन्न विमान सेवाओं के दफ्तरों के सामने न केवल केरलियों की लंबी कतारें लगी हैं, बल्कि लोगों को टिकट के लिए धक्का-मुक्की करते देखा जा सकता है।

कुवैत से पिछले 20 मार्च को भारत लौटे भारतीयों में 480 केरली शामिल थे। इस जत्थे में शामिल एक केरली ने पत्रकारों को बताया कि कुवैत में गहरा तनाव है और कई एयर लाइंस घबराए हुए लोगों को ब्लैकमेल भी करने लगे हैं। केरल के मंत्री श्री हसन ने प्रधानमंत्री से अपील की है कि वे कुवैत स्थित भारतीय दूतावास और मध्यपूर्व के बीच एक हॉटलाइन प्रारंभ करने का निर्देश दें। कुवैत से लौटे भारतीयों का कहना है कि कुवैत पर संभावित इराकी हमले को देखते हुए हजारों केरली कुवैत छोड़ने के लिए अपने बोरिया-बिस्तर बाँध चुके हैं।

इराक: अतीत और वर्तमान

❑ धनंजय श्रोत्रिय

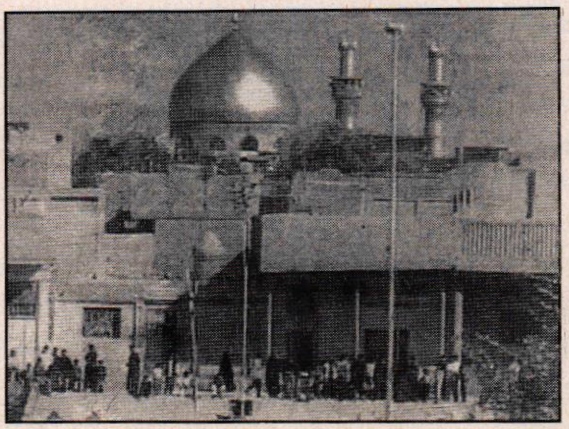

इराक आज एक ऐसा राष्ट्र है जो कभी अपनी समृद्धि की गाथा कहता था, परंतु अब वह युद्ध की मार और विश्व समुदाय से अलग थलग पड़ने की वजह से विपन्नता की ओर अग्रसर है।

तो आइए, एक नजर डालते हैं उसके अतीत और वर्तमान पर। अमेरिकी सेनाओं से तबाह इराक को कभी कला कौशल, उद्योग धंधे, व्यापार और सभ्यता-संस्कृति का केंद्र माना जाता था। तुर्की, सीरिया, जार्डन, सऊदी अरब, कुवैत और फारस की खाड़ी से घिरे तथा किसी दौर में दजला और 'फरात' जैसी महान नदियों वाले इस देश के मेसोपोटामिया के उपजाऊ मैदानों में ईसा से भी साढ़े तीन हजार साल पहले सुमेरी सभ्यता कायम थी। बाद के वर्षों में बाबली, असुरिया, खल्दी और अब्बासी साम्राज्यों की तरक्की अबतक की मिसाल है। बेबिलोन के झूलते बगीचे इसलामी तीर्थ करबला का मैदान, बसरा का बाजार और बगदाद की रौनक हमेशा ही दुनिया भर के लोगों को आकर्षित करती रही। इराक में तेल के अकूत भंडारों के मिलने से पहले भी संसार का 90 प्रतिशत खजूर अकेले यहीं पैदा होता रहा। यही कारण था कि यूनानियों और रोमनों के आक्रमण के बाद जब इसलाम यहाँ पनपा, तब खलीफा ने भी अरब साम्राज्य की राजधानी बगदाद को ही बनाया।

मंगोलों, तातारियों, ईरानियों, खुर्दो और तुर्की की लड़ाई में इराक इतनी बार उजड़ा कि इसे 'साम्राज्यों का खंडहर ही कहा जाने लगा। बाद के दिनों में अंग्रेजों, जर्मनों और अमेरिकियों ने भी इस पर निशाना साधा और यह सिलसिला आज भी जारी है।

इराक पर यह नौबत कैसे आई इसे जानने के लिए हमें इसके अतीत में जाना होगा। 1990 के करीब जब सद्दाम हुसैन ने इराक की दयनीय स्थिति सुधारने के लिए पड़ोसी देश कुवैत पर न केवल कब्जा किया, बल्कि उसे अपना 19 वाँ राज्य घोषित कर दिया। बस क्या था, यहीं से अमेरिका की भृकुटि तनी और 2 अगस्त, 1990 को इराक की इस हरकत के जवाब में अमेरिका ने पहले तो संयुक्त राष्ट्र संघ के माध्यम से उस पर दबाव बनाया और जब बात नहीं बन पाई, तो 17 जनवरी 1991 को इराक पर हमला कर दिया। उस समय वर्तमान राष्ट्रपति जार्ज डब्लू बुश के पिता सिनियर बुश अमेरिका के राष्ट्रपति थे जिनका दावा था सद्दाम को खदेड़ कर ही अब लौटेंगे। इसके उत्तर में सद्दाम हुसैन की दहाड़ थी, 'बुश के शैतानी इरादों को कुचल देंगे। 43 दिनों तक चली इस लड़ाई के बाद इराक ने हथियार डाले और वह कुवैत से पीछे हट गए। कहा जाता है कि इस लड़ाई में 80 हजार से अधिक लोगों को अपनी जानें गंवानी पड़ी। उस समय इराक ने संयुक्त राष्ट्र संघ के सभी प्रस्तावों को मानने का आश्वासन ही नहीं दिया, बल्कि उसे माना भी किंतु 1998 में एक बार फिर अमेरिका व इराक का अहं टकरा गया। उस समय अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने भी इराक को सबक सिखाने का प्रयास किया था, पर संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव कोफी अन्नान की कोशिशों के पश्चात उन्हें अपने पैर पीछे खींचने पड़े थे। हॉलाकि अमेरिका के लड़ाकू जहाजों ने तब तक इराक पर हमला बोल कर 4 दिनां की गोलीबारी में सद्दाम हुसैन के महल को भी निशाना बनाया था।

इराक की सतारूढ़ बाथ पार्टी के नजदीक रहने वाले इराकी समाज अपेक्षाकृत संपंन्न हैं। तमाम प्रतिबंधों के बावजूद यह वर्ग तस्करी के सहारे अपनी सुख-सुविधा का सामान हासिल करने में समर्थ रहता है। इस वर्ग के अतिरिक्त 60 प्रतिशत से अधिक आबादी किसी तरह खाद्य सामग्री हासिल कर पाती है। स्वावलंबी इराकी महिलाएँ चिकित्सक, इंजीनियर, अधिवक्ता तथा शिक्षिकाओं के रूप में काम करती हैं।

इराक का करीब तीन चौथाई समाज 150 विभिन्न कबीलाई गुटों में विभाजित है। सत्ता पर काबिज रहने की खातिर सद्दाम को इन कबीलाई जातियों का खास ख्याल रखना पड़ता है। 60 लाख की आबादी वाला बगदाद आधुनिक विचारों को अपनाती एक परिवर्तनशील इराक की राजधानी है जहाँ साफ पीने का पानी, निर्बाध बिजली आपूर्ति और हर सुख सुविधा मौजूद थी परंतु अब स्थिति यह है कि मध्यम वर्ग अपनी रोजी-रोटी के लिए निरंतर संघर्षरत हैं। एक सरकारी कर्मचारी की मासिक औसत आय सिर्फ 5 डॉलर है। कभी इस्लामिक देशों के लिए शिक्षा का गढ़ मानेजाने वाले इराक में अब एक चौथाई बच्चे प्राथमिक शिक्षा भी मुश्किल से हासिल कर पाते हैं।

राजधानी बगदाद शहर की गलियों में आज बस सन्नाटा ही सन्नाटा नजर आता है। अमेरिकी मिसाइलों और तोपों की धमाकों से उसके आसमान धूल और बारूद के बादलों से ढका है। बचाव के लिए बनायी गयी दीवार पर विमान रोधी तोपें निरंतर आग उगलती देखी जा रही है। 1980-88 के इराक-ईरान युद्ध और 1991 में हुए खाड़ी युद्ध की लपटों से अब तक इराक उबर भी नहीं पाया था कि 2003 में अमेरिका ने उसे तेल के लिए खूनी खेल में झोंक दिया। इराक की 55 प्रतिशत आबादी सिया समाज की है जो सद्दाम के विरोधी कहे जाते हैं। ❑

संपर्क: 31-3/7 एम आई जी, बहादुरपुर
हाउसिंग कॉलोनी, पटना-20

इराक जंग पर विश्व दंग

❑ सुधीर रंजन

बुश के द्वारा सद्दाम हुसैन को अपने बेटों सहित इराक छोड़ देने के 48 घंटे के अल्टीमेटम पार होने के मात्र दो घंटे बाद ही अमेरिका ने इराक पर हमला शुरू कर दिया। बुश का कहना है कि उनके साथ विश्व के 35 देश हैं और उन्हें दुश्मन से कोई सहानुभूति नहीं। बगदाद में सद्दाम हुसैन को टारगेट कर हमला किया गया। प्रारंभ में ही खाड़ी से कुल 40 मिसाइलें दागी गई। इराक पर हमलों में कुल एफ 117 बमवर्ष के युद्धक विमानों का प्रयोग किया गया। बगदाद का आसमान विमानभेदी तोपों के शोर से गुँज उठा। खाड़ी से भारतीय नागरिकों की वापसी हो गयी। इराक के हमले में क्रुज मिसाइलों का इस्तेमाल किया गया। इराकी रेडियो का कहना है कि उन्हें इसी दिन का इंतजार था। दूसरी ओर बुश का कहना है कि वह इराकी को आजादी दिला कर ही रहेंगे।

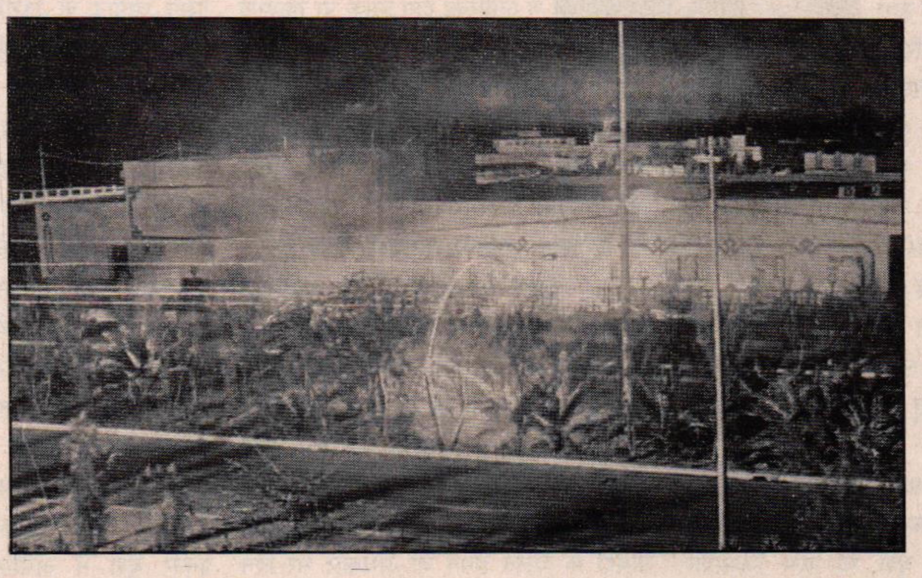

इराक पर हुए हमले में वहाँ कुछ खास नेताओं को निशाना बनाया गया। बुश के अनुसार हमले में इराक के कुछ चुनिंदा ठिकानों को भी निशाना बनाया गया। इराक के पास 380 हजार सैनिक हैं। इराक ने जबाबी कार्रवाई में विमान भेदी तोपें दागीं। विदित हो कि इराक की सत्ता पर सद्दाम हुसैन का पिछले 30 वर्षों से कब्जा कायम है।

बुश का कहना है कि सद्दाम को हटाने के सिबाय इराक में उन्हें किसी चीज से दिलचस्पी नहीं। हमले के पहले दिन सद्दाम ने अपने देशवासियों के नाम संबोधन में कहा कि हम आखिरी दम तक अमेरिकियों को हलाल करेंगे। अमेरिकियों को उनके अंजाम तक पहुँचाया जाएगा। हम हमलावरों को एक सबक सिखाएंगे।

अमेरिका के राष्ट्रपति जार्ज डब्ल्यू बुश ने इराक पर किए गए इस जंग को 'ऑपरेशन इराकी फ्रीडम' नाम दिया है। आपको याद होगा 1991 में इराक पर किए हमले को अमेरिका ने ऑपरेशन डेजर्ट फ्रीडम नाम दिया था। भारत के उपराष्ट्रपति भैरों सिंह शेखावत ने इस हमले को दुर्भाग्यपूर्ण बताया है। बहरीन ने सद्दाम हुसैन को अपने यहाँ शरण देने की पेशकश की है। सद्दाम हुसैन ने अपने देश वासियों के नाम संदेश में कहा है कि हमारे देशवासी इराक के सैनिकों की कुर्बानी को याद रखेंगे। चीन ने तुरंत लड़ाई रोकने की माँग की। इराक पर हुए हमले का असर भारत पर हमले के प्रथम दिन ही यह दिखा कि इंडियन एयर लाइंस ने हवाई यात्रा के किराए 15 प्रतिशत बढ़ा दिए। स्टॉक मार्केट में कीमतें बढ़ सकती हैं।

साउदी अरब के बाद सबसे ज्यादा तेल का भंडार इराक में है। कहा जाता है कि इसी तेल के चलते अमेरिका ने यह जंग भी छेड़ा है। आप इस बात से अवगत होंगे कि अमेरिका में जो दो-तीन तेल पुरूष हैं उनमें जार्ज बुश भी है। राष्ट्रपति होने के पूर्व वे भी तेल पुरुष रहे हैं। अजीबोगरीब बात यह है कि अमेरिका यह कहकर विश्वशांति को खतरा बता रहा है कि इराक में जैविक और रासायनिक हथियारों की भरमार है। सच तो यह है कि स्वयं अमेरिका के पास उन हथियारों की सबसे अधिक संख्या है।

भारत के पूर्व विदेश राज्य मंत्री हरिकिशोर सिंह भी इराक पर अमेरिकी हमले को उसकी दादागिरी मानते हैं। यह इराक के तेल भंडार पर कब्जे की लड़ाई है। जूनियर बुश अपने पिता के अधूरे काम को पूरा करना चाहते हैं। उनका मानना है कि इराक पर हमले से आतंकवाद नहीं घटेगा, बल्कि और बढ़ेगा। छिट फुट ही सही अमेरिका को भी इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी। श्री सिंह का अनुमान है कि अमेरिका

केवल सद्दाम को हटाने भर से संतोष नहीं करेगा, वह इराक पर कब्जा करेगा।

विश्व का जनमत इस अमरीकी हमले के खिलाफ एकजुट होने पर भी अमेरिका ने इस तथ्य की बिल्कुल परवाह नहीं किया। और तो और संयुक्त राष्ट्र संघ की प्रभुसत्ता को भी वह चुनौती दे गया। अमेरिका को अपने अहं की तुष्टि के बजाय विश्व में घटती हुई लोकप्रियता पर गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। अमेरिका को यह नहीं भुलना चाहिए कि जो देश इराक मसले पर अमेरिका का खुलकर विरोध कर रहे हैं वे कल मैदान में भी उतर सकते हैं। अमेरिका द्वारा इराक पर हमले से यह स्पष्ट हो गया है कि अमेरिका अपने हित साधने तथा अपनी चौधराहट को चमकाएं रखने के लिए कुछ भी कर सकता है। उसे इराक तो नजर आ रहा है परंतु पाकिस्तान, नजर नहीं आ रहा, जहाँ आतंकवाद को पोषित-पल्लवित किया जा रहा है। अलकायदा और लादेन तो उसकी पकड़ में नहीं आए परंतु अपनी सेना वहाँ जमा ली।

सन् 1991 से लेकर आज तक खाड़ी संकट बरकरार है। इसके लिए पूर्व राष्ट्रपति सिनियर बुश भी कम जिम्मेदार नहीं हैं। जब इराक पर कुबैत का बहाना लेकर हमला बोला गया तो इस एकतरफा युद्ध में कई यूरोपीय देशों ने उनका साथ दिया। असंख्य तेल कुओं में आग लगा दी गयी। भारी जान-माल का नुकसान हुआ। अब एक बार पुनः उन्हीं के पुत्र जुनियर बुश मानव सुरक्षा के नाम पर इराक पर रासायनिक हथियारों की आड़ में हमला कर दिया। जबकि सच तो यह है कि स्वयं अमरीका और अन्य बड़ी ताकतों के पास ये हथियार इराक से कहीं अधिक मारक और विनाशक हैं। दरअसल अमरीका की नजर इराक के अकूत तेल भंडारों पर है जिन पर वह कब्जा करना चाहता है। इसलिए वह साम, दाम, दंड, भेद की नीति अपनाकर अपना उल्लू सीधा करना चाहता है। अमरीका की इराक विरोधी तानाशाही व पक्षपातपूर्ण नीतियों को देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद की भावनाओं और प्रस्तावों को दर किनार करते हुए अमरीका ने इराक को तबाह करने का जो निर्णय लिया है उससे स्पष्ट है कि अमेरिका तानाशाही पर उतर आया है। ऐसी परिस्थिति में विश्व समुदाय को इराक की संप्रभुता की रक्षा के लिए आगे आना चाहिए। क्योंकि संयुक्त राष्ट्र संघ ने अमेरिका द्वारा इराक पर किएगए इस हमले को आतंकवाद के खिलाफ हमला कहने से इनकार कर दिया है। किंतु अमेरिका खाड़ी के देशों को अतंकवाद का अड्डा मानता है। दूसरी ओर सद्दाम ने अमेरीकी हमले को मानवता के खिलाफ शर्मनाम कार्रवाई बताई है।

इराक का कहना है कि जार्ज बुश अपनी निजी खुन्नस निकालना चाहते हैं और सद्दाम हुसैन को हटाने के लिए इस तरह के आरोप लगा रहे हैं। राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन का कहना था, 'हमारे बूढ़े और बच्चे दवाओं और जरूरी सामानों की कमी के चलते मर रहे हैं। पिछले 13 सालों में माली पाबंदी के चलते हमने जो अंधकार भरे दिन बिताए हैं, उसकी आप कल्पना तक नहीं कर सकते। ऐसे में हम हथियार क्या बनाएंगे. ...... फिर भी अगर हम पर लड़ाई थोपी गई तो हम न्याय की जंग जरूर लड़ेंगे, जिस पर हमारा भरोसा है।'

सच तो यह है कि अमेरिका और इराक को एक दूसरे पर भरोसा न होना ही इस युद्ध की जड़ है। यहां यह काबिले गौर है कि 1991 के ठीक विपरीत इस बार अमेरिका के साथ ब्रिटेन, स्पेन, जापान जैसे कुछ खास साथियों को छोड़ पूरी दुनिया उसके खिलाफ खड़ी है। एक ओर जहां पूरी दुनियां भर के लाखों लोगों द्वारा अमेरिका विरोधी रैलियां व जुलूस निकाले गए हैं, वहीं दूसरी ओर हैंस ब्लिक्स की रिपोर्ट में इराक में बरबादी के किसी बड़े हथियार के न होने की बात कही गई है।

स्वयं अमेरिका में ही 100 से ज्यादा शहरों से लाखों अमेरिकी नागरिकों ने पिछले दिनों व्हाइट हाउस के चारों ओर एकत्र होकर युद्ध विरोधी रैली निकाली। अमेरिका के अलावा यूरोप, एशिया और मध्य एशिया के लाखों लोगों ने युद्ध विरोधी रैलियां निकाली।

अमेरिका ने अबतक बीस देशों पर बमबारी की है जिनमें वियतनाम, कोरिया, लीबिया, क्यूबा, फिलीस्तीन, इराक, अफगानिस्तान आदि शामिल हैं। 1945 में इसने जापान के हिरोशिमा एवं नागासाकी पर एटमबम गिराए थे जिसकी तबाही से सारी दुनिया अवगत है। और अब पुनः आतंकवादी को खत्म करने के नाम पर अमेरिका ने इराक पर हमला किया है। आपको याद होगा इसी अमेरिका ने ओसामा बिन लादेन और उसके अलकायदा संगठन को माल मदद, फौजी प्रशिक्षण तथा कई तरह के हथियार दिए थे। 1996 में तालिबान के अफगानिस्तान पर सतारूढ़ होने के बाद अमेरिका ने आपत्ति नहीं जताई थी, आज वही अमेरिका इराक को हिरोशिमा और नागासाकी बनाकर विश्व पर तीसरा विश्व युद्ध थोपने पर उतारू है। लेकिन जिस प्रकार बुश ने अमेरिकी कांग्रेस से इस इराकी युद्ध के वास्ते 75 अरब डॉलर की मांग की है और अमेरीकी जनता सहित विश्व के अधिकतर देशों के नागरिकों ने अमेरिका की इस कार्रवाई की भर्त्सना की है और इसके विरोध में रैलियां व प्रदर्शन किए हैं, बुश और ब्लेयर के मंसूबे पूरे नहीं दिखते। सच तो यह है कि इन दोनों राजनीतिज्ञों को अपनी साख बचाने के लिए भी काफी प्रयास करे होंगे।

संपर्क :-प्रबंध संपादक, विचार दृष्टि

मतदाताओं का अधिकार बरकरार

सर्वोच्च न्यायालय का ऐतिहासिक फैसला

प्रस्तुति : राजेश रोशन

सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति एम बी शाह, पीवी रेड्डी और डीम धर्माधिकारी की एक तीन सदस्यीय खंडपीठ ने पिछले दिनों संसद द्वारा पारित विवादास्पद चुनाव सुधार कानून को असवैधानिक करार देते हुए किसी भी उम्मीदवार के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करने के मतदाताओं के हक को खत्म होने से बचाया। तीनों न्यायधीशों ने अलग-अलग लेकिन एक आशय वाले फैसलों में कहा पिछले वर्ष संसद में पारित जन प्रतिनिधित्व कानून के किए गए संशोधन से मतदाता के सूचना के अधिकारों की कटौती होती है जिसकी उसे अपना पसंद का उम्मीदवाद चुनते समय जरूरत पड़ती है। उम्मीदवार के बारे में पूरी जानकारी के वगैर मतदान के अधिकार का मतलब ही महत्वहीन हो जाएगा।

विहित हो कि सर्वोच्च न्यायालय ने गत वर्ष 2 मई के आदेश में स्पष्ट कहा था कि प्रत्याशियों के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करना मतदाताओं का अधिकार है। उन्हें यह मालूम होना चाहिए कि वे जिसे चुनने जा रहे हैं वे क्या हैं? इसलिए पर्चा दाखिल किए जाते वक्त ही चुनाव आयोग के समक्ष स्वयं अपने जीवन साथी तथा आश्रितों की संपत्ति शैक्षणिक योग्यता के साथ ही अपने आपराधिक (अगर कोई हो तो) का पूरा ब्योरा देना होगा। इस आदेश के बाद चुनाव आयोग ने इस आशय की एक अधिसूचना जारी कर दी थी, किंतु सभी राजनीतिक दलों ने एक स्वर से इस पर असहमति जारी जाहिर करते हुए संसद के अधिकार पर इसे हनन बताया और अगस्त में सरकार ने आनन-फानन में जन प्रतिनिधित्व (संशोधन) अध्यादेश लागू कर ब्योरा दिए जाने का नियम बदल दिया। यही अध्यादेश बाद में कानून भी बन गया। सच तो यह है कि सर्वोच्च न्यायालय द्वारा 2 मई को दिए गए निर्णय का उद्देश्य लोकतंत्र को अवांछित तत्वों से मुक्ति दिलाना और देश को एक योग्य विधायिका प्रदान करना था। न्यायमूर्ति शाह ने पूछा 'क्या यह जरूरी है कि मतदाता को इस बारे में अँधेरे में रखा जाए कि उसका उम्मीदवार हत्या, डकैती, अथवा बलात्कार के मामले में लिप्त है या नहीं अथवा उसने अवैध तरीके से धन जुटाया है, जिसका इस्तेमाल वह चुनाव में कर सकता है। क्या यह जरूरी नहीं है कि उम्मीदवार अपनी और परिसंपत्तियाँ घोषित करे और क्या इन घोषणाओं के जरिए चुनाव में बिना हिसाब-किताब के धन पर नियंत्रण करने में मदद नहीं मिलेगी।

सर्वोच्च न्यायालय के इस निर्णय के साथ ही उम्मीदवार को अब अपना नामांकन पत्र भरते समय निम्नलिखित पाँच सूचनाएँ देनी अनिवार्य हो गयी है-

1.क्या उम्मीदवार को पहले किसी आपराधिक मामले में दोषी ठहराया गया है, दोष मुक्त किया गया है अथवा बरी किया गया है। अगर ऐसा है तो क्या उसे जेल की सजा अथवा जुर्माना किया गया है?

2. नामांकन पत्र भरने से छह महीने पहले क्या उम्मीदवार किसी ऐसे अपराध के लंबित मामले में आरोपी ठहराया गया है जिसमें दो या उससे अधिक साल की जेल की सजा का प्रावधान हो।

3. उम्मीदवार और उसके पति अथवा पत्नी तथा आश्रितों की परिसंपत्तियाँ, चल-अचल बैंक बैंलेस आदि।

4. उम्मीदवार की देनदारियाँ यदि कोई हो तो और विशेषकर क्या किसी सार्वजनिक वित्तीय संस्थान अथवा सरकार की देनदारी बाकी है।

5. उम्मीदवार की शैक्षिक योग्यता की जानकारी।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि देश के एक लंबे अरसे से चुनाव सुधार के मुद्दे पर बहस जारी है क्योंकि राजनीति में अपराधियों, बाहुबलियों एवं धनपशुओं का बोलवाला होने से सैधांतिक तौर पर प्राय: सभी राजनीतिक पार्टियाँ चिंता तो जताते हैं किंतु जब इस दिशा में कोई सकारात्मक कदम उठता दिखता है तो उसमें अड़चने पैदा करने से नहीं चुकते। कारण कि सभी दलों में अपराधियों के प्रवेश से चुनाव प्रक्रिया में ऐसे तत्वों से कई तरह के उपयोग हैं। अगर राजनीतिक दल सचमुच चुनाव सुधार के इच्छुक होते तो सर्वोच्च न्यायालय के दो मई के निर्देश को खुले मन से स्वीकार करने के बजाए सभी राजनीतिक दलों ने न केवल आपत्तियाँ जाहिर की बल्कि सर्वदलीय बैठक बुलाने के बाद जन प्रतिनिधित्व (संशोधन) अधिनियम की रूपरेखा तैयार कर उसे कानून में परिवर्तित किया। लेकिन सर्वोच्च न्यायालय के हाल के फैसले ने सरकार को संकट में डाल दिया है क्योंकि फैसले में यह भी कहा गया है कि संसद को इस बारे में कोई विधायी अधिकार नहीं है कि वह राज्य या उसके सहायकों को अदालत के आदेश न मानने का निर्देश दे।

उल्लेखनीय है कि अहमदाबाद के प्रो० त्रिलोक चंद शास्त्री ने देश में चुनाव सुधारों के तहत चुनाव में नामांकन पत्र भरते समय उम्मीदवारों की आपराधिक पृष्ठ भूमि, उनकी संपत्ति, दायित्वों और शैक्षणिक योग्यता से संबंधित जानकारी हासिल करने के मामले में ऐसोसिएसन ऑफ डेमोक्रेटिक रिफार्म के माध्यम से उच्चत्तम न्यायालय में एक याचिका दायर की है। प्रो० शास्त्री ने पिछले दिनों जबलपुर में चुनाव सुधार विषय की एक कार्यशाला में बताया कि सर्वोच्च न्यायालय के इस ऐतिहासिक फैसले से यह स्पष्ट हो गया है कि देश के राजनीतिक दल नागरिकों के मतदान मौलिक अधिकार का हनन करना चाहते थे। उन्होंने पुन: कहा कि यह अधिकार संसद द्वारा मतदातओं को दान में नहीं दिया गया है। न्यायालय के इस महत्वपूर्ण निर्णय का सही तरीके से क्रियान्वयन होने से देश में चुनाव सुधार प्रक्रिया को नई दिशा मिलने के साथ ही राजनीति में अपराधियों के गठजोड़ को खत्म करने में मदद मिल सकती है।

प्रो० शास्त्री नें आरोप लगाया कि न्यायालय के इस निर्णय के बाद इसका विरोध करनेवाले सत्तापक्ष एवं विपक्षी दलों के नेता

मीडिया के सामने मुँह छिपाते फिर रहे हैं। भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद के प्रो० शास्त्री ने कहा कि देश की सर्वोच्च न्यायिक संस्था सुप्रीम कोर्ट के निर्णय पर कानून बनाना लोकतंत्र में अच्छा संकेत नहीं है। इससे राजनीनिक दलों की किसी भी तरह से सत्ता हासिल करने की मंशा स्पष्ट हो जाती है। उन्होंने पुन: कहा कि सत्ता के माध्यम से विकास के नाम पर किए जाने वाले निर्माण कार्यो के ठेकों में होनेवाले बड़े पैमाने के भ्रष्टाचार और देश की अर्थव्यवस्था को जर्जर करनेवाले राजनेताओं का नाम इस निर्णय के क्रियान्यवयन से काली सूची में डाली जा सकती है। तभी देश के वास्तविक विकास का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा। वर्तमान में विकास के नाम पर सत्तारूढ़ राजनेता तथा सांसद एवं विधायक को विकास के लिए दी जा रही करोंड़ों रुपये की विकास निधि से प्राय: सभी दलों के जनप्रतिनिधि अपना आर्थिक विकास कर रहे हैं। अब तो स्थिति यहाँ तक आ गयी है कि राजनीतिक पार्टियाँ स्वयं इस आशय का आरोप एक दूसरे पर लगा रही हैं। ऊ०प्र० में सपा और बसपा के बीच टेप विवाद इसका ताजा उदाहरण है। यह बात समझ से परे है कि जब उच्चत्तम न्यायालय द्वारा चुनाव सुधार प्रक्रिया में आवश्यक निर्देश चुनाव आयोग को दिया जाता है तो साफ-सुथरी छवि रखनेवाले देश के कुछ राजनेता इस मामले में अपनी पार्टी का क्यों साथ दे रहे हैं।

सांप्रदायिक सद्भाव के लिए

सर्वोच्च न्यायालय का एक और महत्वपूर्ण फैसला

प्रस्तुति : राजेश रोशन

सर्वोच्च न्यायालय ने अयोध्या की अविदादित भूमि पर धर्मिक गतिविधियों पर लागू प्रतिबंध हटाने के केंद्र सरकार की एक याचिका को खारिज करते हुए कहा है कि सांप्रदायिक सद्भाव कायम रखने के अलावा अन्य दायित्वों के निर्वाह के लिए भी जरूरी था। दरअसल केंद्र सरकार द्वारा दायर इस याचिका के पिछे विश्व हिन्दू परिषद का उसपर दबाव था कि गैर विदित भूमि उसे सौंप दें। भाजपा में भी कुछ लोग सरकार पर इस बात का दबाव डाल रहें हैं कि विवादित भूमि सौंपने के बारे में संसद से कानून बनवाये, हालांकि यह व्यावहारिक नहीं है क्योंकि राजग के कुछ घटक दल इसका विरोध करेंगे। इस लिए तमाम दबावों के बावजूद भी केंद्र सरकार को अदालत के फैसले का स्वागत करते हुए कोई ऐसा कदम नहीं उठाना चाहिए जिससे सामाजिक एंव सांप्रदायिक सदभाव पर कोई विपरित असर पड़े। कम-से-कम तीन बड़े मुद्दों पर केंद्र सरकार को देश की सबसे बड़ी अदालत में पराजय का सामना करना पड़ा। पहले 2 सितम्बर 2002 को सर्वोच्च न्यायालय ने गुजरात में नवम्बर या दिसम्बर में चुनाव कराने के चुनाव आयोग के फैसले में दखल देने से इनकार किया। दूसरी बार सर्वोच्च न्यायालय ने अपने एक ऐतिहासिक फैसले में निर्देश दिया कि चुनाव आयोग, चुनाव लड़ने वाले प्रत्येक उम्मीदवार के लिए नामांकन भरते समय उसके आपराधिक चरित्र, उसकी शैक्षणिक पृष्ठभूमि और उसकी वित्तीय स्थिति के बारे में संपूर्ण जानकारी देना अनिवार्य करें। किंतु संसद ने नया कानून पारित कर सर्वोच्च न्यायालय व चुनाव आयोग के आदेशों को किनारे कर दिया। पिछले 13 मार्च को सर्वोच्च न्यायालय ने संसद द्वारा बनाये गए चुनाव सुधार कानून को असंवैधानिक बताते हुए उसे रद्द कर दिया और अपने पुराने आदेश को बहाल कर दिया। 31 मार्च को चुनाव आयोग ने सर्वोच्च न्यायालय के उक्त आदेश के तहत फिर से निर्देश जारी करते हुए उक्त जानकारियां उम्मीदवारों के लिए देना अनिवार्य कर दिया और अब तीसरी बार अयोध्या मसले पर सर्वोच्च न्यायालय में सरकार की किरकिरी हुई।

सम्पर्क : अधिवक्ता, सर्वोच्चय न्यायालय
नई दिल्ली

अमेरिकी दादागिरी के खतरनाक संकेत

इराक पर हमला करने वाले अमेरिका के राष्ट्रपति जॉर्ज बुश का इरादा स्पष्ट है कि वह अपने इशारे पर नाचने वाली किसी कठपुतली सरकार को इराक की बागडोर सौंप कर वहां के अकूत तेल भंडार पर कब्जा कर लें। इराक पर विजय के पश्चात् फारस की खाड़ी क्षेत्र में अमेरिका का डंका बजेगा। यह अमेरिका की दादागिरी नहीं तो और क्या है ? अब सवाल यह उठता है कि विश्व की महाशक्ति होने से अमेरिका की दादागिरी का दुष्परिणाम क्या इतना सहज होगा ? फ्रांस जर्मनी, रूस और चीन सरीखे राष्ट्र क्या अपमान का घूंट पीकर रह जाएंगे ?

अमेरिका सैनिक दादागिरी के जरिए मध्य-पूर्व का नक्शा बदलने और विश्व व्यवस्था को नया रूप देने का एक निर्लज्ज प्रयास कर रहा है। वाशिंगटन आधारित चिंतन निकाय 'प्रोजेक्ट फॉर दि न्यू अमेरिकन सेंचुरी' में बनी योजना की यह इच्छा है कि एक ऐसा अमेरिकी साम्राज्य हो जिसमें केवल अमेरिका को ही वीटो ताकत हासिल हो और केवल उसी का ही राजनीतिक हुक्म चले। अमेरिका के इस निकाय पीएनएसी की योजना किसी भी राष्ट्र की सम्प्रभुता के लिए अत्यंत खतरनाक संकेत है जिससे और राष्ट्रों को सतर्क हो जाना चाहिए।

सद्दाम के बहाने अमेरिका द्वारा इराक पर हुए हमले को कोई भी लोकतांत्रिक देश लोकतंत्र की दिशा में लगाया गया निशाना लगाने को तैयार नहीं है, क्योंकि एशिया, अफ्रीका, लातिन अमेरिका ही नहीं, यूरोपीय देशों में भी सत्ता को हिलाने, अपने पसंदीदा व्यक्ति को सत्तासीन करने, व्यापारिक तथा सामरिक हितों के साथ राजनीतिक गोटियां बैठाने में अमेरिकी शासक प्रत्यक्ष या परोक्ष दाव-पेंच खेलते रहे हैं। यही कारण है कि भारत के प्राय: सभी पूर्व प्रधानमंत्रियों सहित प्रत्येक राजनीतिक दल और यहां की 90% जनता ने एक स्वर से अमेरिका की इस दादागिरी को खतरनाक बताया है। पूर्व उप सेना प्रमुख एन. एस. मलिक ने भी कहा है कि युद्ध के परिणाम से ही पता चलेगा कि अमेरिका का हश्र क्या होगा। वियतनाम जैसा हुआ तो बुश के लिए सत्ता में रहना मुश्किल होगा।

चुनावों का वर्ष 2003

❑ मनोज कुमार

2003 चुनावों का वर्ष है। फरवरी में हिमाचल प्रदेश, त्रिपुरा, मेघालय और नगालैंड में चुनाव हुए और इसके बाद इस साल के आखिर में दिल्ली, छत्तीसगढ़, म०प्र०, राजस्थान तथा महाराष्ट्र में चुनाव होने को हैं। गुजरात विधान सभा चुनाव में भाजपा की अप्रत्याशित जीत के बाद कांग्रेस आने वाले चुनावों में भाजपा तथा उसके सहयोगियों का मुकाबला करने के लिए अन्य धर्मनिरपेक्ष दलों के साथ गठबंधन करेगी, यह उसकी लाचारी भी है। कांग्रेस को मन मारकर धर्मनिरपेक्ष राजनीतिक दलों के साथ एकजुटता की उस जरूरत को स्वीकार करना पड़ रहा है। उधर भाजपा को केंद्र अथवा राज्य सरकारों के खिलाफ उभर रहे भारी जनअसंतोष के दौर में गुजरात की जीत ने उसे हिन्दुत्ववादी चेहरे के कारगर होने का भरोसा दिया है। गुजरात चुनाव में अपने उदार हिन्दुत्व अपनाने की रणनीति के बुरी तरह से विफल होने के बाद भी कांग्रेस सांप्रदायिकता का आमने-सामने से मुकाबला करने की स्थिति में नहीं दिखती है जो उसके लिए आत्मघाती साबित होता।

आगामी चुनावों के मद्देनजर कांग्रेस ने महाराष्ट्र, राजस्थान मंत्रिमंडल में जो हेरफेर किया है वह वही रास्ता है जिसे भाजपा ने सत्ता के लिए अपनाया था। यानी भाजपा ने सत्ता के लिए जिस जातिवाद का सहारा लिया। कांग्रेस उसी रास्ते पर आगे बढ़ रही है। महाराष्ट्र में अनुसूचित जाति के ए०पी० शिंदे को मुख्यमंत्री तथा राजस्थान में जाट जाति के श्रीमती कमला बेनीवाल और अनुसूचित जाति के बनवारी लाल बैरवा को उपमुख्य मंत्री के पद पर बैठाकर कांग्रेस ने भाजपा द्वारा रोपी गई जातिवाद की फसल को सिंचने का ही प्रयास किया है। भाजपा ने भी वसुंधरा राजे सिंधिया को राजस्थान, रमन सिंह को छतीसगढ तथा उमा भारती को मध्य प्रदेश में पार्टी अध्यक्ष के पद पर नियुक्ति करने का आधार जाति ही रही है। दरअसल राष्ट्र की ज्वलंत समस्याओं से जूझने की बजाए कांग्रेसी धर्मनिरपेक्षता और नरम हिन्दुत्व के चक्कर में है। उन्हें सिर्फ यह चिंता है कि नेहरू खानदान का वारिस कौन हो? आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय, बेरोजगारी, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे प्रश्नों पर उनका ध्यान जाना चाहिए था। बंगला देश के लाखों लोगों द्वारा इस देश में किए गए अनधिकृत प्रवेश के संबंध में कांग्रेस का मुँह बंद है, हज यात्रियों पर केंद्र सरकार द्वारा 60 करोड़ रुपये खर्च किए जा रहे हैं और दूसरी ओर नेपाल स्थित पशुपतिनाथ की यात्रा पर कोई खर्च नहीं किया जाता, इस सवाल पर कांग्रेस के लोग मौन हैं। आखिर कांग्रेस के प्रति आम मतदाताओं का रुझान बढ़े तो कैसे? मात्र नकारात्मक वोट पर वह कितने दिनों तक जिवित रह पाएगी, यह उनके लिए अहम प्रश्न है। मजे की बात यह है कि कांग्रेस और भाजपा देश की दो सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण पार्टियां इस मामले में समान रूप से एक जैसी प्रवृत्तियों की शिकार हैं।

भाजपा की पहली परीक्षा छतीसगढ से लेकर राजस्थान, म०प्र० और दिल्ली के विधान सभा चुनावों में होगी जिसमें उसे अपने ही बलबूते लड़ना है और उसके परिणाम ही यह तय करेंगे कि 15-16 महीने बाद होनेवाले लोकसभा चुनावों को भी भाजपा अपने बलबूते लड़ेगी या सहयोगी दलों के साथ मिल कर लड़ेगी। अभी कांग्रेस हो या भाजपा सत्ता का इस्तेमाल बड़ी खूबसूरती से किया है। थोड़े-थोड़े अंतराल पर मुख्यमंत्री को बदलते रहना या मंत्रिमंडल में फेरबदल कर एक शिगूफा छोड़ दिया जाता है और पूरा देश सबकुछ भूलकर उस तमाशे को देखने लगता है। इस प्रकार आम जनता और समानधर्माओं दोनों को उलझाए रखना ही आज की राजनीति का यथार्थ है।

यह बात तो अब किसी से छिपी नहीं है कि भाजपा ने कट्टरवाद हिन्दुत्ववादियों की सुर से सुर मिलाकर कुछ राज्यों के आगामी चुनावों में गुजरात के अनुभव का प्रयोग करने की ठान ली है। एक ओर राजपथ पर 'ई-गबर्नेस' का नारा लगाते आधुनिकतम संचार संयंत्र प्रदर्शित हो रहे हैं तो दूसरी ओर हमारे गांवों में शक्ति संपन्न और उसके लठैतों की ही गवर्नेंस चलती है। आज समाचार पत्रों को देखिए। नित नई रैली और रैला निकालकर राजनीतिक पार्टियां एक दूसरे की धज्जियाँ उड़ाने में लगी हैं। भ्रष्टाचार, गरीबी, चिकित्सा, शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा एवं नागरिक सुविधाएं उनकी प्राथमिकता की सूची में कहीं नजर नहीं आती हैं। इस प्रकार देखा जाए तो पिछले कई दशक की राजनीतिक गतिविधियों का अनुभव हमें यही बताता है कि सत्ता को चाहे कोई राजनीतिक दल हथियाए, आमजन के जीवन में कोई परिवर्तन नहीं आनेवाला है।

कांग्रेस ने सोनिया के नेतृत्व में अबतक शायद सबसे नकारा विपक्ष अपने को साबित किया है क्योंकि देश के ज्वलंत मुद्दों पर संसद में कांग्रेसी सांसदों के बहस गायब हैं। दरअसल आज भी कांग्रेस चाटुकार सलाहकारों, जिनकी अपनी कोई जमीन नहीं के भरोसे चल रही है। जब भी गठबंधन की बात आती है तो उसे भ्रष्ट शिरोमणि सुखराम या लालू प्रसाद याद आते हैं। ऐसा भी नहीं कि सोनिया जी के नेतृत्व में कांग्रेस की उपलब्धियाँ नहीं रही हैं। कांग्रेस को टूटने से बचाने, नेहरू परिवार की भभकती लालटेन को बुझने से बचाने, बिना कोई परिश्रम के कुछ राज्यों में नकारात्मक वोट के बल पर सत्ता में बेहतर वापसी आदि ये सब सोनिया जी की उपलब्धियाँ ही उपलब्धियाँ हैं। इसे बिडंबना ही कहा जाएगा कि एक समय अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के लिए शिलान्यास कराने वाली कांग्रेस आज मंदिर निर्माण की बाधाओं को दूर करने के मामले में सकारात्मक रवैये का परिचय देने से बच रही है।

भाजपा हिमाचल प्रदेश का चुनाव वाजपेयी के करिश्मे पर लड़ी। वे ही हिमाचल में तुरूप का इक्का थे। इस बीच एक सर्वेक्षण ने भाजपा खेमे को लोकसभा के आगामी चुनाव में 320 सीटें दिलाया। इसमें कतई संदेह की गुंजाईश नहीं कि गुजरात चुनाव के बाद भाजपा के आत्मविश्वास ने विरोधी दलों को

हिलाया है। इस बीच सोनिया और मुलायम की बातचीत के पीछे तात्कालिक कारण भले उत्तर प्रदेश की राजनीति रही हो किंतु असल वजह राजग और भाजपा का ग्राफ है। इधर मायावती की माया से सभी राजनीतिक पार्टियां त्रस्त हैं। भाजपा के छोटा-मोटा नेता उनसे तालमेल नहीं कर पाता। मायावती केवल आडवाणी की सुनती हैं। सोनिया गाँधी, मोतीलाल वोरा, मुलायम सिंह यादव, विनय कटियार, अजित सिंह, राजनाथ सिंह सभी मायावती के अबूझ पहेली और पैतरे से परेशान हैं। और तो और दिल्ली में बैठे बसपा सुप्रीमों काशीराम को भी पता नहीं होता कि बहन जी क्या करनेवाली हैं। पिछले दिनों उत्तर प्रदेश कांग्रेस में जो टूट हुई और फिर टूटे धड़े का दो हिस्सों में बँट जाना यह सब मायावती का करिश्मा था। इन सभी घटनाओं से राजनीति के गिरते स्तर का एक और प्रामण मिलता है। राजनीति में नैतिकता और सिद्धांतों की बात करना अब गुजरे दिनों की बात हो चुकी है। यही देखिये न कि छतीसगढ़ सहित चार राज्यों के विधान सभा चुनाव और अगले वर्ष लोक सभा चुनावों में युद्ध और राजनीति में सब कुछ जायज मानने वाले नेताओं के तरकश से आरोप प्रत्यारोप के वाण छोड़े जायेंगे। इस घमासान में भले हीं मोटे खाल के नेताओं का कुछ ने बिगड़े लेकिन लोकतंत्र का लहूलुहान होना निश्चित है। धनबल और बाहुबल के बोझ तले जनतंत्र से जनता का विश्वास अवश्य कम होगा।

चार विधान सभा चुनावों के परिणाम-

गुजरात विधान सभा के चुनाव में भारी सफलता के बाद भाजपानेताओं ने पूरे देश को गुजरात बना देने की कसम खाई थी। किंतु फरवरी में देश के चार विधान सभा चुनावों के परिणाम ने भाजपा के इरादे पर पानी फेर दिया। भाजपा की विजय यात्रा हिमाचल के पहाड़ चढ़ते-चढ़ते सहम गई और गुजरात प्रयोग देश भर में दोहराने की उसकी मंशा हिमाचल प्रदेश के वर्फीले पहाड़ों से टकराकर चकनाचूर हो गयी। वहाँ मतदाताओं को भाजपा अपनी सरकार की श्रेष्ठता का दर्शन नहीं करा पाई जिसके परिणाम स्वरूप हिमाचल प्रदेश की 68 सदस्यीय विधान सभा में कांग्रेस ने 40 सीटों पर विजय हासिल कर स्पष्ट बहुमत हासिल कर लिया। यह आखिर एक चुनाव को राजनीति का अंतिम छोर मान लेने का ही तो दुष्परिणाम है। चुनाव के नतीजे आने के पूर्व न तो भाजपा और स्वयं न तो कांग्रेस को दो तिहाई बहुमत से जीत की उम्मीद थी। यहाँ तक कि उस मीडिया, जो चुनाव पूर्व सर्वेक्षण में त्रिशंकु विधान सभा का अनुमान लगा रहा था को भी ऐसी उम्मीद नहीं थी। प्रधानमंत्री का यह आकलन कि भाजपा को गुटबाजी ले डूबी, कुछ हद तक सही है। किंतु यह भी सही है कि मतदाताओं ने धूमल सरकार पर भ्रष्टाचार के कांग्रेसी आरोप को मतदाताओं ने गंभीरता से लिया। भाजपा ने रोटी और रोजगार के मुद्दे को छोड़कर मंदिर निर्माण को जो प्राथमिकता दी है, देश की वर्तमान स्थिति को देखते हुए वह आधार युक्ति संगत नहीं दिखता। दरअसल गुजरात की जीत के बाद भाजपा को जो अतिआत्मविश्वास हो गया था वह कारगर साबित नहीं हुआ। जो हो भाजपा को आत्ममंथन करना है क्योंकि इसी साल के अंत में पाँच प्रांतों में विधानसभाओं के चुनाव होने को है जिसमें मुख्य मुकाबला कांग्रेस से ही है। इसी प्रकार पूर्वोतर क्षेत्र के त्रिपुरा राज्य में वाममोर्चा को फिर से स्पष्ट बहुमत मिल गया है और नगालैंड तथा मेघालय में त्रिशुंक जनादेश मिला। इन चार विधान सभा चुनाव परिणामों खासकर हिमाचल प्रदेश के चुनाव परिणाम ने तो यह सिद्ध कर ही दिया है कि भाजपा ने उस राज्य के विकास की अनदेखी की। संपर्क : सिपारा, इंडियन , ऑयल के पास, पटना-1

...........पृष्ठ 9 का शेषअंश

हिजड़ों का तालियाँ पीटना, कूल्हे मटकाकर नाचना और गाना बदस्तूर जारी रहा। मालकिन भीतर से झाँककर यह तमाशा देख रही थीं। वह समझ गयीं कि अँगूठी भी लिये बिना ये कमबख्त टलने वाले नहीं। एक हल्की सी अँगूठी वह हमेशा अपनी अँगुली में डाले रहती थी। उसे निकालकर मेरी तरफ बढ़ाती हुई बोलीं, "अजी, यह अँगूठी भी ले जाकर हवाले करो और किसी तरह पिण्ड छुड़ाओ। घर में आये दस मेहमानों के सामने कब तक इस तरह अपनी ठिठोली कराते रहोगे।"

मैं भी प्रतिवाद नहीं कर सका। अपने को उपहासजनक स्थिति से उबारने के लिये मालकिन द्वारा दी गई अँगूठी भी ले जाकर खोजा सरदार के हवाले कर दी। फिर क्या पूछना था, सभी ने खुश होकर समवेत स्वर में बधैया गायी और उसके बाद आनन-फानन में अपना ढोल-मंजीरा समेट कर मस्तानी चाल से चलते बने। मैंने राहत की साँस ली और आमन्त्रित जनों को हुई असुविधा के लिए हाथ जोड़कर क्षमा-याचना करते हुए उनकी आव-भगत में जुट गया। मालकिन भी औरतों को चाय-नाश्ता कराने में व्यस्त हो गई। थोड़ी ही देर में मेहमान अपने-अपने घरों को लौटने लगे। आधे घंटे के अंदर घर खाली हो गया। पंडित जी ने भी फल, मिष्ठान और प्रसाद की पोटली समेटी, दक्षिणा में प्राप्त नकद राशि को सहेजकर सदरी की भीतरी जेब के हवाले किया और यजमान को आशीर्वाद देते हुए बिदा हुए।

सुबह से ही भाग-दौड़ करते-करते मैं थककर चूर हो गया था। आगन्तुकों से छुट्टी मिली तो चुप-चाप कुर्सी पर जा बैठा और मालकिन से नीबू का शर्बत बनाकर लाने को कहा। जब मालकिन शर्बत लेकर आयीं तो उनके हाथ से गिलास थामते हुए एक लंबी साँस खींचकर मैंने महा, "चलो, रो-धोकर गृह-प्रवेश की औपचारिकता तो किसी तरह पूरी हुई, लेकिन इन कमबख्त हिजड़ों ने तो नंगा ही कर डाला।"

सहिष्णुता और धैर्य की प्रतिमूर्ति बनी मलकिन सान्त्वना के स्वर में बोलीं, "अरे छोड़ो बब्बू के पापा। आखिर उनके भी तो पेट हैं। यह सोचकर सब्र कर लो कि जो कुछ उनके अंश का था वह ले गये। जीवन में कभी कोई क्षण सबकुछ लूट लेता है तो दूसरा क्षण कभी बहुत कुछ दे भी देता है। भगवान बड़ा कृपालु है, उसपर भरोसा रखो। उसी ने अपने नये घर में पदार्पण करने का यह सुदिन दिखलाया है और आगे भी वह बहुत कुछ देगा।"

संपर्क- एस० 2/51-ए०, अर्दली बाजार, अधिकारी हॉस्टल के समीप, वाराणसी-(उ०प्र०), 221002

तमिलनाडु का बदलता राजनीतिक समीकरण

तमिलनाडु में अगले वर्ष विधान सभा का चुनाव होने को है। इसके मद्दे नजर उस समय की दो प्रमुख पार्टियाँ-द्रमुक और अन्नाद्रमुक अपने कामकाज में जिस प्रकार पैतरा बदल रही हैं, उससे नए राजनीतिक समीकरण का अहसास होता है। करुणानिधि के नेतृत्व वाली मुख्य विपक्षी पार्टी द्रमुक हॉलाकि केंद्र में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के साथ है लेकिन राज्यस्तर पर भाजपा और द्रमुक में जिस तरह की कड़वाहट दिखायी पड़ रही है उससे यह साथ ज्यादा दिन चलता नजर नहीं आ रहा है। द्रमुक ने जहाँ कांग्रेस के साथ अपने संबंधों को पुनर्जीवित करने के बारे में खुलकर संकेत दे दिए हैं वहीं भारतीय कॉम्यूनिस्ट पाटी भी राज्य की सत्तारूढ़ अन्नाद्रमुक के खिलाफ संघर्ष में संयुक्त विपक्ष में द्रमुक की भागीदारी के विरूद्ध नहीं है जबकि माकपा राजग में शामिल होने के कारण द्रमुक को अभी भी अछूत मानती है।

यह बात ठीक है कि राज्य में सत्तारूढ अन्नाद्रमुक की सुप्रीमों एवं तमिलनाडु की मुख्य मंत्री ने अगले आम चुनावों में किसी भी पार्टी के साथ गठबंधन के बारे में अभी कोई फैसला नहीं किया है

किंतु इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि अन्नाद्रमुक और केंद्र की भाजपा नीत वाजपेयी सरकार के बीच इनदिनों काफी मधुर संबंध है और दूसरी ओर द्रमुक के साथ राज्य भाजपा के बिगड़ते संबंधों को सुधारने के लिए भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व द्वारा किए जा रहे प्रयासों के बावजूद द्रमुक तथा अन्य छोटी सहयोगी

पार्टियाँ भाजपा से नाराज हैं। भाजपा अध्यक्ष बेंकैया नायडू द्वारा राज्य भाजपा को द्रमुक की आलोचना में न उलझने की सलाह देने के फैसले को यहाँ द्रमुक के हलकों में आश्चर्य की नजर से देखा जा रहा है। भाजपा के इन निर्णयों को द्रमुक द्वारा पिछले दो महीनों के दौरान कांग्रेस को सर्वदलीय बैठक में बुलाने और भाजपा को इससे दूर रखने के फैसले के परिप्रेक्ष्य में देखा जा रहा है। पर यह भी सही है कि यद्यपि कांग्रेस को सर्वदलीय बैठक में आमंत्रित करके द्रमुक ने कांग्रेस से नजदीकी के संकेत दिए हैं लेकिन कांग्रेस इसके लिए बहुत अधिक उत्साही नजर नहीं आ रही है। कांग्रेस अध्यक्ष ने भी स्पष्ट कर दिया है कि यदि द्रमुक अपने विरोध प्रदर्शन के कार्यक्रमों में कांग्रेस का समर्थन चाहती है तो उसे राजग से नाता तोड़ना होगा। इस बात से जयललिता प्रसन्न हैं। वह 2004 के लोक सभा चुनाव अकेले लड़ने के प्रस्ताव पर विचार कर रही हैं ताकि ज्यादा से ज्यादा सांसदों को विजयी बनाकर चुनाव के बाद वे सौदेबाजी की स्थिति में रहें।

तीन देवियों में से दो देवियों को रिझाने की कसरत

केंद्र में सत्तारूढ़ भाजपा दक्षिण में ताकतवर समझी जाने वाले द्रमुक के नेता एम. करुणानिधि की लगातार क्षीण होती ताकत से खुद को अलग करके तमिलनाडु की मुख्य मंत्री अन्नाद्रमुक के साथ पिछले एक साल से जो प्रेम की प्रींगे चढ़ा रहे थे, उनके परवान होने का वक्त अब नजदीक आता जा रहा है। भाजपा की ओर से पोटा मुद्दे पर दक्षिण की एक छोटी पार्टी एमडीएमके के नेता डॉ. वाइको को कोई रियायत न मिलने से यह नया समीकरण तेजी से बन रहा है। वाइको की पार्टी द्रमुक राजग मोर्चे की सदस्य है। इस मोर्चे की और पार्टी पीएमके भी सदस्य हैं, जिसके नेता रामदास हैं। ये सभी दल वाजपेयी सरकार में रहने के बाद भी 'पोटा' का जमकर विरोध कर रहे हैं। दूसरी ओर उत्तर की मायावती और दक्षिण की जयललिता – इन दो देवियों ने वाजपेयी सरकार का समर्थन ही नहीं किया था, बल्कि उसे लागू करने में भी उन्होंने तत्परता दिखाई। दोनों ने ही राजग में शामिल दलों के नेताओं को ही इस 'पोटा' के तहत 'अंदर' किया।' ऊत्तर प्रदेश में मायावती ने भाजपा विद्रोही विधायक राजा भैया को सलाखों के पीछे डाला। इसे लेकर भी ऊत्तर प्रदेश की भाजपा-बसपा सरकार में भयंकर कोहराम मचा हुआ है। मगर भाजपा का केंद्रीय नेतृत्व अपने सत्ता समीकरण पोटा के बहाने ही बदलता दिखाई दे रहा है। उस कानून का विरोध करने वाले दक्षिण के छोटे-छोटे दलों को भी पिछले दिनों राजग की बैठक तक में नहीं बुलाया गया। इन दो देवियों के अतिरिक्त वाजपेयी मंत्रिमंडल में प्रवेश के लिए बेकरार तीसरी देवी पश्चिम बंगाल की ममता बनर्जी को और प्रतीक्षा में रहने देना चाहते हैं। उसके पूर्व जयललिता और मायावती के लोगों को ही अवसर देना चाहते हैं।

अण्णा हजारे और बदली सूरत का उनका रालेगांव सिद्धि

❑ अंजलि

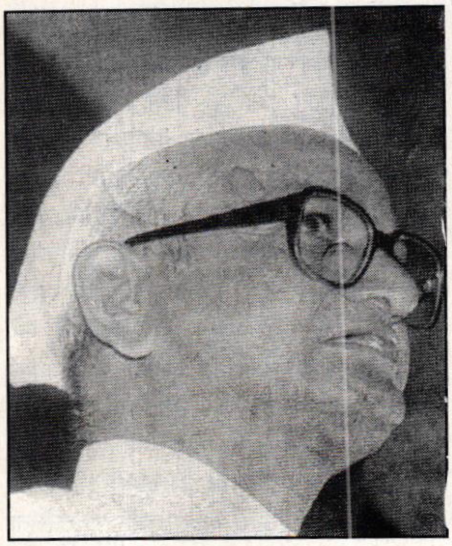

उतरी महाराष्ट्र में रालेगांव सिद्धि एक ऐसा गावं है जिसकी सूरत आज बदली हुई है। स्वावलंबन और सामूहिक प्रयास से ग्रामोदय की यह कल्पना साकार हुई उसी गांव के एक निवासी किशन बाबू राव हजारे उर्फ अण्णा हजारे के चलते, जो कभी भारतीय सेना में ट्रक ड्राइवर थे। हुआ यों कि अण्णा हजारे 1965 की लड़ाई में सैनिकों को ले जा रहे थे, किंतु रास्ते में एक हवाई हमला हुआ जिसमें ट्रक में सवार उनके सभी साथी फौजी मारे गए। मात्र अण्णा हजारे ही बच गए। बस क्या था ? इसी एक घटना ने उनके व्यक्तित्व पर एक गहरा प्रभाव डाला और उनका रास्ता ही बदल गया। उनके मन में एक बात आई कि भगवान ने उन्हें किसी नेक काम के लिए इस धरती पर छोड़ा है।

15 जनवरी, 1940 को जन्में अण्णा हजारे 1975 में सेना से सेवानिवृत्त होने के फौरन बाद अपने बंजर गांव रालेगावं सिद्धि लौट आए। इस बंजर गांव में उनके वापस आने के पहले एक दाना भी नहीं उपजता था, क्योंकि बरसात में वहां का पानी बह जाता था और कुआं में पानी आता ही नहीं था। सिंचाई के अन्य साधन भी नहीं थे। अण्णा ने गांव वाले के श्रम से छोटे-छोटे आहर बनवाए जिसमें मिट्टी का उपयोग किया गया। फिर आसपास की नदियों से नहरें बनाई गई। फिर क्या था पानी की सुविधा मिलने पर गांव हरा-भरा तथा आत्म निर्भर हो गया।

लगभग चार हजार की आबादी वाले इस रालेगांव में उत्तर प्रदेश और बिहार के गांवों की तरह आज न तो शराब बिकती है और न यहां के लोग बिड़ी, सिगरेट, तंबाकू पीते हैं। पहले यहां भी और गांवों की तरह कलाली चलता था पर हजारे के इस गांव में पदार्पण के पश्चात्

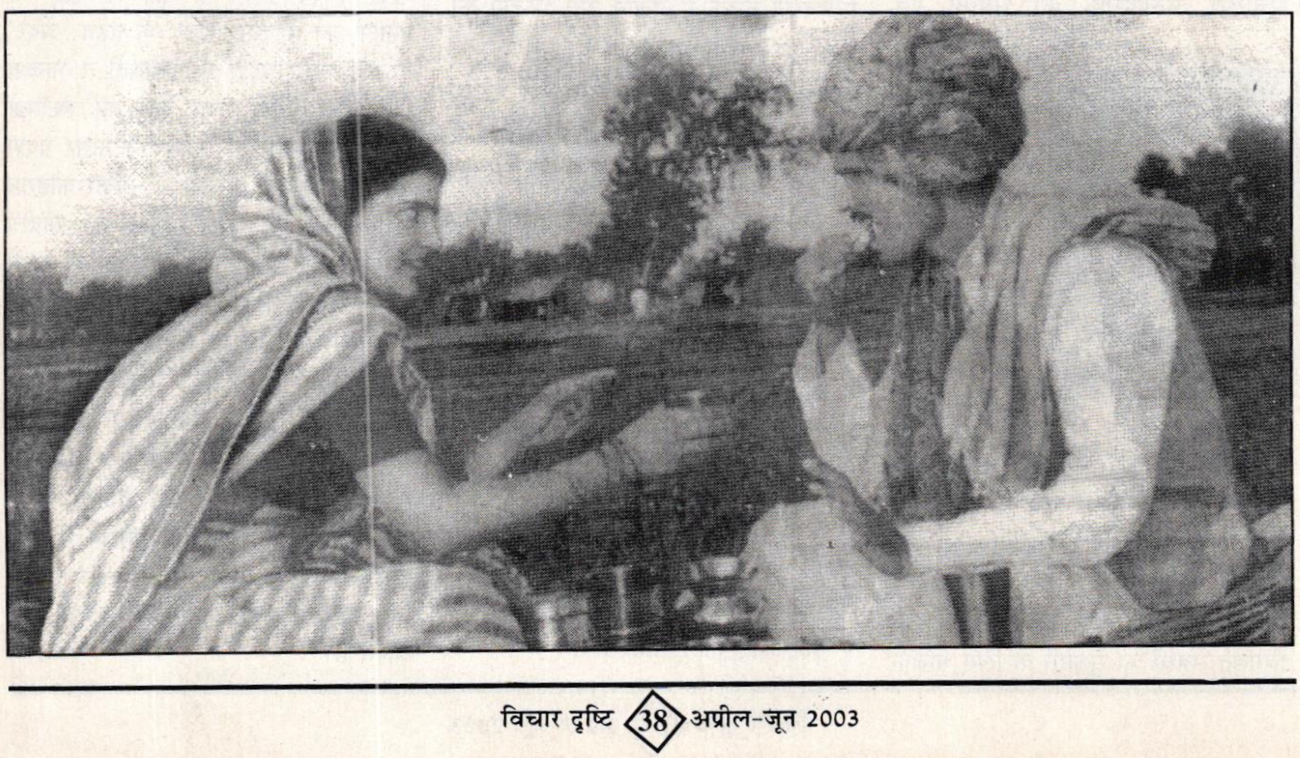

पीने के नाम पर लोग अजनबी हो चुके हैं। महिलाओं के सहयोग से अण्णा ने इसे पूरी तरह बंद करा दिया। इस बंद करने की अवधि में जिन लोगों ने शराब पीने से भी नहीं माना, उन्हें अण्णा ने फौज की कमर बेल्ट से पूरी तरह धुलाई भी कर दी।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि इस रालेगांव सिद्धि में आज कहीं किसी गली में कचड़ा या गंदगी देखने को नहीं मिलता। उस कचड़े से खाद्य बना ली जाती है। एक समय ऐसा भी था, जब इस गांव में मलेरिया का प्रकोप था जो गंदगी की वजह से होता था। अण्णा के प्रयास से सफाई की व्यवस्था हुई और अब किसी तरह की बीमारी इस गांव में नहीं छिटकती। इस गांव में एक विद्यालय है, जहां का हर छात्र एक वृक्ष लगाता है, इसे पाल-पोसकर इन पेड़ों में जो फल होते हैं उसे गांव से बाहर बाजार में नहीं बेचा जाता है, बल्कि वहां के बच्चे ही खाते हैं।

एक घटना काबिले गौर है कि एक बार महाराष्ट्र सरकार से कुछ मांगों को लेकर अण्णा हजारे अपने निवास यादव बाबा के मंदिर में मौन व्रत पर बैठ गए। यह व्रत गांधी जी के जन्म दिवस 2 अक्टूबर तक चलना था, किंतु सरकार ने अधिकांश मांगे मान लेने के बाद बाकी मांगों पर विचार करने के लिए दो माह का समय मांगा। अण्णा हजारे ने ग्राम सभा के कहने पर दो महीने का समय देते हुए व्रत तोड़ दिया।

ग्राम सुधार के कार्यक्रमों को मूर्त रूप देने के लिए अण्णा अपने गांव में एक हिंद स्वराज ट्रस्ट का गठन किया। इस ट्रस्ट को कभी तत्कालीन मुख्य मंत्री शरद पवार ने तीन सौ गांव सौंपे थे। अण्णा के अनसन के कारण ही एक बार महाराष्ट्र की भाजपा - शिवसेना की गठबंधन सरकार के दो मंत्रियों – शिवकांत सुतार तथा महादेव शिवनेकर को भ्रष्टाचार के आरोप में अपने मंत्री पद से इस्तीफा देना पड़ा था।

मैगसेसे पुरस्कार से सम्मानित अण्णा हजारे केंद्र सरकार से मिले 'पद्मश्री' सम्मान वापस कर चुके हैं। यही कारण है कि महाराष्ट्र के अधिकांश समाज में वे पूर्ण परिचित हो चुके हैं। भ्रष्टाचार और ग्रामीण समाज की कुप्रथाओं पर प्रहार एवं ग्राम सुधार के कार्यक्रमों को साकार करने के लिए उन्होंने अनवरत अभियान चला रखा है और सम्मान का हकदार बन बैठे हैं। इन्हीं के चलते जी. आर. खैरनार, मेधा पाटेकर, कृष्ण राघव तथा फादर फ्रांसिस दि ब्रटों सरीखे सुप्रसिद्ध, सामाजिक कार्यकर्ता अण्णा के साथ हो लिए।

इस गांव में एक अनाज बैंक भी है, जिसमें किसान अपनी उपज के अनुपात में अनाज जमा कराते हैं। इसी प्रकार यहां हर साल नवयुवक मंडल के सहयोग से सामूहिक विवाह का आयोजन होता है। एक शादी महज ढाई से तीन हजार रुपए में सम्पन्न हो जाता है। इस गांव में लोग सोलर एनर्जी से बना भोजन करते हैं और उसी के गर्म पानी से नहाते हैं। टी.वी. भी उसी से चलते हैं।

खाँटी गांधीवादी अण्णा के पास मात्र दो जोड़ी धोती कुर्ते के सिवा अपना कुछ भी नहीं। मुंबई, पूणे तथा अहमदनगर की यात्राएं कर सरकार की ग्रामीण योजनाओं से वाकिफ होकर फिर अपने ग्रामवासियों को वे समझाते हैं। तबादलों में सबसे अधिक भ्रष्टाचार होता है, किसी विशेष परिस्थिति में ही तीन साल से पहले तबादला होना चाहिए, अण्णा हजारे का ऐसा मानना है। चरित्र सम्पन्न, सिद्धांतवादी तथा शुद्ध आचरण वाले लोग उनके आंदोलन से जुड़ते हैं। ग्रामीण विकास की अलख जगा रहे अण्णा हजारे गांव को आत्म निर्भर बनाने का लगातार प्रयास कर रहे हैं। काश! पंचायतीराज की स्थापना के पश्चात् आज के मुखिया, सरपंच तथा प्रखंड प्रमुख एवं जिला परिषद के पदाधिकारी एवं सदस्यों की मानसिकता भी गांधीवादी अण्णा हजारे के रास्ते पर चलने की बनती तो गांव का विषाक्त होता वातावरण में परिवर्तन होता। ऐसे लोगों के लिए अण्णा हजारे एक उदाहरण स्वरूप हैं, जिनके व्यक्तित्व और कृतित्व से हमें सीख लेनी चाहिए।

संपर्क : संपादन सहायक,
'विचार दृष्टि'

ग्रामीणों की जिंदगी बदल दी ग्रामदूत ने

विचार कार्यालय, जयपुर

राजस्थान की राजधानी जयपुर से सटे गांव में लोग अब पहले की तरह डाकिये का इंतजार नहीं करते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति से गुजर रहे ये गांव साइबर दुनिया का अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं। ग्रामदूत नामक आईटी परियोजना ने 413 गांवों की तस्वीर बदल कर रख दी है। इन गांवों के

लोग ग्रामदूत संचार प्रणाली के बदौलत न केवल अपने संबंधियों और दोस्तों के नियमित संपर्क में रहते हैं, बल्कि किसी सरकारी विभाग के खिलाफ अपनी शिकायत को भी इस संदेश वाहक ग्रामदूत के जरिए सरकार तक पहुंचा सकते हैं। गांव के लोगों को पहले शादी तय करने के लिए मीलों यात्रा तय करनी पड़ती थी, किंतु अब ग्रामदूत के माध्यम से वर-वधुओं की तलाश कर संबंध तय कर लेते हैं। ग्रामदूत के जरिए किसान अपनी उपज की बिक्री के लिए बाजार में बैठे कारोबारियों से संपर्क बना लेते हैं। इस आईटी लिंक से ग्राम वासी सैटेलाइट टी.वी. चैनल का भी मजा लेते हैं।

– सुश्री पल्लवी, जयपुर

सांस्कृतिक क्रांति का संवैधानिक आधार भारतीय संविधान

सांस्कृतिक क्रांति पर एक जीवंत परिचर्चा

जाति अब अपने अंतिम दशाब्दियों में है क्योंकि जाति का संबंध धर्म से हटकर राजनीति से हो रहा है और आज की दलित, पीड़ित, शोषित एवं पिछड़ी जातियाँ इतिहास में अपना स्थान बनाना चाह रही हैं। चिंता की बात यह है कि साहित्य उन्हें नहीं छू रहा है और राजनीति उसकी अनदेखी कर रही है। ये उद्‌गार हैं भारत सरकार के पूर्व कृषि मंत्री चतुरानन मिश्र के, जिसे उन्होंने **विचार दृष्टि** द्वारा चेतना समिति, बिहार की सहभागिता से पिछले 18 फरवरी को पटना के विद्यापति भवन में 'सास्कृतिक क्रांति क्यों?' विषय पर आयोजित एक परिचर्चा में व्यक्त किए। अपनी सद्यः प्रकाशित पुस्तिका 'सांस्कृतिक क्रांति अनिवार्य' को केन्द्र में रखकर आयोजित इस परिचर्चा में पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री मिश्र ने कहा कि यह पुस्तिका समाज में हो रही सांस्कृतिक क्रांति के लक्षणों को देखकर लिखी गयी है। और, उन्होंने अपनी धारणा को स्पष्ट करते हुए कहा कि सांस्कृतिक क्रांति का सैद्धांतिक आधार भारतीय संविधान है। इस दृष्टि से भारतीय संविधान को जीवन की शैली बनाना इस देश के संवेदनशील एवं विचारवान लोगों का कर्तव्य बनता है।

प्रारंभ में **विचार दृष्टि** के संपादक सिद्धेश्वर ने भी परिचर्चा की पृष्ठभूमि तथा उसके विषय को प्रस्तुत करते हुए कहा कि भारत का संविधान इस सच्चाई को मानता है कि भारत राष्ट्र एक भौगोलिक प्रभुतासम्पन्न जनतांत्रिक देश है जिसमें कई धर्मों के अनुयायी, कई भाषाओं के बोलनेवाले, कई संस्कृतियों को माननेवाले तथा विभिन्न रीति-रिवाजों को निभानेवाले अनेक जातियों के लोग समान अधिकार से रहते हैं। और, उन्हें इन अधिकारों से धर्म, जाति, क्षेत्र या भाषा के आधार पर वंचित नहीं किया जा सकता। यही इस विशाल भारत का वास्तविक स्वरूप है। भारत ने लोकतंत्र को अपनाकर संविधान में सभी धर्मों व जातियों को समान अधिकार दिया है। भारत वासियों की आस्था का यही प्रस्थान -बिंदु और आधार है जिसके परिणाम स्वरूप आजादी के पश्चात यहाँ के खासकर शोषित, पीड़ित, दलित तथा पिछड़ी जातियों में सांस्कृतिक-भाषिक चेतना का उभार आज दिख रहा है। पिछले कई दशकों से इस देश व समाज के पिछली पायदान पर बैठी जातियों में सत्ता और पद-प्राप्ति की स्पर्धा का भाव बढ़ा है। लोकतांत्रिक और स्वतंत्रता का पक्षधर समाज भी इस वास्तविकता को स्वीकार करने लगा है किंतु समाज की कुछ सशक्त शक्तियाँ हमारे समाज रूपी जंजीर की कमजोर कड़ियों पर आघात करके देश व संविधान के मूल स्वरूप को विकृत करने पर तुली हुई हैं। जिसकी वजह से हिंसा-प्रतिहिंसा अत्याचार और सामूहिक नरसंहार की घटनाएं आए दिन घट रही हैं। पूर्व केंद्रीय मंत्री चतुरानन मिश्र ने अपनी पुस्तिका में इन्हीं विचारों को प्रतिपादित करते हुए टूटती जाति व्यवस्था का विश्लेषण किया है। और सांस्कृतिक क्रांति की अनिवार्यता पर बल दिया है तथा समाज के कमजोर वर्गों की भावनाओं का आदर करने की आवश्यकता जताई है क्योंकि वह गणतंत्र के विकास के लिए जरूरी है।

इस अवसर पर परिचर्चा में रचनाकार मोहन भारद्वाज ने जहाँ श्री मिश्र की इस कृति के पीछे समाज में विधवा विवाह, शिथिल होते जातीय बंधन, अगड़ी एवं पिछड़ी जातियों में बदलाव तथा जातीय समाहार जैसे लक्षणों की चर्चा की वहीं चेतना समिति, बिहार के सचिव विजय नाथ ठाकुर ने परिचर्चा में भाग लेनेवाले वक्ताओं एवं श्रोताओं का स्वागत करते हुए समाज में तेजी से प्रखर होती नयी जागृति के मद्‌देनजर समय के बदलते करवट को पहचानने की आवश्यकता बताई। बिहार विश्वविद्यालय के पूर्व प्राध्यापक एवं राजनीति विज्ञान वेत्ता प्रो० साधु शरण ने भारतीय संविधान के प्रावधानों को उद्धृत करते हुए कहा कि हमारा संविधान बहुसंस्कृतिवाद पर आधारित है। आज जो भी घटनाएं इस देश में घट रही हैं उसका प्रभाव समाज के हर व्यक्ति पर पड़ता है।

डॉ० शाधुशरण ने भी स्वीकार किया कि सांस्कृतिक क्रांति के लिए जमीन तैयार है केवल उसे पहचानने की जरूरत है और उसके अनुरूप अपनी जीवन शैली बदलने की आवश्यकता है। सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं समीक्षक डॉ० शिववंश पाण्डेय ने जाति का धर्म से अलगाव तथा उसके राजनीतिकरण के कारण जातिवाद के टूटने की बात कही। पटना विश्वविद्यालय के डॉ० राधाकृष्ण सिंह ने कहा कि हमारी संस्कृति पर जबरदस्त प्रहार हो रहा है। पुस्तिका की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि यह संस्कृति के बारे में भारतीय राजनीति और समाज के संबंध अबूझ पहेली पर प्रकाश डालती है। उन्होंने जातीय भेदभाव के लिए वैदिक सभ्यता को जिम्मेदार बताया।

सुप्रसिद्ध समाजशास्त्री प्रो० हेतुकर झा ने इतिहास के संदर्भों का विस्तृत हवाला देते हुए कहा कि इस पुस्तिका के कृतिकार श्री मिश्र जी ने जिस विचारधारा के खिलाफ सांस्कृतिक क्रांति की बात की है वह सैद्धांतिक दृष्टि से उचित और आवश्यक जान पड़ता है। प्रो० झा ने जातिवाद और संप्रदायवाद दोनों को संकीर्णतावाद के एक ही सिक्के के दो पहलू बताते हुए कहा कि इनके बीज हिंदुत्व के ब्राह्मणवाद की अवधारणा में स्थापित है। इसलिए उन्होंने पूरे सिक्के को बदलने की बात कही। इस परिचर्चा में नगर तथा कस्बों के जिन अन्य प्रबुद्धजनों ने भाग लिया उनमें बिहार विधान परिषद के सदस्य बद्रीनारायण लाल, मगध विश्वविद्यालय के डॉ० कलानाथ मिश्र, खुटौना के डॉ० महेन्द्र नारायण राम, सुरेश भट्ट तथा डॉ० आर० एस० एस० सुमन का नाम उल्लेखनीय है। डॉ० रामशोभित प्र० सिंह ने परिचर्चा की अध्यक्षता करते हुए भारतीय संस्कृति के बदलते स्वरूप पर प्रकाश डाला तथा विचार दृष्टि के सहायक संपादक मनोज कुमार ने आभार व्यक्त किया।

प्रस्तुतिः अंजलि
संपादन सहायक विचार दृष्टि

अनाज की गंध और खनिजों की धूल भरे हाथों का गीत गाना चाहती है कविता

साहित्य अकादमी के साहित्योत्सव में 22 लेखक सम्मानित

प्रस्तुति : शशि भूषण

साहित्य अकादमी द्वारा दिल्ली के कमानी सभागार में आयोजित साहित्योत्सव- 2003 के लेखक सम्मेलन को संबोधित करते हुए हिंदी भाषा के लिए इस साल का अकादमी पुरस्कार से सम्मानित मध्य प्रदेश के राजेश जोशी ने कहा कि कविता ही मेरी नागरिकता है, कविता प्रतिरोध की आवाज है इसलिए वह यारी के पुल बनाती है। उन्होंने पुन: कहा कि कविता एक जिद्दी आशा है, क्योंकि वह सिर्फ पिटते हुए मनुष्य को ही नहीं, लड़ते हुए मनुष्य को देखने और उसके पक्ष में बोलने का साहस कर सकती है। कविता की आंतरिक इच्छाओं, सपनों, पवित्र दुआओं और गलियों का विकिरण उसके अणु के अनिवार्य और अपरिहार्य विस्फोट में अंतर्निहित है। कविता ताकतवर और क्रूर की पराजय की इच्छा करती है। वह उन हाथों का गीत गाना चाहती है, जो अनाज की गंध और खनिजों की धूल से भरे हैं।

हिंदी का अब तक अपना कोई समाज नहीं बन पाने के कारणों की चर्चा करते हुए श्री जोशी ने कहा कि हिंदी की फिल्म, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और अखबार सभी हिंदी के साथ दगा किया है। यह सब किसी अज्ञानता के कारण नहीं, बल्कि एक सुचिंतित राजनीतिक कुटिलता से चूना गया है।

सांस्कृतिक विपन्नता के इस दृश्य को छद्म सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से भरने की कोशिश की जा रही है। इस वास्तविकता

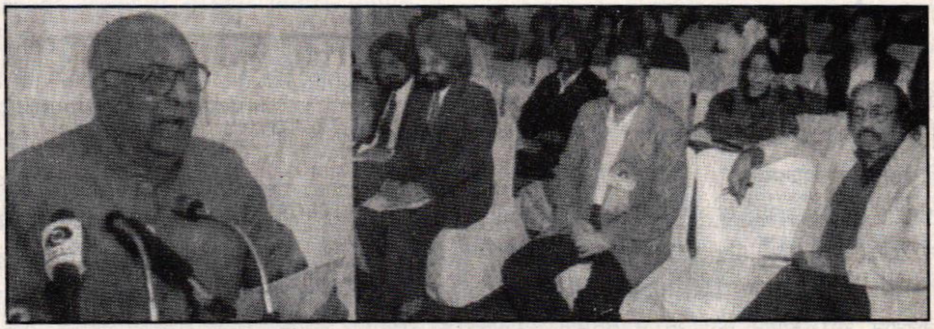

के बीच हमें अपनी कविता लिखना भी है और उसे बाँचना भी। इस अवसर पर पंजाबी भाषा के लिए पुरस्कृत कवि हरभजन हल बारवीं ने कहा कि पंक्तियों के क्रम, बिम्ब और प्रतीकों के मेलजोल के बावजूद भी अगर कविता पाठक और श्रोता को प्रभावित नहीं करती तो व्यर्थ है। राजस्थानी के लेखक भरत ओला ने कहा कि मेरे तईं मेरा लिखना मेरे अपने होने के अहसास को दोहराने का एकमात्र जरिया है और मैं माँ के स्तन के साथ चूंधी हुई भाषा को छोड़ किसी और भाषा में अपने होने का अहसास कैसे कर सकता हूँ। मैथिली के सोमदेव ने मनोरंजन के साधन और विज्ञापनी फिकरों में तब्दील होते साहित्य की भूमिका पर अपनी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि फास्ट कल्चर अशांतधुन देह दिखाऊ भंगिमाएँ आकाश से बरस रही है। आज अक्ल स्फुरित नहीं होती उपजायी जाती है, पेटेंट की जाती है। मातृभाषा आउट ऑफ डेट हो गयी है।

प्रारंभ में साहित्योत्सव एवं इस अवसर पर आयोजित चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन सुप्रसिद्ध पटकथाकार, निर्देशक व गीतकार गुलजार ने किया।

साहित्य अकादमी पुरस्कार से विभिन्न भाषाओं के निम्नांकित 22 लेखकों को उनके आगे अंकित रचनाओं के लिए नवाजा गया–

वेन जियाबाओ चीन के नए प्रधान मंत्री और हू चिनताओ नए राष्ट्रपति

विचार कार्यालय, दिल्ली

विश्व की छठी सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था वाले देश चीन की संसद ने उप प्रधान मंत्री वेन जिनाबाओ को चीन का नया प्रधानमंत्री चुन लिया। वेन को 93.3 प्रतिशत मत मिले। लगभग तीन हजार में से मात्र 3 सांसदों ने उनके खिलाफ मतदान किया। 60 वर्षीय जियाबाओ ने झू रोंगची की जगह ली है। राजनीतिक तामझाम और नुमाइश से परहेज करनेवाले एवं मृदुभाषी वे दो टूक लहजे में बात करने वाले 'बॉस झू' से भिन्न हैं। वे चीनी अर्थव्यवस्था के बारे में काफी तजुर्बा रखते हैं। उन्होंने चीन की अर्थव्यवस्था की दर प्रतिवर्ष औसत 7.7 पहुँचा दी। आज जब चीन में बेरोजगारों की कतार लंबी होती जा रही है ग्रामांचलों में असंतोष की चिनगारी सुलग रही है और बाजार अर्थव्यवस्था की राह पर देश को सरपट दौड़ाने की चीनी हुक्मरानों के प्रयासों ने अमीरों और गरीबों के बीच की खाई चौड़ी कर दी है। वेन जियाबाओ की प्राथमिकता होगी कि अमीर और गरीब के बीच की बढ़ती खाई को पाटना और बीमार बैंकिंग तंत्र को सही करना। विश्लेषकों का मानना है कि वेन की कार्यशैली बहुत सहज और शांत हैं उन्हें जटिल मुद्दों पर भी आम सहमति बनाने की कला आती है। वह सबको साथ लेकर चलने का गुर जानते हैं।

इसके साथ ही चीन में जियान जेमिन के स्थान पर हू चिनताओ को नया राष्ट्रपति चुना गया है। पेशे से इंजीनियर चिनताओ सबसे कम उम्र के राजनीतिज्ञ हैं जिन्हें चीन की बागडोर सौंपी गयी है। कॉम्यूनिस्ट चीन के इतिहास में पहली बार शीर्ष नेताओं को निर्विरोध नेतृत्व सौंपा जाना उसकी राजनीतिक परिपक्वता को दर्शाता है। राष्ट्रपति हू चिनताओ को केन्द्रीय सैनिक आयोग का उपाध्याक्ष भी चुना गया है। कहा जाता है कि चीन में भले ही सत्ता परिवर्तन हुआ है किंतु जियान जेमिन शक्ति के केंद्र बने रहेंगे। सेना प्रमुख के रूप में वे राष्ट्र का नेतृत्व परोक्ष रूप से करते रहेंगे।

चीन ने गत पन्द्रह पर्षों के दौरान आर्थिक क्षेत्र में जो उन्नति की है उसे नयी ऊँचाई तक पहुँचाने के ख्याल से पढ़े-लिखे और समझदार राजनीतिज्ञों को आगे किया गया है। ऐसी उम्मीद की जाती है कि भारत के साथ चीन के संबंधों में नेतृत्व परिवर्तन से और सुधार आएगा। जेमिन के कार्यकाल में संबंधों में जो सुधार के प्रयास किए गए हैं, वे जारी रहेंगे। नए राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के समक्ष अभी तो इराक का प्रश्न चुनौती के रूप में खड़ा है। देखना यह है कि अमेरिका में शिक्षित चिनताओ इस संकट की घड़ी में क्या रूख अपनाते हैं।

हिंसक बनाता है व्यक्ति को उसका दूषित विचार

विचार संवाददाता, दिल्ली

वैचारिक रूप से दूषित होना भी हिंसा है। जिस व्यक्ति के विचार दूषित होते हैं वही हिंसक बनता है। इसी प्रकार जिस व्यक्ति का निजी जीवन स्वच्छ नहीं होता वह समाज को स्वच्छ नहीं कर सकता है। जिस देश या समाज में व्यवस्थाकार और

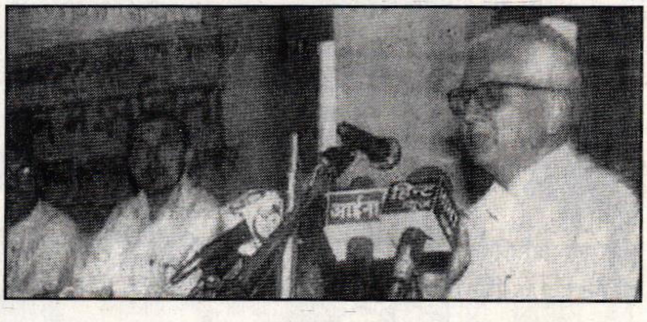

योजनाकार ही निंदा के पात्र हो जाएं, उसका भविष्य अंधकार में चला जाता है। ये विचार हैं पूर्व केंद्रीय कृषि मंत्री व योजना आयोग के सदस्य सोमपाल शास्त्री के, जिसे नई दिल्ली में हरिश्चंद्र त्यागी फाउंडेशन ट्रस्ट द्वारा 'सार्वजनिक जीवन में शुचिता' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में उन्होंने व्यक्त किए। श्री शास्त्री ने पुन: कहा कि व्यक्ति का जैसा चरित्र होगा समाज भी वैसा ही बनेगा। इसलिए समाज को सही दिशा देने के लिए व्यसन त्यागना ही होगा। भारत में राजनेता बुराई के पात्र बन गए हैं, यह दुर्भाग्यपूर्ण सच्चाई है, इसे श्री शास्त्री ने स्वीकारा। नेताओं को चाहिए कि वे आत्म समीक्षा करें। सार्वजनिक जीवन में सही सम्मान पाने के लिए निजी जीवन में शूचिता लाना जरूरी है क्योंकि सार्वजनिक जीवन में रहने वाले व्यक्ति की आम आदमी से ज्यादा जवाबदेही होती है।

ज्ञानेंद्र नारायण, नई दिल्ली

कहाँ थम रहा कश्मीर घाटी में आतंकवादियों का कहर?

जिस समय पूरी दुनिया का ध्यान अमेरिका द्वारा इराक पर किए गए आक्रमण पर लगा है पाकिस्तान पोषित और प्रेरित आतंकवादियों ने जम्मू-कश्मीर के पुलवामा जिले में दो दर्जन कश्मीरी पंडितों की नशंस हत्या कर यह सिद्ध कर दिया है कि कश्मीर घाटी की सुरक्षा व्यवस्था चुस्त-दुरुस्त करने तथा आतंकवादियों के खिलाफ अभियान छेड़ने के केंद्र तथा राज्य सरकार के सारे दावे खोखले हैं। सवाल यह उठता है कि जिस प्रकार पुलवामा में 24 निर्दोष और निहत्थे लोगों की भेंड़-बकरियों की तरह नृशंस हत्या की गयी उसके मद्दे नजर क्या राज्य एवं केंद्र की सरकारें अपनी धिसी-पिटी और निरर्थक बयानबाजी करके अपने कर्तव्य की इतिश्री करती रहेंगी? क्या ये घटनाएं आतंकवादियों के दुस्साहस को बल प्रदान नहीं करतीं? इससे अधिक शर्म की बात और क्या हो सकती है कि जम्मू-कश्मीर की पुलिस अभी तक सेना और आतंकवादियों में फर्क करना नहीं जान सकी है क्योंकि पुलवामा की इस दर्दनाक घटना में आतंकवादी सेना की वर्दी में अपना काम तमामकर राज्य की पुलिस को भांसा दे उन्हें निहत्था कर गए।

पुलवामा की इस जघन्य हत्या ने जहाँ राज्य पुलिस की सुरक्षा व्यवस्था की धज्जियाँ उड़ाकर रख दी है वहीं इस घटना ने खुफिया तंत्र को भी नकारा साबित करने का काम किया है। पिछले दिनों हिजबुल मुहाहिदीन के पूर्व शीर्ष कमाण्डर अब्दूल माजिद डार की हत्या इसलिए की गई कि कश्मीर मसले के शांतिपूर्ण निदान के पक्षधर के रूप में उभर रहे थे और आतंकवादी कश्मीर में किसी भी कीमत पर शांति स्थापित होने देना नहीं चाहते। अब प्रश्न यह उठता है कि सरकार कबतक निहत्थे एवं निर्दोष जनता की लाशों पर अपने घड़ियाल आंसू बहाते रहेंगी, जबकि आतंकवादियों का कहर कश्मीर घाटी में थमने का नाम ही ले रहा। और चाहे जो हो एक बात तो सत्य है कि जब केंद्र व राज्य सरकार अपने दम-खम पर आतंकवादियों से निबटने का बीड़ा नहीं उठाएगी तब तक इस समस्या का समाधान मुश्किल है क्योंकि अमेरिका के रवैए से हम सब परिचित हो चुके हैं। आतंकवादियों से निबटने का उनका अपना तरीका है। एक तरफ तो आतंकवादियों को खत्म करने के लिए अमेरिका कभी अफगानिस्तान पर हमला करता है तो कभी इराक पर और दूसरी तरफ आतंकवादियों को सह देनेवाले पाकिस्तान को अपने सिर पर चढ़ाते जा रहा है। आखिर उसकी यह कैसी नीति है, यह हम भारतवासियों को पूरी तरह समझ लेना होगा।

अमेरिका दुनिया को फासीवाद के जहर डुबोना चाहता हैः

प्रगतिशील लेखक संघ का राज्य अधिवेशन संपन्न

विचार कार्यालय, पटना

हिटलर के फासीवाद की तर्ज पर आज जार्ज डब्ल्यू बुश के नेतृत्व में अमेरिका फासिस्टवाद के जहर में दुनिया को डुबो देना चाहता है। आज साहित्यकारों व लेखकों का दायित्व है कि विश्व में फासीवाद के बढ़ते खतरे का मुकाबला करने के लिए अपनी कलम उठाएं और जन चेतना के माध्यम से इसका विरोध करें। ये विचार हैं जाने-माने समालोचक डॉ० नामवर सिंह के, जिसे पिछले दिनों बिहार के बेगुसराय जिलान्तर्गत मटिहानी प्रखण्ड स्थित गोदर गावां गाँव में आयोजित प्रगतिशील लेखक संघ के दो दिवसीय 12 वें राज्य सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि के पद से उन्होंने व्यक्त किए।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित सुप्रसिद्ध कथाकार कमलेश्वर ने अपने दार्शनिक एवं प्रभावी अंदाज में कहा कि शहीद भगत के ही सपने आपके और मेरे हैं। यह पीड़ा आपकी, हमारी और देश की है। उन्होंने पुनः कहा कि इतिहास बदलने की गलत परंपरा विध्वंसक है तथा अयोध्या खुदाई से इस समस्या का हल संभव नहीं है। कमलेश्वर ने 23 लाख की लागत से बने भण्यदेवी वैदेही सभागार का उदघाटन भी किया।

सम्मेलन के दूसरे दिन 'यथार्थ और कथा यथार्थ' विषयक परिचर्चा में अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कथाकार कमलेश्वर ने कहा कि संप्रदायवाद, जातिवाद में यथार्थ या न्याय कहीं नहीं है। कहानियों में यथार्थ संप्रदायिकता, तृष्णा व संवेदनशून्यता को दर्शा रही है। उन्होंने पुनः कहा कि बाजारवाद के दौर में यथार्थ यातना के दौर से गुजर रहा है। इस अवसर पर डॉ० नामवर सिंह ने कहा कि कहानी यथार्थ के चित्रण को उकेरती है। साहित्यकार पुरातत्वविद् का काम करता है जो यथार्थ को परत-दर-परत खोलता है। मध्यवर्ग की वकालत करते हुए डॉ० नामवर ने कहा कि मध्यवर्ग के बदौलत ही राजनीति या सत्ता चलायी जा रही है। इनकी संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। गाँधीजी ने भी मध्यवर्ग को जोड़ा, अपनाया और फिर आजादी की लड़ाई लड़ी। मध्य वर्ग को परेशान या कमजोर करनेवाले वे तत्व, जो दबे हुए हैं, जिनसे मध्य वर्ग का कल्याण हो सकता है, आज की कहानियों में उसी परत को हटाने की क्षमता होनी चाहिए। चर्चित समीक्षक डॉ० खगेन्द्र ठाकुर की अध्यक्षता में यह परिचर्चा आयोजित हुई। इस अवसर पर बिहार विधान सभा के सदस्य राजेन्द्र राजन भी उपस्थित थे। सम्मेलन में और प्रस्तावों के अतिरिक्त खतरे में पड़ी साहित्यिक-सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा के लिए संयुक्त मोर्चा (पोपुलर फ्रंट) बनाने का प्रस्ताव रखा किया गया, जिस हैदराबाद में आयोजित प्रगतिशील लेखक संघ के राष्ट्रीय अधिवेशन में पारित करने हेतु प्रस्तुत किया जाएगा।

हरेन पांड्या की हत्या से राजनीति का हिंसक चरित्र उजागर

प्रस्तुतिः ठाकुर वीरेंद्र सिंह

यों तो उपप्रधान मंत्री लाल कृष्ण आडवाणी ने पिछले दिनों गुजरात के पूर्व गृह मंत्री हरेन पांड्या की हत्या के पीछे आतंकवादी और अंडरवर्ल्ड माफिया की मिलीभगत होने की संभावना जताते हुए इस घटना के तार गुजरात से आगे जुड़े होने की बात कही है, किंतु इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि पांड्या जैसे चर्चित और भाजपा में रहते हुए भी मुख्य मंत्री नरेन्द्र मोदी की कार्यशैली के सबसे प्रखार आलोचक पांड्या की हत्या से प्रदेश राजनीति का हिंसक चरित्र स्पष्ट रूप से उजागर हुआ है या यह कहा जाय कि राजनीति में तेजी से पनपते अपराधियों का दुष्परिणाम है।

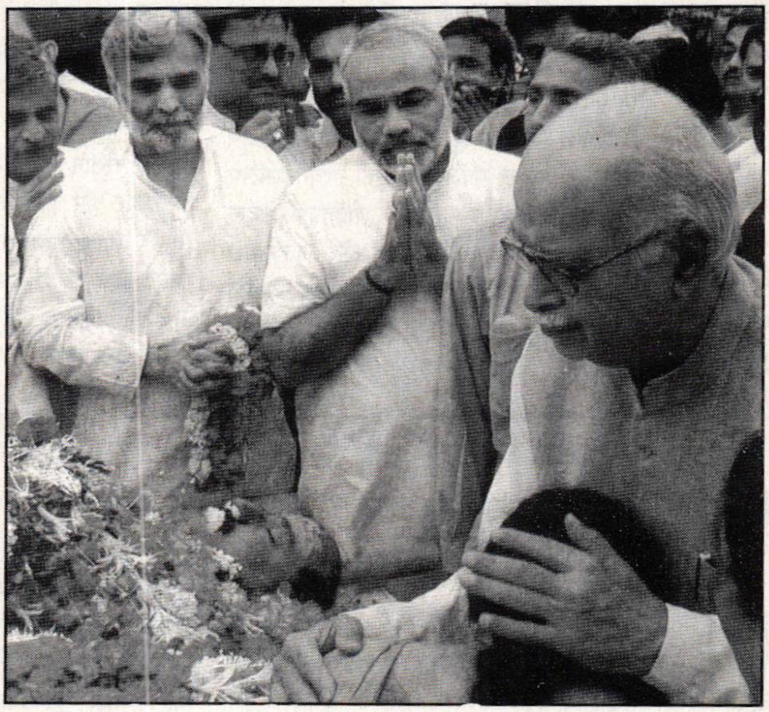

यह घटना प्रदेश की विधि-व्यवस्था पर एक सवालिया निशान लगाते हुए यह सोचने को मजबूर करती है कि जब किसी राज्य के पूर्व गृह मंत्री और सुपरिचित राजनीतिज्ञ की दिन-दहाड़े गोली मारे जाने के आधे घंटे बाद संज्ञान में लिया जाता है तो वहाँ की आम जनता कहाँ तक सुरक्षित है।

एनएसजी कमांडो के साथ पांड्या के घर नरेंद्र मोदी के पहुंचने पर पांड्या के पिता ने बिलखते हुए कहा, 'इन हथियारधारियों के साथ यहां आने का क्या मतलब है ? आप यहां आए ही क्यों ? हमें आपकी सहानुभूति की कतई जरूरत नहीं है। आप यहां से चले जाइए। आप मेरे बेटे को तो बचा नहीं पाए, गुजरात के पांच करोड़ लोगों को कैसे बचाएंगे ?' इसी प्रकार पांड्या की बहन ने मुख्य मंत्री को उनका वह चुनावी वादा याद दिलाया जिसमें मोदी ने गुजरात के लोगों से कहा था, 'तुम मतदान के दिन जागते रहो, मैं बाकी पांच साल जागता रहूंगा। आपने मेरे भाई को क्या सुरक्षा मुहैया करायी थी ? क्या आप जागे हुए थे ?' पांड्या के भांजे मेहुल पंचोली ने तो गृह मंत्री आडवाणी को यह कहकर खुब खरी-खोटी सुनाई, 'आप बिना सुरक्षा के कश्मीर क्यों नहीं जाते ?' इस पर भौंचक रहे आडवाणी ने कहा, 'यह घटना अंडरवर्ल्ड और आतंकवादियों के बीच सांठगांठ का नतीजा है।'

पांड्या के घर मौजूद उनके समर्थक और भाजपा कार्यकर्ताओं के बीच इसी प्रकार की प्रतिक्रिया सुनी गई। कुछ ने तो मुख्य मंत्री को साफ तौर पर इस हत्या का दोषी बताया, कारण कि सरकार ने मोदी और पांड्या के बीच विरोध की वजह से पांड्या को दी गई सुरक्षा को हटा दिया गया था। कांग्रेस के अमरीश चौधरी ने तो विधानसभा में यह दावा तक कर लिया कि यह एक 'राजनीतिक हत्या' थी। श्री चौधरी ने एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा, 'नरेंद्र मोदी के लिए सीट खाली करने से मना करने के बाद पांड्या अपनी जेब में मौत का वारंट लेकर घूम रहे थे।'

जिस प्रकार नरेन्द्र मोदी को घटना के बाद अस्पताल में अहमदाबाद की क्षुब्ध जनता का आक्रोश झेलना पड़ा और उनके खिलाफ जमकर नारे लगे वह इस बात का संकेत अवश्य है कि वहाँ की जनता के शक की सूई भाजपा के ही उनके विरोधियों की ओर जाती है। खैर जो हो यह तो अब सी०बी०आई० के अनुसंधान के बाद पता चल पाएगा कि दोषी कौन है। ह्रेन पांड्या ने आलाकमान के दबाव के बावजूद नरेन्द्र मोदी से कभी समझौता नहीं किया जिसका खामियाजा उन्हें तत्काल यह भुगताना पड़ा कि विधान सभा चुनाव में वे टिकट से वंचित हुए। इसमें तनीक संदेह नहीं कि गुजरात के पूर्व मुख्य मंत्री और राज्य के भारी-भरकम राजनेता केशू भाई पटेल के स्व० पांड्या पक्के समर्थक थे और, इस कारण से भी उन्हें अलग-थलग करने की कोशिश की गई। संभव यह भी है कि पांड्या की हत्या कर विध्वंसकारी ताकतें सांप्रदायिक तनाव फैलाने के प्रयास में हों। इसलिए सरकार का दायित्व है कि वह इस पर कड़ी नजर रखे और वहाँ की जनता भी चौकस रहे।

विचार कार्यालय, अहमदाबाद

सामाजिक परिवेश में भारतीय नारी

❑ज्योति शंकर चौबे

नारी शक्ति की मान्यता मानव जीवन के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक संरचना से ही परिदर्शित है। देवासुर संग्राम में दुर्गा के नवों रूप को सामाजिक परिवेश में पूजित मान्यता आज भी हमारे बीच नारी के शक्ति का प्रतीक है। समाज में नारी के सम्मान की अवधारणा हमारे सामाजिक जीवन की धरोहर रहती आई है। "यत्र नार्यस्तु पूज्यंति, रमंति तत्र देवता। यत्रैतास्तु न पूज्यंते सर्वास्त त्राफ्ला क्रिया"। जिस कुल में नारियों का सम्मान होता है या नारियां पूजित होती हैं। वहां देवता का वास होता है। जहां नारियां सम्मानित नहीं हैं वहां की सारी क्रियायें निष्फल जाती हैं। इस प्रकार की अवधारणायें हमारे प्रारंभिक सामाजिक परिवेश में नारी सम्मान के ऊँचे स्तर की परिचायक हैं। समय के परिवर्तन से सामाजिक जीवन में विकृतियां आई हैं। लेकिन सामाजिक परिवेश की अवधारणायें एवं अनुभूतियां शाश्वत एवं सच पर आधारित होती हैं। कोरी कल्पनायें नहीं होती। लोपामुद्रा एवं अपाला त्रैयी द्वारा वैदिक ऋचाओं की रचना तथा हमारे बिहार राज्य के बेगुसराय जनपद की तत्ववेता गार्गी एवं मैत्रैयी एवं इस देश की गोधा, गोषा, विश्वारा, अदिति, सरमा, काक्षावृति एवं शची जैसी विदुषी महिलाओं की युगीन कृतियां भारतीय नारियों की उत्कृष्ट स्थिति की पहचान है। कोरी कल्पना नहीं है। समय-समय पर हमारे देश में महिलाओं ने सामाजिक, राजनैतिक जीवन में रूढ़िवादी, अनाचार एवं अत्याचार की कुप्रवृत्तियों से संघर्ष किया है और वे परिवर्तन की मुख्य धारा से जुड़ी हैं, लेकिन समय परिवर्तन के साथ-साथ सर्वस्व समर्पण एवं बलिदानी हश्र नारी समाज के लिये अभिशाप बन गया है। महिलाओं पर जीवन साधन का सभी भार डाला जाना सामाजिक अनाचार के रूप में ही कालान्तर में प्रकट हुआ है। हमारी गुलामी एवं सांस्कृतिक चिन्तन का अभाव तथा ऐतिहासिक अनभिज्ञता ने नारी जीवन का रूप ही बदल दिया और नारी सुरक्षा तथा

अस्मिता के परिवेश में उनके जीवन में वंदिशें बढ़ गयीं। नारी शक्ति भोग्या बन गयीं। नारी जीवन का स्वरूप 'वस्तु' में परिवर्तित हो गया। अंधविश्वास, धर्मान्धता, पारंपरिक रूढ़िवादिता एवं क्रूर अमानवीय परिवेश ने इनकी नैसर्गिक मौलिकता ही बदल डाली, लेकिन नियति के विधान को समाज नहीं बदल सका। शक्ति को गुमराह कर बहुत दिनों तक दबा कर नहीं रखा जा सकता। हमें चिन्तन करना होगा कि "जली को आग कहते हैं। बुझी को राख कहते हैं। राख से चिनगारियां जब निकलें तो उसे जीवन में इन्कलाव कहते है"। आधुनिक नारी समाज ने भी आज इसे चरितार्थ कर दिया है। मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में चुनौती बनकर आज वह सामने आ खड़ी हुई है। घर की गृहस्थी से लेकर अध्यात्म, अध्यापन, शिक्षा, अनुसंधान, अंतरिक्ष अभियान, रोजगार व्यवसाय, देश की सुरक्षा तथा साहित्यिक परिवेश एवं राजनीति सभी क्षेत्रों में उनकी सक्रिय सहभागिता आज सामने है।

8 मार्च 1998 को अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस पर महिला चालक सदस्यों ने प्रथम बार मुम्बई से दिल्ली की उड़ान भरी थी। कैप्टन संगीता काबरा और कैप्टन अनुपमा कोहली ने मुम्बई से करांची एवं प्रथम महिला कमाण्डर इन्द्राणी सिंह ने सहचालक कैप्टन अवंतिका मित्तल के साथ दिल्ली से काठमाण्डू की उडान भरी। वैसे कैप्टन सौदामिनी देशमुख और नवोदिता भसीन ने कोलकाता से सिलचर की उड़ान भरी थी। इसी दल ने 1989 में मुम्बई से गोवा तक उड़ान भरी। कैप्टन सौदामिनी और इन्द्राणी सिंह प्रथम महिला ममाण्डर के रूप में गौरवान्वित हुई। जबकि 1966 में ही दोवाई बनर्जी ने उड़ान के इस क्षेत्र में प्रवेश कर पुरुषों के एकाधिकार को तोड़ा था। आज 13 प्रतिशत महिलायें विमान सेवा में कार्यरत हैं।

1980 में भारत से अमेरिका पहुंचकर 1994 में अन्तरिक्ष अभियान के सदस्य के रूप में चुना जाना एवं प्रथम बार अंतरिक्ष में जाकर 6 दिसम्बर 1996 को सकुशल धरती पर लौट आने का श्रेय हरियाणा के करनाल में जन्मी भारतीय युवती कल्पना चावला को ही प्राप्त हुआ था। कालचक्र की काली छाया ने भारत की बेटी कल्पना चावला को दुबारा अंतरिक्ष अभियान से सकुशल लौटते समय धरती

पर उतरने के 16 मिनट पहले अंतरिक्ष के परिवेश में सदा के लिए अपनी छाया में भले ही लपेट लिया, लेकिन सुश्री चावला ने नारी शक्ति की पहचान विश्व मानचित्र पर सदा के लिए अमिट छोड़ दिया और अपने को आकाशीय ऐतिहासिक पृष्ठों में चमकते सितारों की तरह जोड़ दिया। वैज्ञानिक अनुसंधान के क्षेत्र में सरला सुब्बा राव ने मलेशिया पर विशेष शोध किया। इन्हें इलिनाय विश्वविद्यालय से जैनेटिक्स में पीएच. डी. तथा 1991 में आई० सी० एम० आर० अयंगार पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कृषि अनुसंधान में स्वर्णलता आर्य के अनुसंधान से देश आज गौरवान्वित है।

साहित्य के क्षेत्र में 1976 में आशा पूर्णा देवी, 1981 में अमृता प्रीतम 1982 में महादेवी वर्मा, 1996 में महाश्वेता देवी ने 'ज्ञानपीठ' पुरस्कार प्राप्त कर साहित्य जगत में महिलाओं के योगदान को प्रतिस्थापित किया है। कृष्णा सोवती को मैथिली शरण सम्मान, महा सुन्दरी देवी को कबीर अलंकरण से अलंकृत होना इतिहासकार रोमिला थापर को 'अंतरराष्ट्रीय एकेडमिक अवार्ड' उपन्यासकार अरुन्धती राय को 'द गॉड ऑफ स्माल थिंग' के लेखन पर श्रेष्ठ पुरस्कार 'बुकर' से सम्मानित किया जाना, भारतीय महिला जगत की बड़ी उपलब्धियां हैं। अरुन्धती राय की यह पुस्तक 16 भाषाओं में अनुवादित हैं।

कला के क्षेत्र में 1996 में 'कालीदास सम्मान' से विभूषित नर्तकी शांताराव 1989 में दादा साहेब फाल्के पुरस्कार एवं 1995 में आदित्य विड़ला पुरस्कार से सम्मानित भारत रत्न लता मंगेशकर, तथा अवान ई मिस्त्री प्रथम महिला तबला वादक ने 'लालमणि' उपाधि प्राप्त कर एक कीर्तिमान स्थापित किया है। 82 वर्षीय एस० सुब्बाराव ने कर्नाटक शैली में मानवीय अनुभूतियों को अहसास कराकर 'भारत रत्न' के सम्मान से विभूषित होकर महिला जगत की पहचान मानवीय जगत में कराई है।

खेल के क्षेत्र में नीत दैवेया प्रथम टेनिस प्रशिक्षक, वैडमिन्टन में अपर्णा पोपट, भारोतोलन में कुंजा रानी देवी (42 पदक विजेता) मल्लेश्वरी द्वारा एशिया महिला भारोतोलन में स्वर्ण पदक एवं ओलंपिक में कास्य पदक प्राप्त करने तथा केतकी कुलकर्णी द्वारा 8 वर्ष से कम आयु की लड़कियों की शतरंज प्रतियोगिता में ब्रिटिश चैम्पियनशिप प्रापत करने से महिला जगत के लिए खेल में भी प्रतीकात्मक पहचान बनी है।

महिलाओं ने राजनीति के क्षेत्र में भी पदार्पण कर अपनी पहचान बनाई है। 11वीं लोक सभा में 26 महिलायें सांसद हैं। एवं कई मंत्रियों के पद पर भी सुशोभित हैं। राज्यों के मुख्यमंत्री के रूप में भी महिलाओं ने अपनी पहचान बनाई है। हमारे बिहार राज्य के 8471 पंचायतों में निर्वाचन के बाद पंचायत सदस्य के रूप में निर्वाचित 1,60,026 सदस्यों में 44301 तथा 529 पंचायत समितियों के निर्वाचित 11922 सदस्यों में 3951 एवं 37 जिला परिषदों के 1162 निर्वाचित सदस्यों में 391 महिलाओं का निर्वाचित होकर सदस्य बनना तथा 8173 दलित वर्ग की महिलाओं का चुनकर आना महिलाओं के बीच राजनैतिक जागरूकता एवं जन साधारण की चैतन्यता का परिदर्शित करता है। जबकि लोक सभा में महिलाओं के लिए अभी 33 प्रतिशत का आरक्षण विवादास्पद बना हुआ है।

प्रशासनिक, आरक्षी एवं चिकित्सा तथा शिक्षा सेवा के क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका में अग्रिम भूमिका के परिवेश में सर्वविदित है।

भारत ही नहीं विश्व के अन्य देशों में भी महिलाओं की सहभागिता प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ी है। विश्व के सभी सांसदों में महिलाओं की सहभागिता 11.7 प्रतिशत है। 7.15 प्रतिशत महिलायें संसदीय अध्यक्ष हैं। 10.8 प्रतिशत महिलायें राजनैतिक दलों का नेतृत्व सम्भाले हुई हैं। यू० एन० डी० पी० 1997 के प्रतिवेदन के आधार पर औद्योगिक देशों के प्रशासनिक एवं व्यापारिक प्रबन्धक में कार्यरत महिलाओं की संख्या 27.4 प्रतिशत है। छात्रायें शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों से आगे चल रही हैं। 12वीं कक्षा में भारत में 78.5 प्रतिशत लड़कियों के समक्ष छात्रों की संख्या 63.3 प्रतिशत है। होटलों, व्यूटीपार्लरों, सेल्स एकिज्क्यूटिव अथवा सेल्स एजेंट के रूप में महिलाओं ने अपनी सक्रिय भूमिका परिदर्शित की है।

नारी साहस एवं शौर्य की स्रोत हैं। समय आने पर संघर्ष एवं समस्याओं के निदान में इनकी अपनी अलग पहचान है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि "नारी जब अपने ऊपर थोपी गयी बेड़ियों एवं कड़ियों को तोड़ने लगेगी तो विश्व की कोई शक्ति उन्हें रोक नहीं सकेगी"। आज महिला दिवस के अवसर पर हम सभी के लिए आवश्यक है कि हम उन्हें सम्मान दें। सहयोग एवं स्नेह देकर सहभागिता के साथ उन्हें साथ लेकर आगे बढ़ने का प्रयास करें। हमारे इस प्रकार के प्रयास मानव जीवन को शक्ति एवं नैसर्गिक जीवन प्रदान करने में सहायक होगे। समाज का एक क्रियाशील सदभावनायुक्त स्वरूप निखरेगा।

संपर्क - एम०आई०जी०-83,
हनुमाननगर, पटना-20,

मातृभाषा को सम्मान न देने वाला सम्मान का हकदार नही

'सूचनापरक तकनीकी युग में हिंदी शिक्षण' विषयक संगोष्ठी सम्पन्न

विचार कार्यालय, चेन्नै

प्रस्तुति : डॉ. मधु धवन

चेन्नै शहर के स्टेल्ला मॉरिस कॉलेज के प्रांगण में पिछले 16 से 18 जनवरी को हिंदी साहित्य सम्मेलन तमिलनाडु बहुभाषी लेखिका संघ के संयुक्त तत्वावधान में 'सूचना परक तकनीकी युग में हिंदी शिक्षण' विषय को केंद्र में रखकर एक सफल एवं जीवंत संगोष्ठी का आयोजन सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का उद्घाटन पांडियेरी के उपराज्यपाल महामहिम के. आर. मलकानी ने दीप प्रज्ज्वलित कर करते हुए कहा कि मातृभाषा को सम्मान न देने वाला व्यक्ति कभी भी दूसरों के सम्मान का अधिकारी नहीं हो सकता। डॉ. दुलालेचंद शास्त्री के स्वस्ति वाचन से प्रारंभ इस संगोष्ठी में स्टेल्ला मॉरिस कॉलेज की छात्राएं सुश्री भारती रामसब्बन एवं मिशा राजाराम द्वारा सरस्वती बन्दना प्रस्तुत करने के पश्चात् इन्हीं छात्राओं ने 'तमिलनाडु' प्रस्तुत किया। इसके पूर्व हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के श्रीधर शास्त्री से संगोष्ठी के मन अतिथियों एवं सुधीजनों का स्वागत किया।

इस कार्यक्रम की मुख्य सूत्रधार स्टेल्ला मारिस कॉलेज की हिंदी विभागाध्यक्षा एवं राष्ट्रीय विचार मंच की चेन्नै शाखा की अध्यक्षा डॉ. मधु धवन ने विषय-वस्तु की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने के क्रम में संगोष्ठी के लक्ष्य को रेखांकित किया। स्टेल्ला मॉरिस कॉलेज की प्राचार्या डॉ. अन्नम्मा फिलिप की प्रेरणा से प्रकाशित 'स्वर्णिम भविष्य की ओर' स्मारिका सहित 'खाद्य पदार्थों में मिलावट की पहचान के तरीके' पुस्तक का लोकार्पण हुआ।

इस अवसर पर मद्रास विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. सैय्यद रहमतुल्ला ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि जिस प्रकार दक्षिण भारत हिंदी प्रचार समिति द्वारा हिंदी सिखाने का कार्य चल रहा है, उसे और भी सुचारू ढंग से किया जाए तो तमिलनाडु की ग्रामीण जनता में हिंदी के लिए जो परायापण है उसे दूर किया जा सकता है। इसके लिए पाठ्य पुस्तकों का पुनर्निर्माण करने के साथ-साथ तमिलनाडु के प्रादेशिक विषयों को भी जोड़ना होगा।

इस संगोष्ठी में डॉ. रहमतुल्ला, पी हरिदास, के. आर. मलकानी, डॉ. सिस्टर अन्नम्मा फिलिप तथा अनराज गादिया आदि मान्य अतिथियों का साल ओढ़ा कर सम्मान किया गया। संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में हिंदी शिक्षण से संबंधित कई विषयों पर आलेख प्रस्तुत किये गए जिनमें निम्नलिखित बिंदुओं की ओर विद्वतजनों के ध्यान आकृष्ट किये गए। हिंदी के विकास में मुख्य रूप से रूकावटों में अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली, देशी कलर्क बनाने वाली मैकाले की शिक्षा पद्धति, अंग्रेजी जानने वालों को बड़ी-बड़ी कंपनियों में

अच्छी नौकरी मिलना तथा अमेरिका का सशक्त सैन्य एवं आर्थिक शक्ति के रूप में उभरना बताया गया। संगोष्ठी में पधारे अतिथियों एवं उपस्थित प्रबुद्धजनों के प्रति डॉ. जय लक्ष्मी सुब्रह्मण्यम ने आभार व्यक्त किया।

संपर्क: के - 3, अन्ना नगर (ईस्ट), चेन्नै

हिंदी सबसे ज्यादा प्रचलित भाषा
बेल्लूर में हिंदी कार्यशाला संपन्न

तमिलनाडु के बेल्लूर में न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी के मुफस्सिल मंडल एवं शाखा कार्यालयों के कार्मिकों के लिए पिछले 7 फरवरी, 2003 को आयोजित एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त सुब्बा रेड्डी ने कहा कि हिंदी सबसे ज्यादा प्रचलित और अधिक लोगों के द्वारा बोली जाने वाली भाषा है, जिसे थोड़ा प्रयास करने पर आसानी से सीखा जा सकता है। यह प्रसन्नता की बात है कि जिस तमिलनाडु में हिंदी का सबसे ज्यादा विरोध हुआ वहीं आज ज्यादे लोग हिंदी सीखते और उसका प्रयोग करते हैं।

कार्यशाला की अध्यक्षता वरिष्ठ मंडल प्रबंधक डॉ. एन. चन्द्र बाबू ने न केवल अपना परिचय हिंदी में दिया बल्कि अपने उद्गार कम ही शब्दों व्यक्त किये और सभी प्रतिभागियों को इस कार्यशाला में हिंदी में बोलने का अनुरोध किया। इस अवसर पर हिंदी प्राध्यापक धामोदरण ने जहां हिंदी व्याकरण एवं टिप्पणी लेखन पर चर्चा की वहीं हिंदी अधिकारी ईश्वर चन्द्र झा ने संघ की राजभाषा नीति और हमारा दायित्व पर प्रकाश डाला। श्रीमती कला कुमार ने पत्र लेखन पर एक व्याख्यान दिया। प्रारंभ में सभी अतिथियों तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया हिंदी अधिकारी श्री झा ने और हिंदी संयोजक राजेश ने आभार व्यक्त किया।

प्रस्तुति : ईश्वर चन्द्र झा, हिंदी अधिकारी,
दी न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
क्षेत्रीय कार्यालय : स्पेन्सर टावर्स, 770 ए,
अण्ण सालै, चेन्नै - 600002

साहित्य समाचार : भारतीय जीवनादर्शों को प्रसारित करेगी 'विश्वंभरा'

हैदराबाद में 'विश्वंभरा' संस्था का उद्घाटन

संसार भर में भारतीय जीवन मूल्यों के प्रचार-प्रसार के लिए 6 नवम्बर, 2002 को हैदराबाद में गठित 'विश्वंभरा' का उद्घाटन पिछले 29 मार्च, 2003 को आंध्र सारस्वत् परिषद् में कर्नाटक के राज्यपाल महामहिम टी. एन. चतुर्वेदी द्वारा संपन्न हुआ। ज्ञानपीठ पुरस्कार ग्रहीता पद्मभूषण डॉ. सी. नारायण रेड्डी ने समारोह की अध्यक्षता की। भावी पीढ़ी के बीच भारतीय जीवनादर्शों को प्रचारित करने वाली यह संस्था भारतीय शिष्टाचार, साहित्य दर्शन आदि को सही परिप्रेक्ष्य में समझने-समझाने पर बल देगी ताकि उसे नैतिक, बौद्धिक और सांस्कृतिक मार्गदर्शन प्राप्त हो सके इसके लिए यह संस्था सभी तरह के प्रचार माध्यमों सहित चिंतन गोष्ठी, कक्षा परिसंवाद, कार्यशाला, रंगमंच, नुक्कड़ नाटक प्रशिक्षण एवं प्रसार व्याख्यान आयोजित करने के साथ ही भारतीय मूल्यों को विश्व स्तर पर उजागर करने वाले शोध एवं प्रकाशन को भी प्रोत्साहित करेगी ताकि भारत की कुटुंब-संस्कृति को व्यवहारिक रूप में अपनाने की ओर विश्व का ध्यान आकृष्ट किया जा सके इन उद्देश्यों को कार्य रूप देने के लिए देश-विदेश के जाने-माने हस्ताक्षरों को राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधि के रूप में मनोनीत करने अतिरिक्त विशेषज्ञ समिति का सदस्य बनाया गया है।

प्रस्तुति : कविता वाचक्नवी,
महासचिव, 'विश्वंभरा'
पो. बॉक्स नं. - 13, खैरताबाद,
हैदराबाद-500004

साहित्य समाचार : आजाद भारत में हिंदी को प्रतिष्ठित करना चाहते थे नेताजी

पिछले दिनों नई दिल्ली में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जंयती पर आयोजित कवि सम्मेलन में पधारे प्रबुद्धजनों को संबोधित करते हुए नेताजी के सहयोगी रहे भारत के पूर्व निर्वाचन आयुक्त जी.वी.जी. कृष्णमूर्ति ने नेताजी के कथन की याद दिलायी और कहा कि उनके कथनानुसार कहा कि भारत के समस्त सार्वजनिक कार्य राष्ट्रभाषा हिंदी में होना चाहिए। चन्द्रबती चौधरी स्मारक ट्रस्ट और इंद्रप्रस्थ भारती के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित इस कवि सम्मेलन में पधारे तीन पीढ़ी के कवि – गीतकारों ने देश प्रेम से प्रेरित रचनाएं सुनाकर जहां देश वासियों को राष्ट्र और राष्ट्रभाषा के प्रति उनके कर्तव्य का अहसास कराया, वहीं समकालीन स्थितियों पर सटीक व्यंग्य करके यह चेतावनी दी कि देश की नियति का संचालन करने वाले ताकतवर लोगों के आचरण पर उनकी पैनी निगाह है। कवि उदय प्रताप सिंह की ये पंक्तियां स्रोताओं के दिलों को छू गयीं –

कभी-कभी सोचा करता हूं, बेचारे छले गए हैं,
फूलों का मौसम लाने की कोशिश में जो चले गए हैं।

इसी प्रकार सुप्रतिष्ठित कवि मधुर शास्त्री की ये पंक्तियां बड़े ध्यान से सुनी गईं –

प्यार जिसके करीब होता है बाअदब बानसीब होता है,
ऐसी दौलत जिसके पास नहीं, आदमी वही गरीब होता है।

कार्यक्रम के आयोजक तथा इन्द्रप्रस्थ भारती के प्रदेश महामंत्री प्रवीण आर्य ने समाज पर चोट इन पंक्तियों के जरिए की –

आदमी खुद को बताता आदमी, आदमी सबको जताता आदमी,
आदमी बेसक कहे हूं आदमी, आदमी में नहीं वो आदमी।

कार्यक्रम के संचालक-कवि राजवीर सिंह क्रांतिकारी ने मुशर्रफ को इन पंक्तियों से उत्तर देने का साहस किया –

अब के जंग छिड़ी तो नाम निशान नहीं होगा,
कश्मीर तो होगा, लेकिन पाकिस्तान नहीं होगा।

इस कवि सम्मेलन में महानगर के जिन अन्य कवियों ने अपनी कविताएं सुनायीं उनमें देवेन्द्र आर्य, मदनलाल क्रांत, किशन सरोज, बागीश दिनकर, धन प्रकाश गुप्त, सुश्री कीर्तिकाले, सरिता शर्मा, बाबा कानपुरी, सुरेन्द्र शुकुमार तथा गजेन्द्र सोलंकी का नाम उल्लेखनीय है। हरिवंश राय बच्चन को श्रद्धांजलि अर्पण के पश्चात् कार्यक्रम का समापन हुआ।

प्रवीण आर्य, प्रदेश महामंत्री
इन्द्रप्रस्थ साहित्य भारती,
80/ए-1, इ'शदन', वेस्ट आजाद नगर,
दिल्ली - 51

'इंसान को इंसान की पहचान नहीं है' हलका-ए-तिश्नगान अदब की 351वीं काव्य संगोष्ठी संपन्न

पिछले दिनों नई दिल्ली के कथाकार एवं पत्रकार श्रीमती सविता चड्ढा के निवास पर आयोजित हलका-ए-तिश्नगान अदब की 351वीं काव्य संगोष्ठी में

पधारे देश के जाने-माने उर्दू, हिंदी, पंजाबी के कवियों ने आतंकवाद, देश प्रेम और सामाजिक सरकारों की रचनाएं सुनाई। वरिष्ठ शायर जगदीश जैन की अध्यक्षता में आयोजित इस संगोष्ठी में काव्य-सुधा-रस का पान कराने वाले कवियों एवं सुधी श्रोताओं का स्वागत करते हुए सीमाब सुल्तानपुरी ने गोष्ठी का संचालन किया। इस अवसर पर निम्नांकित कवियों ने अपनी रचनाओं का पाठ कर श्रोताओं को सराबोर किया – कुलदीप गौहर, डॉ. जफर मुरादाबादी, सीमाब सुल्तानपुरी, ममता वाजपेयी, प्रदीप साहिल, हरजीत कौर, राजकुमार सैनी, लक्ष्मी शंकर वाजपेयी, उर्मिल सत्यभूषण, सविता चड्ढा, केसर सिंह गुप्ता, राजकुमारी शर्मा 'राज', भूपिन्द्र कुमार, शशिकांत, शैलजा दुबे, महावीर सिंह दुखी, चरणजीत चरण, लोकेश रोहेले 'कैफ', बृजअभिलाषी, भगवान दास एजाज, दिल फिरोजपुरी, अकबर देहलवी, हातिम देहलवी, दीक्षित दिनकौरी, शाकिर अली 'शाकिर', रमेश तन्हा, सर्वेश चंदौसी, डॉ. जी. आर. कंवल, मुन्नवर सरहदी, मतीर होशियारपुरी तथा बेदिल सरहदी। प्रारंभ में शहीद पत्रकार रमेश चन्द्र की पत्नी सुदर्शन चोपड़ा ने दीप प्रज्जवलित कर संगोष्ठी का उद्घाटन किया।

प्रस्तुति : सीमाब सुल्तानपुरी

मानसिक विकास के बिना बौद्धिक विकास अपर्याप्त

- मुनिश्री लोक प्रकाश 'लोकेश'

मैदान में युद्ध तो बाद में लड़ा जाता है, पहले तो वह मनुष्य के मस्तिष्क में पैदा होता है। शिक्षा पद्धति में अहिंसक प्रशिक्षण के द्वारा मस्तिष्कीय प्रशिक्षण के क्रम को जोड़कर मानव मस्तिष्क में मौजूद पाश्विक वृतियों को तिरोहित कर हिंसा, युद्ध व आतंकवाद को समाप्त किया जा सकता है। ये उद्गार है अहिंसा यात्रा के अग्रणी संत कवि मुनिश्री लोक प्रकाश 'लोकेश' के, जिसे राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) और 'द कॉमनवेल्थ ऑफ लर्निंग' की ओर से आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में उन्होंने व्यक्त किए। नई दिल्ली के दीन दयाल मार्ग स्थित अणुव्रत भवन में जैन विश्वभारती की अध्यक्षता में आयोजित इस संगोष्ठी में मौजूदा शिक्षा प्रणाली को दोषपूर्ण बताते हुए आचार्य महाप्रज्ञ के शिष्य मुनिश्री 'लोकेश' ने पुन: कहा कि मानसिक व भावनात्मक विकास के बिना केवल शारीरिक या बौद्धिक विकास अपर्याप्त है। इस अंतराष्ट्रीय शिविर में जाम्बिया, तनजातिया, लियोन, नाइजीरिया, केनिया, घाना आदि के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त मुनि कुमुद कुमार, अक्षय कुमार तथा आर बनर्जी ने भी भारतीय संस्कृति, जैन दर्शन आदि विषयों पर हुए विचार-विमर्श में भाग लिया।

संगीता, नई दिल्ली से

ग़ज़ल के जरिए नए जहान की तलाश

पुणे में 'सरगोशियां' का लोकार्पण

सिंधी, हिंदी, मराठी और उर्दू चार जवानों में अपने फन को पेश करनेवाली पुनावाली इन्दिरा 'शबनम' ने अपनी ग़ज़लों के जरिए नए जमीन की तलाश की है, अपने दिल की आवाज को इंसान और इंसानियत के दिल की आवाज बनाने की कोशिश की है। वह खुद रिश्तों की हिफाजत करना अपना फर्ज समझती हैं। यही वजह है कि रिश्तों के कत्ल होने पर उन्हें बड़ा दुख होता है। ये उद्गार हैं उन सभी मान्य अतिथियों व वक्ताओं के जो पिछले 13 मार्च को पुणे स्थित शिवाजी नगर के मोडक हॉल में आयोजित इन्दिरा 'शबनम' के गजल संग्रह 'सरगोशियां' के लोकार्पण समारोह में व्यक्त किए गए। पुस्तक का लोकार्पण हुआ समारोह के अध्यक्ष एवं सुपरिचित साहित्यकार दामोदर खाड़से के कर-कमलों द्वारा और लोकार्पित पुस्तक की समीक्षा संगीता जोशी व नजीर फतेहपुरी ने प्रस्तुत की। दीप प्रज्ज्वलन और सरस्वती वंदना से प्रारंभ समारोह के मान्य अतिथियों का परिचय और स्वागत किया धामणकर मंजीरी ने। सुश्री मंजीरी के संचालन में आयोजित इस समारोह में शरद करमरकर, तुष्ठ पुण्ठे, अलका बेंद्रे ने इस गजल संग्रह के कुछ गजलों का गायन किया। अंत में 'शबनम' द्वारा उपस्थित अतिथियों एवं सुधी श्रोताओं के प्रति आभार व्यक्त किए जाने के पश्चात समारोह का समापन हुआ।

प्रस्तुति:पुनावाला इन्दिरा' शबनम', मॉडेल कालोनी, शिवाजी नगर, पुणे-16 (महाराष्ट्र)

Solutions Point

For

SOLUTIONS IN :

- **Hardware**
- **Software**
- **Networking Support**
- **Graphic Designing**
- **Web Designing**
- **Composing**
- **Scanning**
- **Art Work**

AMC, Maintenance of IBM, COMPAQ, H.P., Zenith and can be had assembled Pc's

Contact :

Head Office : U-207, Shakarpur, Vikas Marg, Delhi-92

Ph. : 011-22530652

Mobile : 9811281443, 9811279351, 9868073101

Branch Office : 102, Sec 1, Vaishali, Ghaziabad, U.P.

E-mail : Solutionspoint@hotmail.com

HURRY UP

New Books New Syllabus

Then Why Struck to old

Join Study Point

Contact For Tuition

Up to 7th Class-All Subjects

8th to 10th Class-Science Subjects

Phone : 011-22530653

Mobile : 9811281443

पहाड़ी सौंदर्य की चितेरी शिवानी का निधन

विचार कार्यालय, दिल्ली

कथा साहित्य में नारी संवेदना और पहाड़ी सौंदर्य की चितेरी सुप्रसिद्ध लेखिका 'पद्मश्री' गौरा पंत शिवानी ने 79 वर्ष की उम्र में पिछले 21 मार्च को इस दुनिया से अपना सांसारिक नाता तोड़ लिया। अपने अंतिम दिनों में रोग जर्जर अवस्था के बावजूद वे साहित्य साधना में लगी रहीं। उर्दू के प्रसिद्ध शायर वारसी की मजार पर लिखी ये पंक्तियाँ वे दोहराया करती थीं-'थम सा गया हूँ नींद आ रही है सोने दे, बहुत दिया है साथ तेरा जिंदगी मैंने।

उनकी पुत्री और राष्ट्रीय दैनिक हिन्दुस्तान की तेज-तर्रार संपादक मृणाल पाण्डे ने बताया कि उनकी माँ की इच्छा थी कि कर्मकांड बिना किसी भारी तामझाम के हिंदू रीति रिवाज के अनुसार हो।

साहित्य की इस साधिका का जन्म 17 अक्टूबर 1924 को सौराष्ट्र के राजकोट में एक कुलीन और समृद्ध कुआऊंनी परिवार में हुआ था। शिवानी को साहित्य लेखन की प्रेरणा विरासत में तो मिली ही, शिक्षा मंत्रालय में सचिव पद पर आसीन रहे अपने पति से भी काफी प्रोत्साहन मिला। नारी संवेदना और अल्मोड़ा के समाज की रीति-नीति के साथ-साथ पहाडों का प्राकृतिक सौंदर्य शिवानी साहित्य के मुख्य विषय थे। कृष्णकली, चौदहफेरे, कालिंदी, अतिथि और विषकन्या जैसे करीब 35 उपन्यासों के अतिरिक्त शिवानी ने कहानियों और संस्मरणों की एक अबाध श्रृखंला रची। इन उपन्यासों के हर एपिसोड में पाठक को बाँध लेने की सामर्थ्य थी शिवानी की कलम में। उनमें जीने और लिखने की प्रबल इच्छा थी। रूप -सौंदर्य -लालित्य और प्रकृति में स्वयं को समेटे हुई शिवानी जी विरासत में जो कुछ हमें दे गईं हैं उससे नई पीढ़ी बहुत कुछ सीख सकती है क्योंकि बिना अकादमीक या साहित्यिक गुट से गठजोड़ किए उन्होंने कला के प्रति अपने निष्कपट समर्पण भाव तथा अपनी प्रतिभा के बल पर पाठकों के मन-मस्तिष्क को जीत लिया है। विचार दृष्टि परिवार की ओर से दिवंगत शिवानी जी को हार्दिक श्रद्धांजलि।

भारतीय साहित्य के विलक्षण लोकयात्री देवेन्द्र सत्यार्थी का देहावसान

विचार कार्यालय, दिल्ली

भारतीय साहित्य के विलक्षण लोकयात्री देवेन्द्र सत्यार्थी, जिन्होंने अपना पूरा जीवन अपनी शर्तों पर जिया का पिछले 12 फरवरी को देहावसान हो गया। लोकगीतों के माध्यम से देश की आम जनता के दु:ख-सुख का इतिहास लिखनेवाले देवेन्द्र सत्यार्थी का मत था कि बगैर साहित्य, समय और जनता को समझना कठिन है। महात्मा गाँधी ने इनके लोकगीत संग्रह के काम को आजादी के संघर्ष से जोड़कर देखा और कहा था कि तुम स्वाधीनता का काम कर रहे हो। हिंदी, अंग्रेजी, पंजाबी, और उर्दू के रचनाकार सत्यार्थी की अबतक पचास से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें 'धरती गाती है','बेला फूले आधी रात', 'धीरे बहो गंगा', 'बाजत आवे ढोल', लोक साहित्य पर लिखी उनकी हिंदी में प्रकाशित महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं। इसी प्रकार हिंदी में ही उनके महत्वपूर्ण उपन्यास हैं-'रथ के पहिए', 'कठपुतली', 'दूध गाछ', 'ब्रहमपुत्र', 'कथाक हो उर्वशी', 'तेरी कसम सतलज' है। उर्दू में 'मैं हूँ खाना बदोश', 'गाएजा हिन्दुस्तान 'तथा पंजाबी में 'गिद्धा' उनके लोक साहित्य की पुस्तके हैं। पाँच खण्डों में उनकी आत्मकथा प्रकाशित हैं। 'आजकल' के पूर्व संपादक सत्यार्थी के उपन्यास, कहानियों, संस्मरणों और रेखाचित्रों में धरती का दर्द दिखाई पड़ता है।

सत्यार्थी जी सच्चे अर्थों में नागार्जुन की तरह एक यायावर थे, जो अपनी सुख-सुविधा का ख्याल न रखते हुए देश के एक छोर से दूसर छोर तक निकल पड़ते थे और तमाम भूमि को वह अपना समझते थे। आखिर तभी तो उनकी 'ब्रहमपुत्र' में असम 'दूधगाछ' में केरल और 'उर्वशी कथा कहो' में उड़ीसा का वर्णन है। उनमें एक तरफ हिमालय की ऊंचाई थी तो दूसरी तरफ बच्चों जैसी सरलता। सतत अकेले मार्ग पर चलने वाले तथा लोक गीतों के इतिहास रचने वाले सत्यार्थी को 'विचार दृष्टि' परिवार की हार्दिक श्रद्धांजलि।

साभार-स्वीकार

पुस्तकें :

1. दी लाइफ ऑफ अब्दुल गफार खान
-दी नन वायलेंट रिवोलूॅशनरी
संपादन: डॉ० वाई०पी० आनन्द
प्रकाशक: निदेशक, राष्ट्रीय गाँधी, संग्रहालय, राजघाट, नई दिल्ली-22

2. (क)तस्वीरें, - काव्य संग्रह
(ख) सरगोशियाँ - गज़ल संग्रह
कवयित्री : इन्दिरा 'शबनम'
प्रकाशन : 9/ब 'मयूरबन' एपार्टमेंट, 1100, शिवाजी नगर, मॉडेल कॉलोनी, पुणे-16

3.(क) मानवीय मूल्यों की खोज में
(ख) अनुभूति की छाया
रचयिता : डॉ० रंगी प्र० सिंह 'रंगम'
प्रकाशक : अ०भा०भाषा साहित्य सम्मेलन, बिहार शाखा, बरनबाल, श्री उदित आयतन, शेखपुरा, पटना-800014

4. (क)जागरण संदेश - काव्य संग्रह
(ख) मैं गीता का गीत सुनाता हूँ
(ग)तीन भूलों का दंश कब तक सहेगा भारत?
कवि : डॉ०रंगी प्र० सिंह 'रंगम'
प्रकाशक : डॉ० केशव कुमार सिन्हा
डॉ० रंगी- लक्ष्मी निवास, बुद्ध कॉलोनी, बोरिंग केनाल रोड-7, पटना-800001

5. कथा भारती - कहानी संकलन
प्रधान संपादक - डॉ० स्नेहलता पारूथी
प्रकाशक : अ०भा०सा०सम्मेलन, बिहार

6. बंगाल और राजभाषा हिन्दी
लेखक : राजकिशोर सिंह
प्रकाशक : प्रधान कार्यालय, पूर्व रेलवे, राजभाषा अनुभाव, कोलकाता-700001

7. समय की आहट - कहानी संग्रह
कथालेखिका : सुशीला झा
प्रकाशक : वातायन पब्लिशिंग एडीशन आर्केड, फ्रेजर रोड, पटना-1

8. थोड़ी बारिश दो - कविता संग्रह
रचनाकारा - अमरेन्द्र नारायण
प्रकाशन : राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा०लि०, जि-17, जगतपुरी, दिल्ली-51

9. बूढ़ा बरगद - काव्य संग्रह
कवि - डॉ० सहदेव सिंह पाचर
प्रकाशन : प्रो० कॉलोनी, भभुआ, कैमूर-1

10. (क)सांस्कृतिक क्रांति अनिवार्य
(ख) मंत्रीत्व का अनुभव
लेखक : चतुरानन मिश्र, (पूर्व केन्द्रीय मंत्री)
मीनाबाग, दिल्ली - 1

11 नहीं मैं सच नहीं बोलूंगा
लेखक : जयनाथ मणि त्रिपाठी
प्रकाशक : काव्यायनी प्रकाशन, डी-215, बड़ालालपुर आवासीय योजना, वाराणसी

पत्रिकाएं :

1. हम सब साथ साथ - जनवरी-मार्च, 03
संपादक : श्रीमती शशि श्रीवास्तव,
प्रकाशन : प्लाट न० 175ए, आनंदपुरमधाम, कराला, दिल्ली-110081

2. अणुव्रत- 1-5 जनवरी 03
संपादक : डॉ० महेन्द्र कर्णावट,
प्रकाशक : अणुव्रत महासमिति 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-2

3. (क)मगही पत्रिका - अक्टूबर-नवंबर 02
(ख) समकालीन मगही साहित्य
संपादक : श्री धनंजय श्रोत्रिय,
प्रकाशन : E-137, गणेश नगर, पाण्डवनगर कॉम्प्लेक्स, दिल्ली, दिल्ली-110092

4. साहित्य परिक्रमा, जनवरी-मार्च 03
संपादक : योगेन्द्र गोस्वामी
प्रकाशक : अ०भा०साहित्य परिषद न्यास, झंडेवालान, दिल्ली-55

5. विवरण पत्रिका, दिसंबर 02, मार्च 03
संपादक : धोण्डीराव जाधव
प्रकाशक : हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद, नामपल्ली स्टेशन रोड, हैदराबाद-1

6. राष्ट्रभाषा - जनवरी, 2003
संपादक : प्रा० अनंतराम त्रिपाठी
प्रकाशक : राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा-442003

7. शब्द - फरवरी 2003
संपादक : आरसी यादव
प्रकाशक : शब्दपीठ, सी-1104, इंदिरा नगर, लखनऊ-226016, ऊ०प्र०

8. सभ्यता संस्कृति - फरवरी 2003
संपादक : श्रीमती ऋचा सिंह
प्रकाशक : श्रीमती ऋचा सिंह, बी-4/245, सफदर जंग इन्क्लेव, नई दिल्ली-29

9. समय सुरभि - वर्ष-6
संपादक : नरेन्द्र कुमार सिंह
प्रकाशन : शिवपुरी (नया जेल से पश्चिम), प्रो०/ जिला - बेगुसराय-851101

10. सदीनामा -जनवरी 2003
संपादक : जितेन्द्र जितांशु
प्रकाशन : H&5, Govt-Orts. Budge Budge 24 pgs (S) west Bangal

11. भारतीय रेल -जनवरी-फरवरी 2003
रेल राजभाषा -अक्टूबर-दिसम्बर 2002
संपादक : प्रमोद कुमार यादव
प्रकाशक: रेल मंत्रालय, 309, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-1

12. लोक शिक्षक - जनवरी 2003
संपादक: डॉ० सत्येन्द्र चतुर्वेदी
प्रकाशक:के-14,अशोक मार्ग,सी-स्कीम, जयपुर-1

13. शोषित मुक्ति दिसंबर 2002
संपादक : श्री उन्तीसवाँ व्यास
प्रकाशक: कुर्मी विकास परिषद, डी-सी-23, कंकड़बाग, पटना-20

14. अम्बेडकर मिशन पत्रिका-जनवरी-मार्च 03
संपादक : बुद्धशरण हंस
प्रकाशक : अम्बेडकर मिशन, चितकोहरा, पो० अनीशाबाद, पटना-2

15. जन संसार 1-15 जनवरी 03
संपादक : गीतेश शर्मा
प्रकाशक : फोरम फोर नेशन एफेयर्स, 19-बी, चौरंगी रोड, कोलकाता-87

16. अलका मागधी - जनवरी-मार्च 2003
संपादक : अभिमन्यु प्र० मोर्य
प्रकाशक : नंदा आर्य, राम लखन महतो रोड, पुराना जक्कनपुर, पटना-1

17. बिहान- मगही तिमाही-अंक-3
संपादक : डॉ० रामनन्दन
प्रकाशक : बिहार मगही मंडल, व्ही-34, विद्यापुरी, पटना-800020

18. शोषित मुक्ति -जनवरी 2003
संपादक: उन्तीसवाँ व्यास
प्रकाशक : कुर्मी विकास परिषद, बिहार कुर्मी भवन, डी०सी०13, कंकड़बाग, पटना-20

19. कालान्तर - जनवरी-2003
संपादक : डॉ० पुष्पेश पंत
प्रकाशक : कालान्तर प्रकाशन, प्रथम तल, 29, बाजार लेन, बंगाली मार्केट, नई दिल्ली-1

20. संकल्प रथ - फरवरी 2003
संपादक : राम अधीर
प्रकाशन : 108/1, शिवाजी नगर, भोपाल-16

21.हिमालय और हिन्दुस्तान - फरवरी 03
संपादक : डॉ० रविशास्त्री जी
प्रकाशन : गीता नगर, हरिद्वार रोड, वीरभद्र-249202 (ऊ०प्र०)

22. वसुन्धरा - दिसंबर 2002
संपादक : उषा किरण
प्रकाशन : सोगरा स्टेट, पक्की सराय, मुजफ्फरपुर-84200

23. दृष्टिपात - जनवरी -फरवरी 03
संपादक : अरुण कुमार झा
प्रकाशन : 76, सर्कुलर रोड, (महिला विद्यालय के निकट) राँची-834001 (झारखण्ड)

24 अंचल भारती - जुलाई-दिसंबर 2002
संपादक डॉ. जयनाथ मणि त्रिपाठी
प्रकाशन : अंचल भारती प्रिंटिंग प्रेस
राजकीय औद्योगिक आस्थान, गोरखपुर मार्ग देवरिया-274001

25 हाइकु भारती-अक्टूबर-2002-मार्च 03
मानक संपादक : डॉ. भगवत् शरण अग्रवाल
प्रकाशन : 396, सरस्वती नगर, आजाद सोसाइटी

के पास, अहमदाबाद-380015
26 रैन बसेरा - मार्च 2003
प्रधान संपादक : डॉ. जय सिंह 'व्यथित'
प्रकाशक : गुजरात हिंदी विद्यापीठ
कमलेश पार्क, महेश्वरी नगर ओढ़व, अहमदाबाद-382415
27 गुर्जर राष्ट्रवीणा-मार्च 2003
संपादक : अरविन्द जोषी
प्रकाशक : गुजरात प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, राष्ट्रभाषा हिंदी भवन, एलिस ब्रिज, अहमदाबाद-6
28 स्वर्णिम भविष्य की ओर - स्मारिका
संपादिका : डॉ. मधु धवन
प्रकाशक : तमिलनाडु बहुभाषी लेखिका संघ चेन्नै, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, स्टेल्ला मॉरिस कॉलेज चेन्नै /86.
29 मित्र संगम पत्रिका - मार्च 2003
संपादक : प्रेम वोहरा
प्रकाशक : मित्र संगम संस्था, 35बी - पुरानी गुप्ता कॉलोनी दिल्ली-9

बच्चन जी को समर्पित श्रद्धा सुमन

- डॉ. वीरेन्द्र कुमार तिवारी

मधुशाला के चिर मधु पायी,
तुमको बारंबार नमन।
तुमने अद्‌भुत राह दिखाई,
धन्य हो गया जन-गन-मन।
सबने पी जी भर-भर कर मधु,
निज मिट्टी के प्याले से।
झूम उठे जब प्यास बुझ गई,
हुए मगन मतवाले से।
उंच नीच का भेद नहीं था,
जात-पांत से क्या लेना।
भाव भावना का था केवल,
पड़ता अपनापन देना।
जिहवा पर जो एक बूंद भी,
टपकी मधु मधुशाला की।
हृदय सिंधु का क्षार मिट गया,
आग बुझ गई ज्वाला की।
जीवन का सारा मधु देकर,
छोड़ चले तुम मधुशाला।
कौन पता बतलाए उसका,
भटक रहा पीने वाला।

संपर्क : गर्ल्स हाईस्कूल एण्ड कॉलेज
25, एलिन रोड,
पो. बॉक्स-3, इलाहाबाद-211001

शताब्दी, राजधानी में सफर सस्ता
रेलवे के पांच क्षेत्रीय और आठ मंडल कार्यालय शुरू

विचार कार्यालय, दिल्ली

पिछले 1 अप्रैल से शताब्दी, राजधानी एक्सप्रेस गाड़ियों के लिए युक्तिसंगत किराया ढांचा, जनशताब्दी गाड़ियों के किराये में कमी और पुनवर्गीकृत मालाभाड़ा दरें लागू हो गई। राजधानी और शताब्दी एक्सप्रेस गाड़ियों के प्रत्येक श्रेणी के बुनियादी किराये को सुपर फास्ट मेल एक्सप्रेस गाड़ियों के किराये से जोड़ दिया गया है। यह सुपर फास्ट मेल एक्सप्रेस गाड़ियों के तदनुरूप श्रेणी के किराये से समान आधार पर मूल किराये से 15% अधिक होगा। कुछ मामलों में जहां युक्तिसंगत भाड़ा ज्यादा हो रहा है वहां मौजूदा किराया ही लागू होगा। शताब्दी एक्सप्रेस गाड़ियों के एक्जक्यूटिव श्रेणी का किराया इन गाड़ियों के एसी चेयर कार के मूल किराये का दो गुना होगा। राजधानी एवं शताब्दी गाड़ियों के मूल किराये में आरक्षण शुल्क और सुपर फास्ट गाड़ियों का पुरक शुक्ल भी शामिल होगा।

जनशताब्दी एक्सप्रेस गाड़ियों के किराये में कटौती की गई है और इसका मूल किराया सुपर फास्ट मेल एक्सप्रेस गाड़ियों के तद्नुरूपी श्रेणी के किराया से 5% ज्यादा निर्धारित किया गया है। साथ ही इन गाड़ियों में खान-पान सेवाओं को वैकल्पिक बना दिया गया है। इसलिए खान-पान सेवाओं के शुल्क को किराये में नहीं जोड़ा जाएगा। इसके अतिरिक्त गैर व्यस्त कॉल के दौरान किराया घटाने की अवधारणा को लागू किया जा रहा है और प्रयोग के तौर पर इस साल 15 जुलाई से 15 सितम्बर के दौरान सभी गाड़ियों के वातानुकूल प्रथम और द्वितीय श्रेणी के मूल किराये में 10% की कमी की जाएगी।

पिछले 1 अप्रैल से इलाहाबाद, भुवनेश्वर, बिलासपुर, हुबली और जबलपुर में रेलवे के नये पांच क्षेत्रीय तथा नांदेड़, आगरा, गुंटुर, रायपुर, राँची, पुणे, रंगिया और अहमदाबाद में कुल आठ मंडल कार्यालय गठित किया गया है। हाजीपुर और जयपुर में दो क्षेत्रीय कार्यालयों की स्थापना 2 अक्टूबर से ही हो चुकी है। इस प्रकार अब पूरे देश में 16 क्षेत्रीय और 67 मंडल कार्यालयों की संख्या हो गई है।

60 वर्ष के लोगों को 30% रियायत

पहली अप्रैल से ही 60 वर्ष और उससे अधिक आयु वाले पुरुष और महिला दोनों को शताब्दी तथा राजधानी सहित सभी गाड़ियों के किराये में 30% रियायत मिलने शुरू हो गई। इसके साथ ही कैंसर, थेलेसिमिया और हृदय की शल्य चिकित्सा सहित अब गुर्दों के उपचार के लिए भी मान्यता प्राप्त अस्पताल में जाने वाले मरीज और उसके एक सहयोगी को रेल किराये में 75% तक की छूट मिलेगी। वातानुकूलित प्रथम श्रेणी और वातानुकूलित 2 टियर में यह छूट 50% ही होगी। यह छूट उपचार के बाद लौटने के दौरान भी मिलेगी।

नई दिल्ली – हावड़ा राजधानी एक्सप्रेस अब सातों दिन

19 मई से नई दिल्ली - हावड़ा राजधानी एक्सप्रेस पांच दिन के बजाय अब सातों दिन चलेगी। इसी प्रकार दिल्ली-गुवहाटी राजधानी एक्सप्रेस तीन दिन की बजाय अब सप्ताह में पांच दिन चलेगी और नई दिल्ली – गुवहाटी / डिबरूगढ़ राजधानी लिंक एक्सप्रेस सप्ताह में एक दिन की बजाय दो दिन चलेगी।

रेल टिकट अब नेट बैंकिंग से

इंटरनेट पर रेल टिकट खरीदने की सुविधा प्राप्त होने के बाद देश में पहली बार अब इ बैंकिंग के जरिए घर बैठे ही किसी भी श्रेणी का रेल टिकट खरीदा जा सकेगा। इसके लिए रेलवे उन बैंकों से समझौता करने जा रहा है जो अपने ग्राहकों को ई बैंकिंग की सुविधा दे रहे हैं। ऐसे बैंक के ग्राहक अपने क्रेडिट कार्ड के जरिए इंटरनेट या ई बैंकिंग के द्वारा कहीं से भी कहीं के लिए रेल टिकट खरीद सकेंगे। इस योजना को साकार करने का दायित्व इंडियन रेलवे कैटरिंग एण्ड टूरिज्म कॉरपोरेशन के निदेशक (वित्त) को दिया गया है। - **प्रस्तुतिः राजकिशोर राजन**

त्रिमूर्ति ज्वैलर्स

बाईपास रोड, चास (बोकारो)

दूरभाष : 65765, फैक्स : 65123

त्रिमूर्ति अलंकार

त्रिमूर्ति पैलेस, (रूपक सिनेमा के पूरब)

बाकरगंज, पटना-800004

दूरभाष : 662837

आधुनिक आभूषणों के निर्माता, नए डिजाइन, शुद्ध सोने-चांदी के तथा हीरे के गहनों का प्रमुख प्रतिष्ठान

परीक्षा प्रार्थनीय

सुरेश, राजीव एवं सुनील

(आवरण पृष्ठ 2 का शेष)

23. अतीत की (पौराणिक) गाथाओं से कुछ घिरे प्रश्न
24. राजतंत्र, लोकतंत्र एवं तानाशाही व्यवस्था
    (i) राजनीति और कूटनीति
    (ii) चाणक्य नीतिदर्पण और कूटनीति
    (iii) धर्म और राजनीति
25. समाजवाद, पूंजीवाद और मिश्रित अर्थव्यवस्था
26. अस्तित्व का अधिकार और नागरिक स्वतंत्रता
    (i) जनता की आवाज (Voice of People)
27. योजना एवं विकास
28. लोकप्रशासन
29. सांस्कृतिक भूमंडलीकरण
    (i) अप संस्कृति और उसका विरोध
    (ii) सांस्कृतिक क्रांति की आवश्यकता
30. आर्थिक भूमंडलीकरण एवं राष्ट्र-निर्माण के विकल्प
31. राष्ट्रीयता का स्वरूप
32. कार्यपालिका, विधायिका एवं न्यायपालिका में विकृति एवं सुधार के उपाय
33. जन प्रतिनिधि और राष्ट्र-निर्माण, राजनीति का आधुनिक स्वरूप
34. राजनीति का अपराधीकरण और उससे मुक्ति के उपाय
35. दोहरा चरित्र एवं भ्रष्टाचार
36. आतंकवाद के स्वरूप एवं अपराध तथा उससे मुक्ति के उपाय
37. सम्प्रदायवाद, साम्प्रदायिकता, नस्लवाद, क्षेत्रवाद एवं जातिवाद के बढ़ते खतरे
    सामाजिक उन्माद और सामाजिक समरसता
38. संवेदनाओं की सूखती धारा में मुरझाता समाज
39. वर्तमान समाज और उसकी चुनौतियां
40. राष्ट्र-निर्माण के बाधक तत्व
41. मानव अस्तित्व पर मंडराते पर्यावरण असंतुलन के संकट
42. जनसंख्या वृद्धि का विस्फोटक रूप
43. राष्ट्र-निर्माण के तत्व
44. प्राकृतिक संसाधन एवं पृथ्वी की धरोहर
45. ग्रामीण एवं शहरी विकास की रूप-रेखा
46. औद्योगीकरण
47. कृषि विकास एवं कृषि आधारित उद्योग
48. राष्ट्र-निर्माण में अपेक्षित युवा पीढ़ी और छात्र
49. राष्ट्र-निर्माण में स्त्री-शक्ति का स्वरूप
    (i) स्त्री शिक्षा में राष्ट्र-निर्माण की चेतना
    (ii) स्त्री प्रतारणा
50. राष्ट्र-निर्माण के अनुकूल शिक्षा
51. राष्ट्र-निर्माण में बाल-चेतना का स्वरूप
    बच्चों की शिक्षा में राष्ट्रीय चेतना के प्रसंग
52. प्राचीन शिक्षा पद्धति
    (i) शिक्षा का व्यवसायीकरण
53. भाषा एवं साहित्य तथा लोक साहित्य
    (i) साहित्य का उद्देश्य
    (ii) कविता, संगीत एवं लोकगीत का महत्व
    (iii) भारतीय साहित्य में बिम्ब विधान
    (iv) भारत का प्राचीन साहित्य और मानवतावाद
54. राष्ट्र-निर्माण में पत्रकारिता और मीडिया की भूमिका
    (i) पत्रकारिता की मंजिलें और दुर्गम रास्ते
    (ii) पत्रकारिता पर उठते सवाल
    (iii) आवश्यकता है स्वच्छ, निष्पक्ष और निर्भीक पत्रकारिता की
55. बेरोजगारी निवारण
56. जीवन का उद्देश्य एवं जीवन शैली
57. सुख की अनुभूति
58. दीर्घ जीवन का रहस्य
59. मुक्ति के उपाय
60. भारत एवं बिहार का इतिहास
    विश्व वाङ्मय में भारत
61. बिहार विभाजन एवं भारत विभाजन के अंजाम
62. प्राचीन भारत एवं इक्कीसवीं सदी में भारत
    (राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं आध्यात्मिक)
63. भारत का विकास और इसका भविष्य तथा हमारा कर्तव्य
64. विज्ञान के बढ़ते कदम
65. राष्ट्र-संघ एवं अमेरिकी साम्राज्यवाद
66. सामाजिक न्याय की खोज में युगधर्म और राष्ट्र-निर्माण यज्ञ
67. वर्तमान राजनीति के खतरनाक तेवर : हिंसा और आतंकवाद

अतः आपसे सादरानुरोध है कि उपर्युक्त विषयों में से अभिरुचि के अनुसार एक विषय का चयन कर आप अपने सुचिन्तित और सारगर्भित आलेख अधोहस्ताक्षरी के पते पर 30 अप्रैल, 2003 तक भेजने की कृपा प्रदान कर अपेक्षित सहयोग प्रदान करें। यह आपकी गरिमा के अनुरूप होगा। चयन किए गए विषय की सूचना शीघ्र ही यदि अधोहस्ताक्षरी को दें तो आपकी महती कृपा होगी।

सादर

उत्तरापेक्षी

सिद्धेश्वर
राष्ट्रीय महासचिव, राष्ट्रीय विचार मंच
'दृष्टि', 6, विचार विहार, यू-207, शकरपुर,
विकास मार्ग, दिल्ली-92, फोन : 011-22530652

भवदीय

डा. आर.एस.एस. सुमन M.B.B.S.
प्रवर्तक, राष्ट्र-निर्माण यज्ञ एवं युगधर्म
13, हार्डिंग रोड, पटना-800001
दूरभाष : 91 612 2231820

राष्ट्र-निर्माण यज्ञ एवं युगधर्म

वर्ष : 5 अंक : 15 अप्रैल–जून 2003 RNI REG. NO. : DEL HIN/1999/791

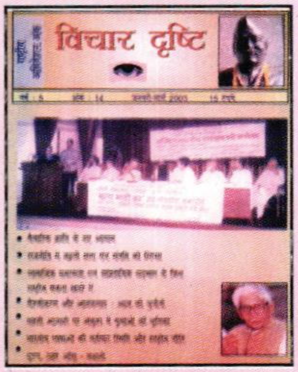

विचार दृष्टि

राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक त्रैमासिकी

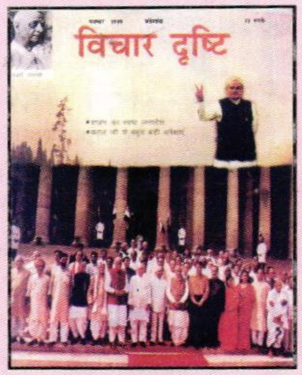

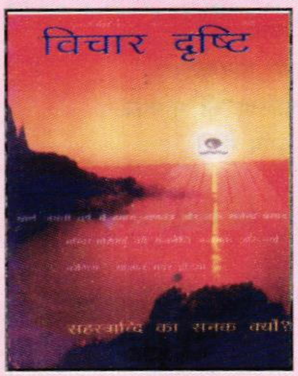

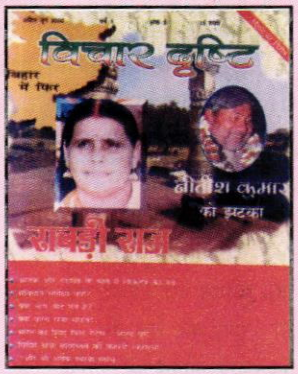

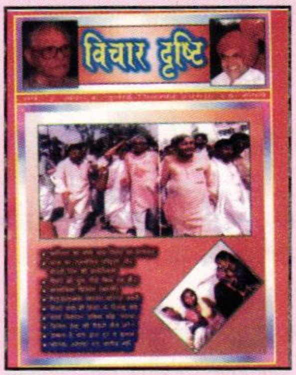

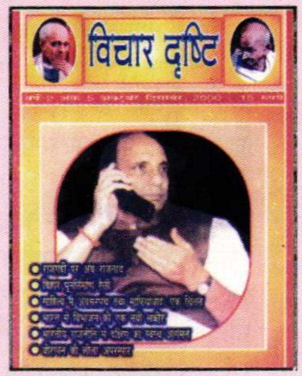

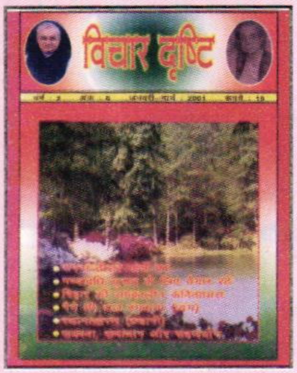

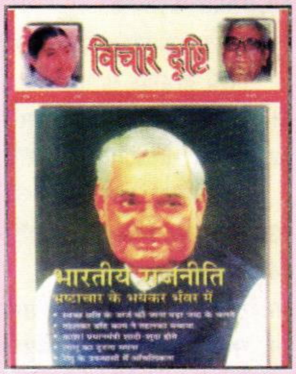

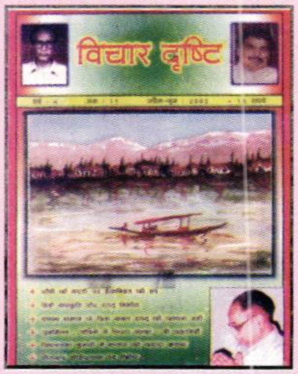

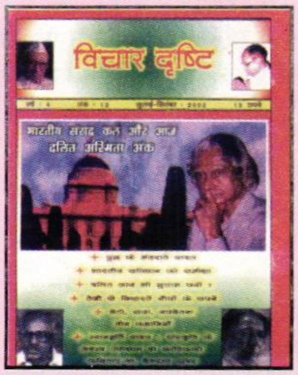

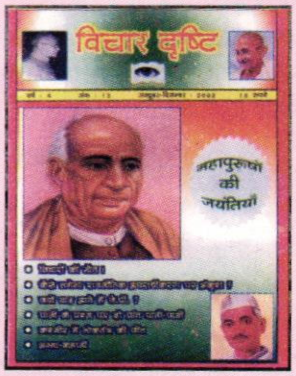

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी सिद्धेश्वर द्वारा 'दृष्टि', यू-207, विकास मार्ग, शकरपुर, दिल्ली-92 से प्रकाशित एवं प्रोलिफिक इनकारपोरेटिड, एक्स-47, ओखला फेस-2, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित। सम्पादक-सिद्धेश्वर